जीवन सिद्धि विशेषांक
दिसम्बर-2020
मूल्य - 40/-
वर्ष 11
अंक 3
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
राजयोग साधना
साबर साधना प्रयोग
अक्षय पात्र साधना
साधनाओं में सफलता हेतु
सफला एकादशी साधना
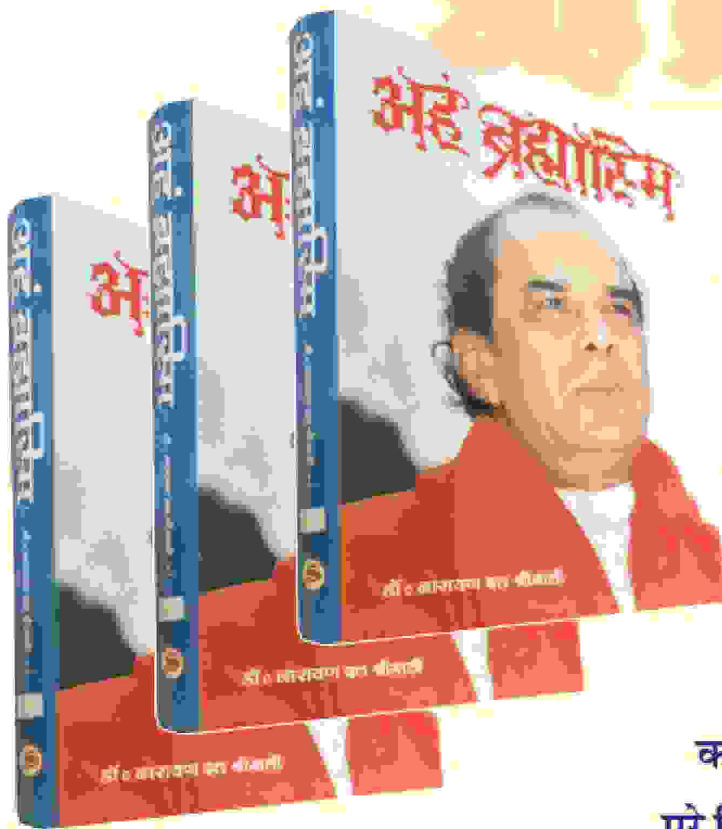
मनुष्य और पशु में इतना ही अंतर है कि पशु अपने आपको समझने का भाव नहीं रखता, जबकि मनुष्य सद्गुरु की सहायता से पशुत्व से ऊपर उठकर आत्मा की गहराई तक उतर कर, उस विराट सत्ता के दर्शन कर सकता है जिसे ब्रह्म कहा गया है। उस स्थिति तक पहुंच सकता है जिसे **'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं'** कहा गया है, उस स्थिति से एकाकार हो सकता है, जिसे **'ब्रह्माण्ड'** कहा गया है।

न्यौछावर- 330/-

पूरे विश्व में इतनी सहज गति से, इतने जटिल रहस्य को सरल भाषा में स्पष्ट करने वाला यह पहला ग्रंथ है जो संत प्रवर योगीराज तत्ववेत्ता सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी की सशक्त लेखनी से उभर कर हमारे सामने प्रस्तुत है **'अहं ब्रह्मास्मि'** ग्रन्थ के रूप में।

एक जीवन्त, सशक्त कृति, पशुत्व से ऊपर उठकर मनुष्यत्व तक पहुंचने का सरल सोपान, मल-मूत्र से भरी देह को ब्रह्ममय बना देने की श्रेष्ठ क्रिया, एक अनमोल ग्रन्थ।

यह ग्रन्थ अभी सीमित संख्या में ही प्रिंट हुआ है अतः शीघ्र प्राप्त करने के लिए आप 330 + 70 (डाक खर्च) = 400/- (चार सौ रुपये मात्र) 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' जोधपुर के निम्नलिखित खाते में जमा करा दें और वाट्स अप नं. 8890543002 पर पैसे जमा कराने की रसीद एवं अपना नाम व पूरा पता, पिन कोड नं. के साथ शीघ्र भेजें जिससे आप यह अनमोल ग्रन्थ शीघ्र प्राप्त कर सकें।

खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान	बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
खाता संख्या	: 31469672061	IFSC CODE	: SBIN0000659

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नम: ||

जीवन की सभी न्यूनताओं को दूर करने हेतु : अक्षय पात्र साधना

शत्रु बाधा, तंत्र बाधा, रोग बाधा निवारण हेतु : त्रिपुर भैरवी साधना

रोग मुक्ति व अद्वितीय सौन्दर्यप्राप्ति हेतु : सौन्दर्योपासना सिद्धि

सद्गुरुदेव

स्तम्भ

साधनाएँ

ENGLISH

विशेष

योग

आयुर्वेद

स्तोत्र

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता
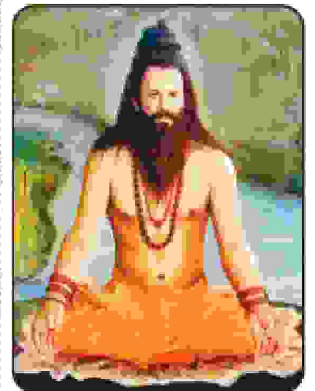
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक

श्री अरविन्द श्रीमाली

द्वारा

प्रगति प्रिंटर्स

A-15, नारायणा, फेज-1

नई दिल्ली:110028

से मुद्रित तथा

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

कार्यालय :

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से

प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति 40/-

वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन नं. : 011-79675768, 79675769, 27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

शिवत्वं सदा सर्व कल्याण रूपं;
जरा मृत्यु रोगं क्लेश कष्टं हरेण्यं।
शिवः गुरु र्न भेदो एक स्वरूपं;
तस्मै नमः गुरु पूर्ण शिवत्व रूपं।।

भगवान शिव हमेशा कल्याणकारी समस्त प्राणियों के दुःख, कष्ट, बुढ़ापा, रोग आदि दूर करने वाले औढरदानी कृपामय हैं, शास्त्रों के अनुसार गुरु और शिष्य में कोई भेद नहीं है, एक ही स्वरूप हैं, इसलिए शिवरात्रि के अवसर पर मैं शिवमय गुरुदेव को भक्तिभाव से प्रणाम करता हूँ।

समर्पण

कथा महाभारत युद्ध की है। अश्वत्थामा ने अपने पिता की छलपूर्ण हत्या से कुंठित होकर 'नारायणास्त्र' का प्रयोग कर दिया। स्थिति बड़ी अजीब पैदा हो गई। एक तरफ नारायणास्त्र और दूसरी तरफ साक्षात् नारायण। अस्त्र का अनुसंधान होते ही भगवान ने अर्जुन से कहा–'गांडीव को रथ में रखकर नीचे उतर जाओ और हाथ जोड़कर नमन की मुद्रा में खड़े हो जाओ'...। अर्जुन ने न चाहते हुए भी ऐसा ही किया और श्रीकृष्ण ने भी स्वयं ऐसा ही किया। नारायणास्त्र बिना किसी प्रकार का अहित किए वापस लौट गया, उसने प्रहार नहीं किया; लेकिन भीम तो वीर था, उसे अस्त्र के समक्ष समर्पण करना अपमान सा लगा। वह युद्धरत था, उसे छोड़कर सभी नारायणास्त्र के समक्ष नमन मुद्रा में खड़े थे। नारायणास्त्र पूरे वेग से भीम पर केन्द्रित हो गया। मगर इससे पहले कि भीम का कुछ अहित हो, नारायण स्वयं दौड़े और भीम से कहा–'मूर्खता न कर! इस अस्त्र की एक ही काट है, इसके समक्ष हाथ जोड़कर समर्पण कर, अन्यथा तेरा विध्वंस हो जायेगा।'

भीम ने रथ से नीचे उतर कर ऐसा ही किया और नारायणास्त्र शांत होकर वापस लौट गया, अश्वत्थामा का वार खाली गया।

यह प्रसंग छोटा सा है, पर अपने अन्दर गूढ़ रहस्य छिपाये हुये है... जब नारायण स्वयं गुरु रूप में हों, तो विपदा आ ही नहीं सकती, जो विपदा आती है, वह स्वयं उनके तरफ से आती है, इसलिए कि वह अपने शिष्यों को कसौटी पर कसते हैं... कई बार विकट परिस्थितियाँ आती हैं और शिष्य टूट सा जाता है, उससे लड़ते-लड़ते। उस समय परिस्थिति पर हावी होने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता रहता है समर्पण का... वह गुरुदेव के चित्र के समक्ष नतमस्तक होकर खड़ा हो जाए और भक्तिभाव से अपने आपको गुरु-चरणों में समर्पित कर दे और पूर्ण निश्चिंत हो जाए... धीरे-धीरे वह विपरीत परिस्थित स्वयं ही शांत हो जायेगी... और फिर उसके जीवन में प्रसन्नता आ जायेगी।

अकर्मण्य नहीं
क्षमतावान बनें

मानव जीवन की विषमताओं के बीच अपने आप को प्रतिष्ठित करने के लिए एवं उच्चता प्राप्त करने हेतु जीवन में वह तेज और क्रोध होना आवश्यक है जो भीतर से शक्ति को जाग्रत कर सके। प्रस्तुत प्रवचन में सद्‌गुरुदेव ने शिष्यों को एक ललकार भावना देते हुए उन्हें अपने व्यक्तित्व से पहचान कराने का उत्साह जगाया है, जिससे शिष्य कुछ बन सके गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में यह महान प्रवचन–

आज से हजारों वर्ष पहले सिंधु नदी के किनारे पहली बार आर्यों ने आंख खोली, हमारे पूर्वजों ने पहली बार अनुभव किया कि ज्ञान भी कुछ चीज होती है, पहली बार उन्होंने एहसास किया कि जीवन का कुछ उद्देश्य भी होता है, कुछ लक्ष्य भी होता है, तब उन्होंने सबसे पहले गुरु मंत्र रचा, गुरु की ऋचाओं का आवाहन किया और भी देवताओं का मंत्र कर सकते थे, भगवान रुद्र का कर सकते थे, विष्णु का कर सकते थे, उन ऋषियों के सामने ब्रह्मा थे, इन्द्र थे, वरुण थे, यम थे, कुबेर थे, सैकड़ों थे।

मगर उन्होंने सबसे पहले जिस मंत्र की रचना की या संसार में सबसे पहले जिस मंत्र की रचना हुई, वह गुरु मंत्र था। गुरु शरीर नहीं होता, अगर आप मेरे शरीर को गुरु मानते हैं तो गलत हैं आप। यदि मुझ में ज्ञान ही नहीं है तो फिर मैं आपका गुरु हूं ही नहीं।

यदि आप एक-एक पैसा खर्च करते हैं तो मेरे हृदय में भी उस एक-एक पैसे की वेल्यू है। मैं उतने ही ढंग से आपको वह चीज देना चाहता हूँ और आप उतनी ही पूर्णता के साथ उसे प्राप्त करें तब तो मेरा कोई अर्थ है। अन्यथा ऐसा लगता है कि आप मुझे दे रहे हैं और मैं भी फॉरमैलिटी निभा रहा हूँ।

ऐसा मैं नहीं करना चाहता।

फारमैलिटी बहुत हो चुकी। फूलों के हार बहुत पहन चुका, आपकी जय जयकार बहुत सुन चुका, टांगे, बग्गी गाड़ी में बहुत चढ़ चुका, हवाई जहाज में यात्रा कर चुका, विदेश में यात्रा कर चुका। यह सब बहुत हो चुका। बेटे, पोते, पोतियों, गृहस्थ और संन्यास जीवन सब देख चुका। संन्यास क्या होता है वह भी उच्चता के साथ देख चुका। अब बस एक बात रह गई है कि जितने शिष्य हैं, उन सबको अपने आप में सूर्य बनाएं अद्वितीय बनाएं। अब केवल इतनी इच्छा रह गई है और कुछ इच्छा ही नहीं रह गई है।

सम्राट होते होंगे, मैंने देखा नहीं सम्राट कैसे होते हैं, मगर सम्राटों के सिर भी गुरु के चरणों में झुकते हैं, उनके मुकुट भी गुरु के चरणों में पड़ते हैं यदि वह सही अर्थों में गुरु है, ज्ञान, चेतनायुक्त है।

हम अपने आप में इस शरीर को उतना उत्थानयुक्त बना दें, उतना चेतनायुक्त बना दें, उस मूल उत्स को जान लें कि हम क्या हैं? और जब हम अपना पिछला जीवन देखना शुरू कर देंगे तो आपको इतने रहस्य स्पष्ट होंगे कि आपको आश्चर्य होगा कि क्या मेरे जीवन में ऐसा था, क्या मैं इतनी ऊंची साधनाएं कर चुका था, फिर मैं इतना गिर कैसे गया? क्या हो गया मेरे साथ?

यह कैसा अटैचमेंट था गुरु के साथ? इतना अटैचमेंट था कि मैं गुरु के बिना एक मिनट भी नहीं रह सकता था, अब मैं दो-दो महीने कैसे निकाल देता हूँ। जब आपको अपना पिछला जीवन देखने की क्रिया प्रारंभ होने लगेगी, तब आप एक क्षण भी अलग नहीं रह पायेंगे, तब एहसास होगा कि हम बहुत बड़ा अवसर खो रहे हैं, बहुत बड़े समय से वंचित हो रहे हैं, क्षण एक-एक करके बीतते जा रहे हैं और जो क्षण बीतते जा रहे हैं वे क्षण लौट कर नहीं आ सकते। जो समय बीत गया, बीत गया। बीत गया तो समय निकल गया, इस शरीर में भी एक सलवट और बढ़ गई, कल एक और सलवट बढ़ जाएगी।

आपने देखा होगा कि सर्प दो साल के बाद अपने ऊपर के खोल को पूरा का पूरा उतार देता है। आपको पता है या नहीं है पर अंदर से बिल्कुल नवीन सर्प बाहर निकल जाता है। वही सर्प और उसके ऊपर की जो झुर्रीदार चमड़ी होती है वह पूरी की पूरी उतार देता है। यह क्या विद्या है? यह कौन सी विद्या है जो सर्प के पास है और हमारे पास नहीं है। सर्प ऐसा कैसे कर लेता है?

और अगर सर्प ऐसा कर सकता है, कायाकल्प कर सकता है, अपनी पूरी केंचुली को, झुर्रीदार त्वचा को, अपने पूरे बुढ़ापे को निकाल कर एक तरफ रख देता है, पूरा नवीन ताजगी युक्त वापस शरीर उसका बन सकता है तो हमारा क्यों नहीं बन सकता?

इसलिए नहीं बन सकता क्योंकि केवल उस वासुकी के पास वह ज्ञान रह गया है और हमने उसे समझा नहीं, हमने बस उनको विषैला समझ लिया, जहरीला समझ लिया। हमने उसके ज्ञान को नहीं समझा। आपने मुझे फूलों के हार पहना दिए, जय जयकार कर दिया मगर आप मेरा ज्ञान नहीं समझ पाए। जब ज्ञान नहीं ग्रहण कर पाएंगे तो फिर एक बहुत बड़ा अभाव आपके जीवन में भी रहेगा, मेरे जीवन में भी रहेगा कि यह ज्ञान, यह चेतना आप प्राप्त नहीं कर पाए। यह ज्ञान यह चेतना या तो पुस्तकों में मिल पाएगी या प्रामाणिक होगी और मैं ऐसा कोई ग्रंथ लिखना चाहता भी नहीं कि मेरे मरने के पांच सौ साल बाद भी कोई कहे कि इसमें गलती है। पांच सौ साल बाद भी लोग कहें कि यह तो बिल्कुल नवीन और प्रामाणिक है एक चेतनायुक्त है। वैसा ग्रंथ मैं आपको बनाना चाहता हूँ, सजीव ग्रंथ बनाना चाहता हूँ, जिंदा ग्रंथ बनाना चाहता हूँ।

आप, अपने आपको कायर या बुजदिल समझते हैं, आप अपने बारे में समझते हैं कि आप कुछ नहीं कर सकते। मैं प्रवचन बोल कर भी जाऊंगा तो मुझे मालूम है कि आप सब कुछ सुनने के बाद भी वहीं खड़े रह जाएंगे कि मैं क्या कर सकता हूँ, इस उम्र में होगा भी क्या, अब करने से लाभ भी क्या, अब मैं तो बूढ़ा हो गया मेरा तो शरीर कमजोर है, अब मैं कुछ नहीं कर सकता।

यह आपके जीवन की हीन भावना बोल रही है, आप नहीं बोल रहे हैं। आपके ऊपर जो समाज ने प्रहार किए, वे बोल रहे हैं, आप नहीं बोल रहे हैं। आपके जीवन में जो दुख है, उन दुखों ने आपको इतना बोझिल बना दिया है वह बोल रहा है आप नहीं बोल रहे हैं। वृद्धावस्था आ ही नहीं सकती, संभव नहीं है। बुढापा तो एक शब्द है, नाम है। हमने एक नाम ले लिया कि बुढापा है। बुढापा शब्द क्या चीज है?

मैंने तो नब्बे साल के लोगों को भी मुस्कुराते हुए, खिलखिलाते हुए और ज्ञान प्राप्त करते देखा है। जब इंग्लैण्ड पर जर्मनी ने बमबारी की और सारा ध्वस्त कर दिया तो 82 साल के चर्चिल ने पूरे इंग्लैण्ड को संभाला, प्रधानमंत्री बन करके वापस अपने देश को खड़ा कर दिया, ताकतवान बनाकर के। 82 साल की उम्र में! आप पता नहीं 82 साल की उम्र ले भी पाएंगे या नहीं ले पाएंगे।

तो क्या गुरुजी हम 82 साल की उम्र नहीं ले पाएंगे? क्या चर्चिल ही ले पाएगा?

आप ले सकते हैं यदि आपके पास वह विद्या हो। यदि आपके पास ज्ञान हो कि मैं कायाकल्प कैसे करूं तो वह चीज आपको प्राप्त हो सकेगी। आपके पास एक भी विद्या रह पाएगी तो आने वाली हजारों पीढ़ियाँ आपसे शिक्षा ग्रहण कर पाएंगी, आप सही अर्थों में ग्रंथ बन पाएंगे, सही अर्थों में

मेरे सबसे ज्यादा प्रिय बन पाएंगे। तब मैं गर्व करूंगा कि आप मेरे शिष्य हैं।

मैं तो आपको चैलेंज देता हूं, मैं तो दो टूक साफ कहता हूँ। मुझसे भी बड़े विद्वान होंगे, मगर आप बाजार से जाकर कोई ज्ञान का ग्रंथ लाइए। आप लाइए और मैं बीस किताबें और रख देता हूँ देखिए। इन सबमें सब चीजें ज्यों की त्यों हैं, कुछ लाइनें, इधर कर दी और कुछ लाइनें उधर कर दी हैं और पोथी भरकर आपके सामने रख दी है। वही चीज हरेक में है चाहे मंत्र महोदधि लाइए, चाहे मंत्र महार्णव लाइए, चाहे सिंधु लाइए, मंत्र चिंतन लाइए, मंत्र घटक लाइए। वे ग्रंथ तो मंत्रों पर हैं पर सबमें एक ही चीज है। एक ही बात को रिपीट कर दिया है, उनके छः संस्करण बना दिए हैं।

क्या नवीनता है उनमें? क्या किसी ने कहा है कि सर्प के पास ज्ञान है हमारे पास क्यों नहीं? किसी ने इस पर चिंतन किया?

और आप कह रहे हैं कि आप बुजदिल हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि आप किस कोने से बुजदिल हैं, जिससे कि मैं उस कोने को निकाल दूं कि इस कोने से हम कायर हैं, इस कोने से कमजोर हैं तो उस हिस्से को काट दूं और वापस नए सिरे से आपको तैयार कर दूं। आप हैं नहीं कमजोर, आपने मान लिया है और मानना इसलिए पड़ा है क्योंकि आपके जीवन में वास्तव में बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां आई हैं। मगर ये समस्याएं केवल आप पर ही नहीं आई।

ऐसा नहीं है कि कलियुग में ही साधनाएं नहीं हो पा रही हैं। गुरु जी कलियुग आ गया और कलियुग में साधनाएं नहीं हो पातीं और सैकड़ों लोग ऐसा कहते हैं कि अब कैसे हो पाएगी, चारों तरफ आप देख रहे हैं। मैं भी चारों तरफ देख रहा हूँ कि बम विस्फोट हो रहे हैं, पूरे भारतवर्ष में हो रहे हैं।

यह क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है?

इसलिए हो रहा है कि हम कमजोर हैं। हमने अखबार पढ़ा, देखा और फिर अखबार को छोड़ दिया हममें क्षमता नहीं है वह कि हम उसको रोक सकें और अगर विज्ञान रोक पाता तो फिर वे इतने लड़ाई-झगड़े होते ही नहीं, इतने बम नहीं फटते। इसका मतलब इन समस्यओं का समाधान नहीं हो पा रहा है।

उस चीज को आप लोगों में से अगर कोई एक बार समझ ले तो वह ज्ञान अगले तीन सौ साल तक रह सकेगा। उस कायाकल्प को करें तो जैसे नवीन सर्प निकलता है, तो आप निकल सकते हैं। वह तब हो पाएगा जब बुजदिली आप समाप्त कर देंगे, जब आप ताकतवान बनेंगे, क्षमतावान बनेंगे।

ऐसा नहीं है कि कलियुग में ही साधनाएं नहीं हो पा रही हैं। गुरु जी कलियुग आ गया और कलियुग में साधनाएं नहीं हो पातीं और सैकड़ों लोग ऐसा कहते हैं कि अब कैसे हो पाएगी, चारों तरफ आप देख रहे हैं। मैं भी चारों तरफ देख रहा हूँ कि बम विस्फोट हो रहे हैं, पूरे भारतवर्ष में हो रहे हैं।

कुचक्र आज ही नहीं रचे गए, लड़ाई-झगड़े आज ही नहीं हो रहे हैं, कलियुग आज ही पैदा नहीं हुआ, वह तो सतयुग में भी यही समस्या थी जिनसे आज तुम जूझ रहे हो। तुम मुझे बार-बार कह रहे हो कि कलियुग में कैसे साधनाएं संपन्न करेंगे तो मैं कह रहा हूँ द्वापर युग में, त्रेता युग में कितने षड्यंत्र हुए महलों में, उस केकैयी के रूप जाल में फंस कर के दशरथ ने जो उनकी नीति थी, धर्म था कि सबसे बड़े बेटे को राजगद्दी पर बिठाया जाए, उसको भुलाकर उसे जंगल भेज दिया। एक छोटे बेटे को राजगद्दी पर बिठा दिया। यह षड्यंत्र नहीं था क्या?

और उस केकैयी का षड्यंत्र यह कि राम यहां रहेगा तो फिर लड़ाई-झगड़े होंगे। इसको जंगल में ही भेज दिया जाए। क्या षड्यंत्र उस समय नहीं होते थे? क्या आज ही होते हैं? क्या उस समय अपहरण नहीं होते थे? क्या रावण सीता को नहीं ले गया? क्या द्वापर युग में लड़ाइयां नहीं होती थीं?

इतनी लड़ाइयां होती थीं कि आज तो होती ही नहीं है। भरी सभा में उस बहू को नंगा किया जा रहा है, साड़ी खींची जा रही है और उसके पांचों पति मुंह नीचे लटकाए खड़े हैं, उनका दादा भीष्म सिर नीचे लटकाए खड़ा है, यह क्या था? तो कौन सा युग तुम्हारा द्वापर युग है? राम राज्य कौन सा हो गया? मुझे बता दीजिए कि राम राज्य में कुछ नहीं हुआ वहां लड़ाई-झगड़े हुए ही नहीं। वहां पर कोई षड़यंत्र नहीं हुए, वहां पर कोई किडनैप नहीं हुए। वह उस समय भी होते थे वे षड़यंत्र द्वापर में भी थे, सतयुग में भी थे। तब भी हुए और कलियुग में भी हो रहे हैं। हो इसलिए रहे हैं कि मनुष्य जब तक बदलेगा नहीं, परिवर्तित नहीं होगा तब तक ये घटनाएं घटित होंगी।

आपके मन में है कि आज कलियुग में साधनाएं सफल नहीं हो सकती, मैं तो कहता हूँ कि कलियुग में फिर भी हो सकती हैं क्योंकि इस समय सड़क पर किसी स्त्री को एकदम से नंगा नहीं कर सकते, एकदम से पचास आदमी लाठी लेकर खड़े हो जाएंगे। उस समय तो भरी सभा में सैकड़ों लोगों के बीच में ऐसा हुआ। कैसे पति थे वो? कैसे पितामह थे? क्या थे वो?

तब जुआ खेला जाता था और पत्नी को दांव पर लगा दिया जाता था, यह तुम्हारा द्वापर युग था। हकीकत और इतिहास तो यह है। मगर हम प्रत्येक मृत को स्वर्गवासी कहते हैं नरकवासी कहते ही नहीं है। कहाँ गए? स्वर्गवासी हो गए।

अब उन्होंने जिंदगी भर पाप किया तो स्वर्गवासी हुए या नरकवासी हुए हम कह ही नहीं सकते। हम अपने आपमें नहीं कह सकते कि राम राज्य कैसा था, द्वापर युग कैसा था? हां, कृष्ण अपने आप में सूर्य थे, युग कैसा था वह आपको बता रहा हूं। युग आज भी वैसा ही है। युग नहीं बदल सकता, आदमी बदल सकता है। आदमी ज्ञान ले सकता है।

कृष्ण ने अकेले ने सब करके दिखा दिया। आप कल्पना करें एक तरफ कौरवों की अक्षौहिणी सेना खड़ी है, एक तरफ पांडव खड़े हैं बीच में कृष्ण खड़े हैं और उस अकेले व्यक्ति ने निश्चय कर लिया कि मुझे सफलता प्राप्त करनी ही है। उन्होंने कहा कि मैं कोई शस्त्र नहीं उठाऊंगा और उन पांच लोगों के सहारे पर कुरुक्षेत्र की लड़ाई जीत ली, पूरे महाभारत के युद्ध को जीत लिया।

और आपके पास एक गुरु बैठा है और इस पूरे संसार को आप जीत नहीं सकते तो फिर आप कमजोर हैं, मैं कमजोर नहीं हूँ, फिर आपमें न्यूनता है मुझमें न्यूनता नहीं है। यह मेरी बात थोड़ी कड़वी हो सकती है।

मैं भी अपने पिता जी की प्रशंसा करता रहता हूं अपने दादाजी की प्रशंसा करता रहता हूं कि बहुत महान थे, हम ऋषियों के परंपरा की प्रशंसा ही करेंगे क्योंकि जो मर गए उनकी प्रशंसा ही की जाती है, उनके अवगुणों को देखा ही नहीं जाता। मर गए तो मर गए बस, सतयुग चला गया, द्वापर चला गया। मगर यह षड़यंत्र, यह कुचक्र, यह धूर्त यह मक्कारी, यह छल, यह झूठ, यह कपट, यह व्यभिचार। यह असत्य उस जमाने में भी उतने ही थे जितने कि आज हैं। मगर उस जमाने में भी साधनाओं में सिद्धि होती थी क्योंकि उनके पास गुरु थे। गुरुओं का सम्मान था, राजा के पुत्र होते हुए भी दशरथ ने अपने पुत्रों को विश्वामित्र के पास भेज दिया कि तुम जाओ और धनुर्विद्या सीखो, तुम्हें वहां जाना पड़ेगा। कहां ठेठ मथुरा, उत्तर प्रदेश और कहां ठेठ मध्य प्रदेश वहां कृष्ण को भेजा क्योंकि उच्च कोटि का

ब्राह्मण सांदीपन वहां था। बीच में क्या कोई उच्च कोटि का साधु संन्यासी था ही नहीं? क्यों नहीं उनके पास भेजा?

क्योंकि उन्होंने जाना कि वह व्यक्ति अपने आप में अद्वितीय ज्ञान युक्त है, उसके पास भेजना ही पड़ेगा। वो ट्यूशन पर गुरु को रख सकते थे। विश्वामित्र राजा की प्रजा है, दशरथ कह सकते थे कि आपको चार किलो धान ज्यादा देंगे आप वहां आकर पढ़ाइए।

ज्ञान ऐसे प्राप्त नहीं हो सकता। ज्ञान के लिए फिर आपको शिष्य बनना पड़ेगा, आपको गुरु के पास पहुंचना पड़ेगा, आपको गुरु के सामने याचना करनी पड़ेगी और हम साधना में सिद्धि इसलिए नहीं प्राप्त कर रहे हैं, क्योंकि हम कमजोर महसूस करने लग गए हैं, कमजोरी आपके मन में, जीवन में आ गई है, कमजोर आप हैं नहीं।

महादेव ने भी की, ब्रह्मा ने भी की, विष्णु ने भी की। इन्द्र ने भी की। बिना साधनाओं के जीवन में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती।

जब दक्ष ने महादेव को यज्ञ में नहीं बुलाया था तो...

महादेव तो अपने आप में बहुत भोले हैं।

महोक्ष खटवांग परशु फलिण
कपालं चेति यः..............

श्मशान में बैठे रहते हैं और कहीं कोई कमाने की चिंता नहीं है, न नौकरी करते हैं। न व्यापार करते हैं, कुछ करते ही नहीं। ड्यूटी पर भी नहीं जाते, कपड़े की दुकान खोलते ही नहीं बस सांप लिपटाए बैठे हैं। मस्ती के साथ में और उसके बाद भी जगदंबा, जो लक्ष्मी का अवतार है। उनके घर में है और धनधान्य की कमी है ही नहीं। निश्चिंतता है। निश्चिंत है इसलिए देव नहीं कहलाए वो, महादेव कहलाए।

उन्होंने साधनाएं की। महादेव ने भी की, ब्रह्मा ने भी की, विष्णु ने भी की। इन्द्र ने भी की। बिना साधनाओं के जीवन में सफलता प्राप्त नहीं हो सकती। मगर साधना में सफलता तब प्राप्त हो सकती है जब आपकी कमजोरी, आपकी दुर्बलता आपका भय, आपकी चिंता, आपका तनाव दूर हो और तनाव मेरे कहने से दूर नहीं हो पाएगा। मैं यहां से बोल कर चले जाऊं तो उससे आपका तनाव नहीं मिट सकता। मैं कहूं कि अब तकलीफ नहीं आए तो उससे तकलीफ नहीं मिट सकती।

मैं बता रहा हूं कि वास्तविकता यह है। आप ज्योंहि जाएंगे घर में तो तनाव तकलीफ, बाधाएं, कठिनाइयां वे ज्यों की त्यों आपके सामने खड़ी होंगी। उनसे छुटकारा पाएंगे तो साधना में बैठ पाएंगे। तो गुरु की ड्यूटी है, गुरु का धर्म है कि उन साधनाओं को प्राप्त करने के लिए शिष्यों को निर्भय बना दिया जाए। निश्चिंत बना दिया जाए, जो उनके जीवन के कमजोर क्षण हैं जो मन में कमजोरी है या दुर्बलता है, उसे दूर कर दिया जाए और क्षमता के साथ ही उन दुर्बलताओं को दूर किया जा सकता है, उन पर प्रहार करके ही विजय प्राप्त की जा सकती है रिरियाकर या प्रार्थना करके नहीं। और हमारे तो आराध्य महादेव हैं जो प्रखर व्यक्तित्व के स्वामी हैं जो प्रहार करने से विध्वंस करने से कभी हिचकते ही नहीं।

विध्वंसक बन करके, क्रोध में उन्मत्त हो करके महादेव दक्ष के यज्ञ में गए, अपने श्वसुर के यज्ञ में गए जहां ब्राह्मण ऋषि, मुनि, योगी, यति, संन्यासी आहुतियां दे रहे थे, वेद, मंत्र बोले रहे थे। उन्होंने एक लात मारी और यज्ञ को विध्वंस कर दिया, वेदी को तोड़ दिया अग्नि को बुझा दिया।

क्योंकि उससे पहले सती ने सोचा कि सब देवताओं को यज्ञ में बुलाया गया, मेरे पति को नहीं बुलाया गया, इससे बड़ा क्या अपमान हो सकता है तो वह खुद यज्ञ कुण्ड में कूद गई।

और भगवान शिव....

भगवान वह होता है जिसमें ज्ञान हो। भगवान अपने, आपमें कोई अजूबा नहीं है कि जो नई चीज पैदा हुआ वह भगवान है। भगवान तो आप सब हैं। यह शंकराचार्य स्पष्ट कर चुके हैं, जिसमें ज्ञान है वह भगवान है, जो ज्ञान युक्त है वह भगवान है। प्रत्येक मनुष्य भगवान है और प्रत्येक मनुष्य राक्षस है, हम क्या हैं यह आपको चिंतन करना है।

और भगवान शिव सती की अधजली लाश को अपने कंधे पर ले कर क्रोध की अवस्था में पूरे भारतवर्ष में घूमे क्रोध शांत नहीं हुआ। इतना बड़ा अपमान कि मेरी पत्नी जल गई और मैं कुछ नहीं कर पाया और क्रोध की चरम सीमा और उस चरम सीमा में दक्ष जैसे वरदान प्राप्त और तांत्रिक व्यक्ति का भी वध किया। ऐसे व्यक्ति का वध किया जाए तो कैसे किया जाए। तो उन्होंने अपनी जटा में से बहुत उत्तेजना युक्त मंत्र के माध्यम से एक रचना की जो कि पूर्ण जगदम्बा से भी सौ गुना ज्यादा क्षमतावान थी, जो साकार प्रतिमा थी जो कि सारी परेशानियों, बाधाओं, अड़चन, कठिनाइओं और शत्रुओं पर एकदम से प्रहार कर सके, समाप्त कर सके। वह चाहे शत्रु, आपकी भूख हो चाहे परेशानी हो, चाहे बाधा हो, चाहे मुकदमेबाजी हो, चाहे असफलताएं हो, चाहे घर में कलह हो, ये सब बाधाएं हैं। पैसे नहीं आ रहे हों व्यापार नहीं हो रहा हो, ये सब बाधाएं हैं। ये समस्याएं हैं, परेशानियां हैं, अड़चने हैं।

इनको समाप्त करने के लिए भगवान शिव ने एक रचना की जो जगदम्बा से भी ऊंची, क्षमतावान थी। मुझसे भी ऊंचे गुरु हैं, मुझसे भी ऊंचे विद्वान होंगे। मैं यह कह कर जगदम्बा के प्रति न्यूनता नहीं दिखा रहा हूं। मगर भगवान शिव ने उस जटा में से...

और जटा कैसी? भागीरथ ने जब गंगा का प्रवाह किया और उसे भगवान शिव ने अपनी जटा में लिया तो डेढ़ साल तक उन जटाओं में गंगा घूमती रही, उसे बाहर निकलने का रास्ता ही नहीं मिला। इतनी घनी जटा! भागीरथ ने प्रणाम किया–महाराज! अगर गंगा नदी आपकी जटाओं में घूमती रही तो रास्ता मिलेगा ही नहीं उसको। इतनी घनीभूत जटा है। कृपा करके गंगा को धरती पर उतारे तो उन देवताओं और लोगों का कल्याण होगा।

और मंत्रों के माध्यम से उस देव गंगा को पृथ्वी पर उतारा। ऐसे विकराल, विध्वंसक महादेव! हमने उनका सौम्य स्वरूप देखा है कि आँखें बंद किए श्मशान में बैठे हुए हैं, सांप की मालाएं पहने हुए हैं, ऊपर से गंगा प्रवाहित हो रही है और ध्यानस्थ बैठे हैं।

आपने वह रूप देखा है क्रोधमय रूप नहीं देखा, ज्वालामय रूप नहीं देखा, आँखों से बरसते अंगारे नहीं देखे। देखे इसलिए नहीं कि किसी ने दिखाया नहीं आपको। महादेव इसलिए नहीं बने कि शांत बैठे हैं...

आप हाइएस्ट पोस्ट तक पहुँचेंगे तो हाथ जोड़-जोड़ कर नहीं पहुँचेंगे, ज्ञान को गिड़गिड़ाते हुए नहीं प्राप्त कर पाएंगे। आपमें ताकत होगी, क्षमता होगी तो ऐसा कर पाएंगे।

और महादेव ने उस जटा से जिसको निकाला उसे कृत्या कहते हैं। उस कृत्या ने दक्ष का सिर काट दिया वह तंत्र का उच्च कोटि का विद्वान था, दक्ष के समान कोई विद्वान नहीं था उसे सभी तंत्र का ज्ञान था जिसको यह वरदान था कि तुम मर ही नहीं सकते। उस कृत्या ने एक क्षण में सिर काट कर बकरे का सिर लगा दिया, उसके ऊपर और सारे ऋषि-मुनियों को उखाड़-उखाड़ कर फेंक दिया। उस कृत्या ने। एक भी ऋषि योग्य नहीं था। सती जल रही थी और वे चुपचाप बैठे-बैठे देखते रहे।

भगवान शिव उस क्रोध की अवस्था में सती के शरीर को लेकर घूमते रहे। क्रोध में आदमी कुछ भी कर सकता है, और क्रोध होना ही चाहिए, क्रोध नहीं है तो मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। ऐसा नहीं हो कि शत्रु हमारे सामने खड़े हो और हम गिड़गिड़ाएं कि भइया तू मत कर ऐसा। ऐसा हो ही नहीं सकता। वह हाथ ऊंचा करे उससे पहले सात झापड़ उसे पड़ जानी चाहिए। बाद में देखा जाएगा।

मैं तुम्हें गिड़गिड़ाने वाला नहीं बनाना चाहता हूँ, मैं बना ही नहीं सकता, बन भी नहीं सकता, जब मैं खुद बना ही नहीं तो तुम्हें कैसे बनाऊंगा। पहले हाथ उठाऊंगा नहीं, और हाथ उसका उठा और मेरे गाल तक पहुंचे उससे पहले छः थप्पड़ मार कर नीचे गिरा दूंगा, आज भी इतनी ताकत, क्षमता रखता हूँ, आज से सौ साल बाद भी इतनी ही ताकत, क्षमता रखूँगा आपके सामने।

उस कृत्या ने समस्त ऋषि-मुनियों को लात मार-मारकर फेंक दिया। आज हम उनको ऋषि कहते हैं, उस समय तो वे मनुष्य थे आप जैसे। आप भी ऋषि हैं मगर आप गलत काम करेंगे तो लात मारकर फेंकेंगे ही। भगवान शिव ने कहा–यह तुमने क्या किया? यह यज्ञ कर रहे थे तुम एक औरत उसमें जल गई और आप बैठे-बैठे देखते रह गए? तुममें दक्ष को समझाने की क्षमता नहीं रह गई। और भगवान शिव उस क्रोध की अवस्था में उस सती के शव को कंधे पर रख कर जहां-जहां पूरे भारतवर्ष में घूमे, जहां पर जो अंग गिरा वह शक्तिपीठ कहलाए। और 52 स्थानों पर वह शरीर गिरा, हाथ कहीं गिरा, कहीं सिर गिरा, कहीं पांव गिरा, कहीं और कोई अंग गिरा। वे शक्ति पीठ कहलाए।

आज भारतवर्ष में जिन्हें शक्ति पीठ कहते हैं शक्ति के जो अंग गिरे, वहां जो पीठ बनी, चेतना बनी, मंत्र बने, स्थान बने वे शक्ति पीठ कहलाए। मैं बात यह कह रहा था कि इतने ऋषियों, मुनियों को इतने उच्चकोटि के ज्ञान को, इतने तंत्र के विद्वानों को जो अपनी ठोकरों से मार दे और विध्वंस कर दें। सब कुछ वह क्या चीज थी–वह कृत्या थी और कृत्या से वैताल पैदा हुआ। वैताल जिसने विक्रमादित्य के काल में एक अद्‌भुत, अनिर्वचनीय कथन किया कि कोई भी काम जिंदगी में असफल हो ही नहीं सकता, संभव ही नहीं है। बम तो एक बहुत मामूली चीज है बम का प्रहार हमारा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। हमें पहले ही मालूम पड़ जाएगा कि यह आदमी बम फेंकने वाला है, हम पहले ही उसका संहार कर देंगे, समाप्त कर देंगे, अगर कृत्या हमारे पास सिद्ध होगी तो।

आज भारतवर्ष में जिन्हें शक्ति पीठ कहते हैं शक्ति के जो अंग गिरे, वहां जो पीठ बनी, चेतना बनी, मंत्र बने, स्थान बने वे शक्ति पीठ कहलाए। मैं बात यह कह रहा था कि इतने ऋषियों, मुनियों को इतने उच्चकोटि के ज्ञान को, इतने तंत्र के विद्वानों को जो अपनी ठोकरों से मार दे और विध्वंस कर दें। सब कुछ वह क्या चीज थी–वह कृत्या थी और कृत्या से वैताल पैदा हुआ। वैताल जिसने विक्रमादित्य के काल में एक अद्‌भुत, अनिवर्चनयी कथन किया कि कोई भी काम जिंदगी में असफल हो ही नहीं सकता, संभव ही नहीं है।

और हमारे पास इंटेलीजेंस है, हमारे पास पुलिस है, हमारे पास और भी टेक्नोलाजी है, फिर भी बम विस्फोट होते जा रहे हैं। लाखों लोग मरते जा रहे हैं, बेकसूर लोग मरते जा रहे हैं। जिन्होंने कोई नुकसान किया ही नहीं बेचारों ने। आप सोचिए कि घर में एक मृत्यु हो जाए तो घर की क्या हालत होती है। एक जवान बेटा मर जाए तो पूरा जीवन दुःखदायी हो जाता है। यहां तो घर के पांच-पांच लोग मर जाते हैं और कानों पर जूं नहीं रेंगती। भारत सरकार कोशिश कर रही है, इसमें कोई दो राय नहीं है, पूरा प्रयत्न कर रही है इसमें कोई दो राय नहीं है मगर प्रहारक इतने बन गए हैं कि इस समय विज्ञान कुछ नहीं कर पा रहा है।

इस समय ज्ञान के माध्यम से, चेतना के माध्यम से फिर कोई एक व्यक्ति पैदा हो जो आपको वह ज्ञान दे, फिर आपको वह चेतना दे जिसके माध्यम से बम विस्फोट बंद हो सके। यह लड़ाई बंद हो सके, यह सब कुछ बंद हो सके।

आप इतने लोग हैं पूरे संसार में इस विध्वंस को इस

विनाश को समाप्त कर सकते हैं। इतनी क्षमता आपमें है। इसलिए मैं कह रहा हूँ कि आप कायर नहीं है, आपने अपने आप को कायर मान लिया है। आपने अपने आपको बुजदिल मान लिया है, अपने आपको बूढ़ा मान लिया है। आपने अपने आप को न्यून मान लिया है।

जो पुरुष कर सकता है वह स्त्री भी कर सकती है, तुमने भेद कर दिया। यह भेद मुगलों के समय में आया स्त्री बिल्कुल अलग, पुरुष बिल्कुल अलग। स्त्री बाहर नहीं निकले, घर से बाहर निकलते ही गड़बड़। पुरुष घर के बाहर काम करे और औरत घूंघट निकाल कर अंदर बैठी रहे। क्योंकि ज्योंहि चेहरा सुंदर दिखता नहीं, उसका अपहरण हो जाता। मुसलमानों ने बुरका प्रथा निकाली। उन्होंने घूंघट प्रथा निकाली बेचारों ने। यह मुगलों का समय था, 600 साल पहले यह घटना घटी।

अब कब तक वे घूंघट निकाले बैठी रहेंगी, कब तक वे ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाएंगी, कब तक वे घर में चूल्हे-चौके में ही फंसी रहेगी। जो पुरुष में क्षमता है वही स्त्री में भी क्षमता है। तुम्हारी नजर में भेद है, मगर साधना के क्षेत्र में पुरुष-स्त्री समान है, बराबर है। कोई अंतर है ही नहीं, वेद मंत्र तो वशिष्ठ की पत्नी ने भी सीखे, ब्रह्म ज्ञान सीखा, चेतना प्राप्त की। कात्यायनी ने सीखा, मैत्रेयी ने सीखा, कम से कम सैकड़ों ऐसी विदुषियाँ बनीं। वे पत्नियाँ थीं और स्त्रियाँ होते हुए भी उन्होंने उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त किया।

क्या वे औरतें नहीं थीं, क्या उनके पुत्र पैदा नहीं हुए थे। मगर वे ताकतवान थीं, क्षमतावान थीं, संयमी थी और पुरुष भी क्षमतावान थे, संयमी थे। जो क्षमतावान थे वे जिंदा रहे। देवता तो 33 करोड़ थे वहां, फिर हमें केवल 20 नाम क्यों याद हैं? ऋषियों के अट्ठारह नाम ही क्यों याद है, बाकी ऋषि कहां चले गए? और उस समय ऋषि पैदा हुए तो अब ऋषि क्यों नहीं पैदा हो रहे? संतान तो पैदा, उन्होंने भी की, हमने भी की। दो हाथ-पांव उनके थे तो हमारे भी हैं। फिर हम ऋषि क्यों नहीं पैदा कर पाए? मैं आपको ताकतवान क्यों नहीं बना पाया?

कहीं बम विस्फोट हुआ, आपने अखबार पढ़ा और रख दिया मन में कुछ हलचल भी नहीं हुई, तूफान भी पैदा नहीं हुआ। कितने लोग मर गए होंगे अकारण, मगर आपके अंदर कोई आग पैदा नहीं हुई, जलन नहीं पैदा हुई क्योंकि आपने अपने आप को कायर बुजदिल समझ लिया, आपने कहा–हम क्या करें, हमारी ड्यूटी थोड़े ही हैं।

नहीं आपकी ड्यूटी है। आपकी ड्यूटी है कि देश में एक भी बम नहीं फटे एक भी गोली नहीं चले, एक भी लड़ाई-झगड़ा नहीं हो यह आपकी ड्यूटी है, केवल आपकी ड्यूटी है।

कृष्ण ने गीता में यही कहा था–

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्याम्।

जब-जब भी धर्म की हानि होगी, अधर्म का अर्थ है जहां जहां भी व्यक्ति अपने धर्म को भूल जाएगा, जब भारत की हानि होने लगेगी, जब भारत के टुकड़े होने की स्थिति हो जाएगी, आर्यावर्त के टुकड़े होने की स्थिति हो जाएगी, तब एक व्यक्ति पैदा होगा जो अपने शिष्यों को ज्ञान और चेतना देगा। उनको एहसास कराएगा कि तुम कायर नहीं हो, बूढ़े नहीं हो, तुममें ताकत है, क्षमता है मगर वह ज्ञान नहीं है। कृत्या जब दक्ष को विध्वंस कर सकती है, लाखों ऋषियों को ऊंचा उठाकर धकेल सकती है, वीर वेताल जैसे व्यक्ति को पैदा कर सकती है, जो पूरे पहाड़ के पहाड़ को उठाकर दूसरी

जगह रख सकती है, जिस कृत्या के माध्यम से रावण पूरी लंका को सोने की बना सकता है। आप तो पांच रुपये चांदी के इकट्ठे नहीं कर सकते। आपके पास कागज के टुकड़े तो हैं, एलम्यूनियम के सिक्के तो हैं पर चांदी के सिक्के पच्चीस, पचास या सौ मुश्किल से होंगे। क्या क्षमता, क्या ताकत है आपमें?

जब वह सोने की लंका बना सका तो हम क्यों नहीं कर पा रहे हममें न्यूनता क्या है?

न्यूनता यह है कि आपमें अकर्मण्यता आ गई है आपमें भावना आ गई है कि हम कुछ नहीं कर सकते। यह हमारी ड्यूटी, हमारा काम है ही नहीं और कृष्ण कह रहे हैं कि जब-जब भी धर्म की हानि होने लग जाए तो यह हमारी ड्यूटी है कि हम ताकत के साथ खड़े हो सके और खड़े हो कर बता सके कि तुम्हारा विज्ञान फेल हो रहा है और हम ज्ञान के माध्यम से शांति पैदा कर रहे हैं। यह हमारा धर्म है, हमारा कर्तव्य है।

ऐसा अधर्म बना तब कृष्ण पैदा हुए, ऐसा अधर्म बना तब बुद्ध पैदा हुए, ऐसा अत्याचार बढ़ा तब सुकरात पैदा हुआ, ईसा मसीह पैदा हुआ। सब देशों में पैदा हुए कोई भारतवर्ष में पैदा नहीं हुए, सभी देशों में महान पुरुष पैदा हुए जिन्होंने अपने शिष्यों को ज्ञान की चेतना दी।

बगलामुखी तो एक बहुत छोटी चीज है, धूमावती तो बहुत छोटी चीज है। दस महाविद्या तो अपने आपमें कुछ है ही नहीं कृत्या के सामने। कृत्या तो यहाँ बैठे-बैठे एकदम से शत्रुओं को नष्ट कर दे, समाप्त कर दे। शत्रु में ताकत ही नहीं रहे, हिम्मत ही नहीं रहे। पंगु बना दे। वह आज के युग की जरूरत है।

आज के युग में नोट की भी जरूरत है, बेटों की भी जरूरत है, रोटी की भी जरूरत है, पानी की भी जरूरत है, मगर इससे पहले जरूरी है कि शत्रु समाप्त हों। जो बेचारे कुछ कर नहीं रहे वे मर रहे हैं, कहीं सदर बाजार में उन बेचारे दुकानदारों ने कुछ किया नहीं, उनकी दुकानें उड़ा दी गई। आप कल्पना करिये उनके परिवार वालों की क्या हालत हुई होगी। कोई दुख-दर्द हुआ, आँखों में आँसू आए हमारे? हमारे नहीं आएंगे तो किसके आएंगे?

हमारे अंदर दर्द पैदा होना चाहिए और इस सबको मिटाना होगा। विज्ञान इसको नहीं मिटा सकता, बंदूक की गोलियों को विज्ञान नहीं मिटा सकता, देख लिया हमने। और प्रत्येक के पास यह ताकत होनी चाहिए, एक-एक शिष्य के पास यह ताकत होनी चाहिए। दो-चार शिष्य तैयार होंगे उससे नहीं हो पाएगा। एक-एक व्यक्ति, एक-एक पुरुष, एक-एक स्त्री को यह ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है। वह उस साधना को सिद्ध करे कि जिसके माध्यम से वह कृत्या पैदा कर सके। भगवान शिव पैदा कर सकते हैं अगर विक्रमादित्य पैदा कर सकता है, फिर हम भी कर सकते हैं।

सांप जैसा एक मामूली जीव अगर कायाकल्प कर सकता है, पूरी केचुली उतारकर वापस क्षमतावान बन सकता है तो आप ऐसा क्यों नहीं कर पाते? सांप पूरे दो सौ साल जिंदा रहता है और एक हजार साल तक जिंदा रह सकता है। पच्चीस-पचास साल में मरता नहीं। आदमी मरता है सांप नहीं मरता। जब भी बुढ़ापा आता है ऐसा दिखता है कि कमजोरी आ गई तो वह केचुली को उतार कर फेंक देता है। वह ज्ञान एक था जो सिर्फ उसके पास रह गया।

पहले नाग योनि थी। जैसे वानर योनि थी, गंधर्व योनी थी वैसे नाग भी एक योनि थी। बाद में हमने मान लिया कि सांप ही नाग योनि है। नाग तो अपने आपमें एक जाति थी

जिनके पास यह विद्या थी। वह कायाकल्प की विधि जब भी आप कहेंगे कि मैं वृद्ध हो गया हूँ तो मैं आपको सिखा दूंगा। मैं तो आपको वृद्ध होने ही नहीं देना चाहता हूँ। सफेद बालों वाला वृद्ध नहीं होता, वृद्धता तो मन की अवस्था है। अगर सफेदी से ही बुढ़ापा आता तो हिमालय आपसे पहले ज्यादा बूढा है। उस पर तो सफेद ही सफेद लगा हुआ है। फिर तो वह बूढा ही बूढा बैठा है वह है ही नहीं ताकतवान। आपके सिर पर सफेदी है तो उस पर तो ज्यादा सफेदी है। मगर नहीं वह ताकत के साथ खड़ा हुआ है, अडिग खड़ा हुआ है।

आप वृद्ध नहीं है आप जवानों से ज्यादा ताकतवान है, क्षमतावान है। आपमें हौसला और हिम्मत है और वह चीज वापस कृत्या के माध्यम से प्राप्त हो सकती है। कृत्या को भगवान शिव ने प्रकट किया, पैदा किया और उस क्षमता के माध्यम से जितना अधर्म, जितनी दुर्नीति, जितना दुष्प्रचार, जितनी दुष्टता, जितनी न्यूनता, जितना घटियापन था वह समाप्त किया, विध्वंस कर दिया और ऋषि, मुनि वेद मंत्र उच्चारण कर रहे थे और एक औरत जल रही थी, वे स्वाहा बोल रहे थे और एक औरत जल रही थी यह क्या चीज थी?

और अगर ऐसे समय क्रोध नहीं आए, क्षमता नहीं आए, व्यक्ति जूझे नहीं तो हम मर्द क्या बने। फिर तो हम एक बहुत घटिया श्रेणी के मनुष्य हुए और अगर गुरु शिष्य को क्षमतावान नहीं बना सके तो फिर गुरु को यहाँ बैठने का अधिकार नहीं है, फूलों का हार पहनने का अधिकार नहीं है, बेकार है सब।

मैंने आपको बताया कि आज के युग के लिए क्या आवश्यक है, कोई घिसापिटा प्रवचन नहीं दिया आपको। मैं बता सकता था कि बगलामुखी क्या होती है, धूमावती क्या होती है, जगदंबा क्या होती है। मैंने कृत्या के बारे में बताया जिसके दस हाथों में दस चीजें हैं और दस में एक भी फूल नहीं है। उसके तो हाथों में कहीं खडग है, कहीं चक्र है, कहीं कृपाण है, कहीं त्रिशूल है। अपने आपमें वह अकेली ही क्षमतावान है, ताकतवान है। उसने शुंभ, निशुंभ, महिषासुर, रक्तबीज को समाप्त कर दिया एक अकेली औरत ने कर दिया, इसलिए आज भी उसे पूजा जाता है। आपको भी पूजा जाएगा, यदि आपमें वह साधना होगी तो पूजा जाएगा। नहीं तो आप भी मर कर समाप्त हो जाएंगे कोई पूछेगा नहीं आपको, याद भी नहीं करेगा आपको।

इसलिए आपमें वह क्षमता आनी चाहिए। इनके दस हाथ हैं, इसका मतलब है कि, दस चीजें चलाने की क्षमता है। अगर आप सोचते हैं कि रावण के बीस हाथ और दस सिर थे तो न तो रावण के कोई दस सिर थे, न बीस भुजाएं थी। यह एक कल्पना है, इसका अर्थ यह है कि उसके पास जितनी बीस भुजाओं में ताकत होती है उतनी ताकत थी, दस सिरों में जितनी बुद्धि होनी चाहिए उतनी बुद्धि थी। उतनी साधनाएं थीं। उसके पास उतना ज्ञान था उसके पास कि चांदी के सौ सिक्के नहीं पूरे शहर के शहर को सोने का बना दिया और उस समय किया जब दशरथ जैसा राजा भी कुछ कर नहीं पा रहा था। वही लड़ाई, वही झगड़े, वही बेटों को बाहर निकाल देना, वह मर जाना और बेटा अपने पिता का अंतिम संस्कार भी नहीं कर पाया। वही एक स्त्री सीता को उठाकर ले जाना। चीजें तो वहीं की वहीं थीं, मगर एक विद्या उनके पास थी।

और कृत्या प्रयोग, कृत्या साधना को आज तक किसी ने छुआ तक नहीं, इसलिए कि उनके पास ज्ञान ही नहीं था। अगर ज्ञान ही नहीं होगा तो कोई सीखेगा कहां से, कोई बताएगा कहां से? अगर मुझे उर्दू नहीं आती तो मैं उर्दू
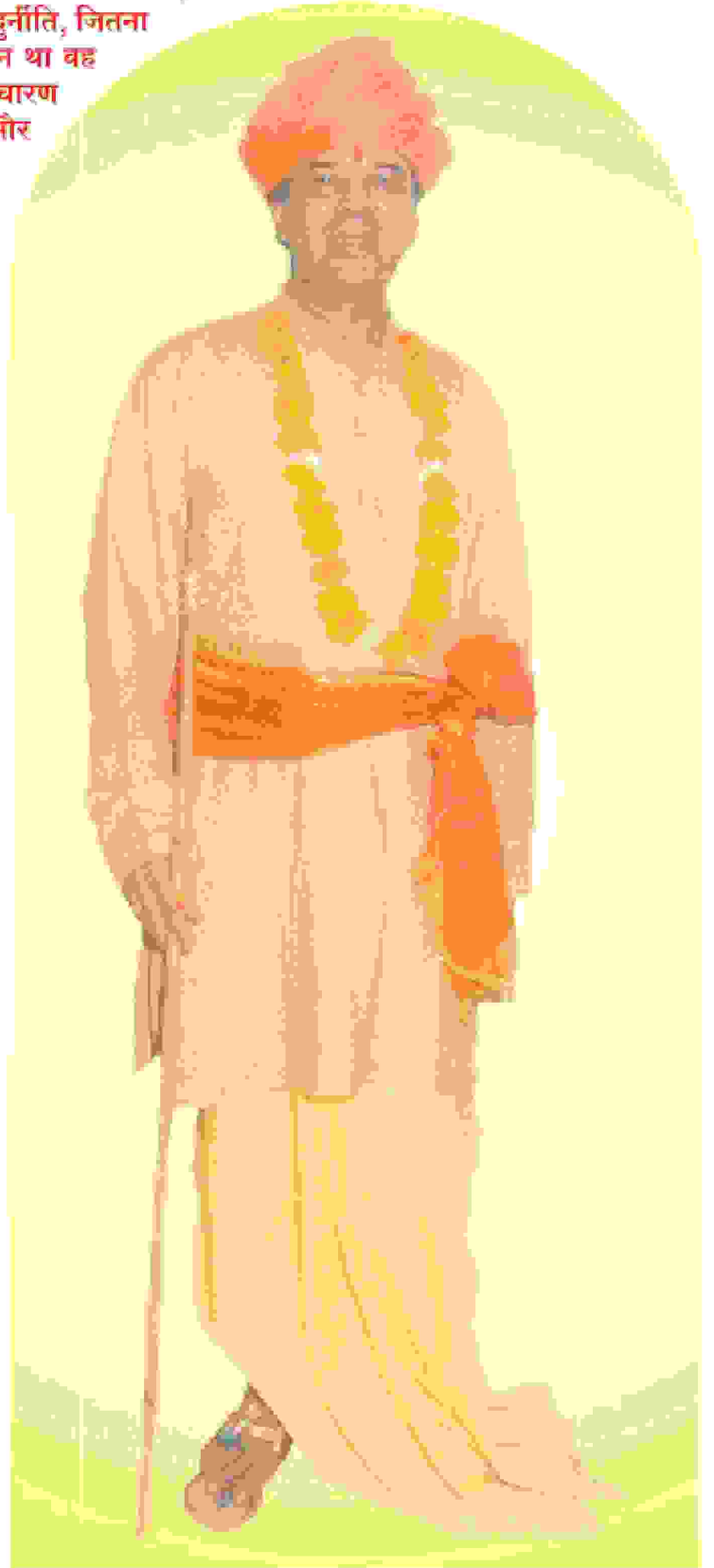
बोलूंगा कहां से। मुझे मराठी नहीं आती तो मराठी बोलूंगा कहां से।

अगर मुझे ज्ञान है कि कृत्या सिद्ध कैसे हो सकती है तो मैं आपको कात्यायनी और ये छोटी-छोटी साधनाएं क्यों दूंगा? दूंगा तो एक बहुत बड़ी साधना दूंगा कि आप बैठे-बैठे शत्रुता को समाप्त कर सकें और पूरे देश को एहसास करा सके कि एक गुरु के कोई शिष्य हैं। ऐसा शिष्य मैं आपको बनाना चाहता हूं।

शायद मेरी बात आपको तीखी लगे, शायद मेरी बात क्रोधमय हो गई है। मगर जो क्रोध नहीं करता है, उससे घटिया कोई आदमी नहीं होता। सबसे मरा हुआ जीव वह होता है जिसे क्रोध आता ही नहीं और हमारा देश बरबाद इसलिए हो गया कि अहिंसा परमो धर्मः-कोई थप्पड़ मारे तो दो-चार थप्पड़ और खा लीजिए। मैं कहता हूं कि थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठे, उससे पहले चालीस थप्पड़ मार दीजिए। मैं आपको यह कह रहा हूं काहे को हम थप्पड़ खाएं।

जो पहले लात मारता है वह जीतता है, यह ध्यान रखिए। कोई लात लगा देगा तो दूसरा गिर जाएगा, दूसरी लात लगेगी तो वह उठेगा नहीं। उसके दो-चार थप्पड़ और पड़ेंगे तो वह कहेगा गलती हो गई और तुम हाथ जोड़ो तो तुम्हारी हार निश्चित है। गांधीजी ने कह दिया अहिंसा परमो धर्मः-उस जमाने में था आज वह चीज नहीं है। उस समय बम विस्फोट नहीं हो रहे थे।

और आप अगर कहते हैं कि हम क्यों करें?

तो मैं कह रहा हूँ-कौन करेगा फिर अगर मैं आपको ज्ञान नहीं दे पाऊंगा, आप अगर नहीं कर पाएंगे, आप इस देश को, भारतवर्ष को आर्यावर्त को तैयार नहीं कर पाएंगे। लोग जीवित जाग्रत नहीं हो पाएंगे और लोग इस पर आक्रमण करते रहेंगे और आप चुपचाप देखते रहेंगे तो कौन आगे आएगा, कहां से आएगा? फिर शिष्य बनने का मनुष्य बनने का क्या धर्म रह जाएगा?

यह धर्म हमारा है क्योंकि हम जीवन में अभावग्रस्त नहीं होना चाहते, हम दरिद्री नहीं रहना चाहते, हम जीवन में तकलीफ नहीं देखना चाहते, हम दुखी नहीं होना चाहते, हम घर में लड़ाई-झगड़ा नहीं चाहते, हम जीवन में कायर बुजदिल नहीं होना चाहते, हम बुढ़ापा नहीं चाहते।

हम यह सब नहीं चाहते मगर ऐसा तब हो पाएगा जब हम ऐसी साधना सिद्ध कर सकेंगे कि आपका विकराल रूप देख कर मौत भी आपके द्वार के बाहर खड़ी रहे, अंदर आने की हिम्मत नहीं कर सके। तब यह चीज हो पाएगी। मौत आपके पास आकर बैठ जाए तो मर्द ही क्या हुए आप?

भगवान शिव ने एक उच्च कोटि की साधना के रूप में कृत्या प्रकट की। उस कृत्या को सिद्ध किया विक्रमादित्य ने। बीच में कर ही नहीं पाए कोई या तो ज्ञान लुप्त हो गया या वे ऋषि मुनि समाप्त हो गए। कुछ को भगवान शिव ने समाप्त कर दिया, कुछ मर गए, कुछ को ज्ञान रहा नहीं और कुछ ऐसे ऋषि हो गए जो अपने शिष्यों को ज्ञान दे नहीं पाए। पहले मुख से देते थे ज्ञान, किताबों में होता ही नहीं था। आज मैंने आठ किताबें तैयार की तो आप दो, पांच किताब लेंगे कि चलो कम से कम मेरे पास यह ज्ञान की थाती रह पाएगी।

उनके पास किताबें थी नहीं और उस समय ऐसे भी गुरु थे जो मरते दम तक कहते रहते थे कि बिल्कुल अंत में सिखाऊंगा यह चीज। अरे महाराज! सिखा दो, न जाने आप कब समाप्त हो जाओगे।

वे कहते नहीं बच्चे! अंत समय में सिखाऊंगा।

उनको लालच यह कि सेवा कौन करेगा, सीखा तो
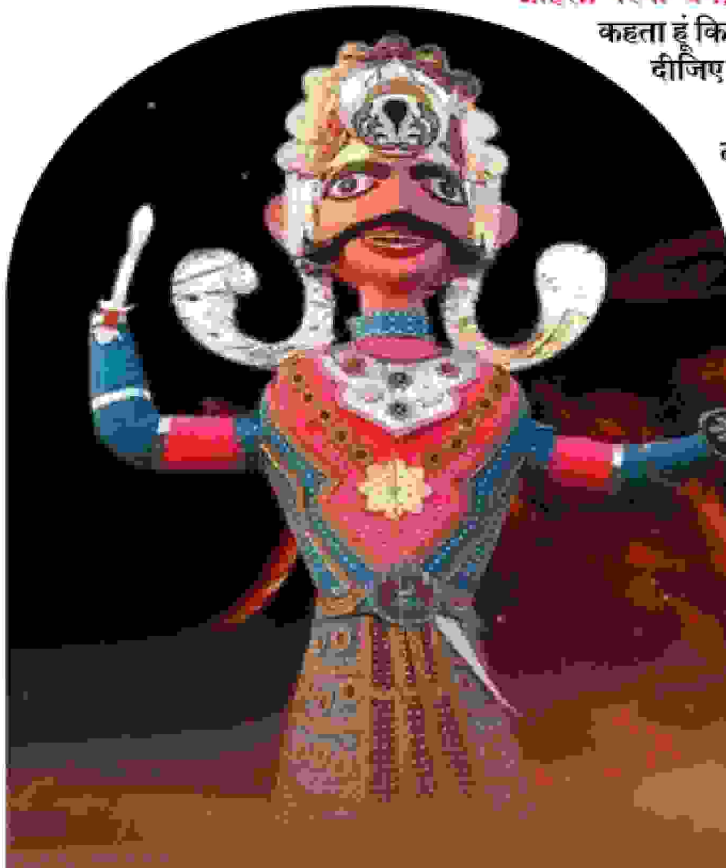
रावण के बीस हाथ और दस सिर थे तो न तो रावण के कोई दस सिर थे, न बीस भुजाएं थी। यह एक कल्पना है, इसका अर्थ यह है कि उसके पास जितनी बीस भुजाओं में ताकत होती है उतनी ताकत थी, दस सिरों में जितनी बुद्धि होनी चाहिए उतनी बुद्धि थी। उतनी साधनाएं थीं। उसके पास उतना ज्ञान था उसके पास कि चांदी के सौ सिक्के नहीं पूरे शहर के शहर को सोने का बना दिया और उस समय किया जब दशरथ जैसा राजा भी कुछ कर नहीं पा रहा था।

चला जाएगा और शिष्य सोचता यह सिखाता कुछ नहीं है रोज लंगोट धुलवाता है पर कुछ देता नहीं है।

अब दोनों में आपस में द्वन्द्व चल रहा है। वह उसको बोल नहीं पा रहा है, और मरते समय कहता है–राम राम जपना बेटा और गर्दन टेढी!

और शिष्य बस राम नाम सत्य है आगे गया गत है। अब यहां तो गति हुई नहीं आगे होगी या नहीं यह आपने देखा नहीं। मैं कह रहा हूँ कि गति कुछ होती नहीं है, गति हम उसकी करेंगे जो हमारे घर में गड़बड़ करेंगे, जो हमारे घर में हिंसा लाएगा कमजोरी लाएगा। कारखाने में कोई गोली बननी ही नहीं चाहिए जो आपको लग जाए। जब बनेगी नहीं तो लगेगी कहां से वो।

मैं आपको ऐसा क्षमतावान बनाना चाहता हूँ, जो पांच हजार वर्षों में समाप्त हो गया उस ज्ञान को आपको देना चाहता हूँ, उस कृत्या को आपको प्रदान कर देना चाहता हूँ, आप तजेस्विता युक्त बनें। सूर्य तो बहुत कम चमक वाला है, आप उससे हजार गुना चमक वाले बनें, ऐसा ज्ञान मैं आपको प्रदान करना चाहता हूँ।

मैंने आपको समझाया कि हम कमजोर और अशक्त क्यों हैं, मानसिक रूप से परेशान और रुग्न क्यों हैं और ऐसी कौन सी विद्या, कौन सी ताकत है, जिसके माध्यम से जो हमारे विकार हैं वे समाप्त हो सकें। हमारे मन में कुल 32 संचारी भाव होते हैं–सोलह अनुकूल, सोलह प्रतिकूल। घृणा, क्रोध, प्रतिशोध, दुर्भावना, लोभ, मोह, अहंकार ये सब संचारी भाव हैं और कुछ अच्छे संचारी भाव भी होते हैं जैसे प्रेम, स्नेह परोपकार।

जीवन का सार बलशाली होना है, जब तक आदमी निर्बल रहेगा तब तक आदमी सफल नहीं हो सकता और बलशाली होने के लिए उसे सोलह जो प्रतिकूल संचारी भाव हैं उन्हें समाप्त करना होगा। प्रकृति भी निर्बल को सताती है। दिया निर्बल होता है, थोड़ी सी हवा चलती है और उसे बुझा देती है और वही दिया अगर आग बन जाए तो हवा उसे बढ़ा देती है, हवा भी सहायक बन जाती है। ताकतवान का साथ देती है, हवा निर्बल की नहीं बनती। दोनों ही आग है और हवा एक ही है मगर जो ताकतवान है, जो क्षमतावान है उसकी वह सहायक बनती है।

आप ताकतवान है जो आप पूर्ण सफलतायुक्त होते ही हैं और वह ताकतवान होना मन से संबंधित है, विचारों से संबंधित है और कृत्या का अर्थ यही है कि आप ताकतवान और क्षमतावान बनें। मगर मंत्र जप आप करते रहें, एक महीना, दो महीने, छः महीने, पांच साल, दस साल ऐसी विद्या में आपको नहीं देना चाहता। मंत्र तो दूंगा ही मगर इतना लंबा मंत्र नहीं कि पांच साल जप करो, तब सफलता मिले।

जो भी मंत्र आपको दूंगा वह महत्वपूर्ण दूंगा, मैं ऐसा नहीं कहूंगा कि आप एक साल मंत्र जप करें, मगर पूरी धारणा शक्ति के साथ करें गुरु को हृदय में धारण करके करिए। यह सोचिए कि गुरु के अलावा मेरे जीवन में कुछ है ही नहीं। मैं यह नहीं कह रहा कि मैं आपका गुरु हूँ तो आप मेरी प्रशंसा करिए, आपके जो गुरु हों, गुरु हैं तो हैं ही उनके बिना फिर सांस लेने की भी क्षमता नहीं होनी चाहिए। और एक बार गुरु को धारण किया तो कर लिया, जो उसने कहा वह किया। फिर अपनी बुद्धि, अपनी होशियारी, अपनी अक्ल आप लड़ाएंगे तो आप ही गुरु बन जाएंगे, फिर कोई और गुरु बनाने की जरूरत ही नहीं क्योंकि फिर आप ही गुरु हैं क्योंकि आप मुझसे ज्यादा गाली बोल सकते हैं, मुझसे ज्यादा झूठ बोल सकते हैं और मुझसे ज्यादा लड़ाई कर सकते हैं तो मुझसे योग्य हैं ही आप। मैं आपके जितना क्रोध कर नहीं सकता, आपके जितना लड़ाई-झगड़ा कर नहीं सकता। जितनी शानदार 2000 गालियाँ आप दे सकते हैं, मैं दे नहीं सकता।

मगर साधनाओं में आपसे ज्यादा क्षमता है, आपसे ज्यादा पौरुष है, आपसे ज्यादा साहस आपसे ज्यादा धारण शक्ति है। कृत्या का तात्पर्य यह भी है कि हममें साहस हो, पौरुष हो, धारणा शक्ति हो। कृत्या अपने आप में एक प्रचंड शक्ति है जो भगवान शिव के द्वारा निर्मित हुई, जिसके कोई तूफान का अंत नहीं था। जब हुंकार करती थी तो दसों दिशाएं अपने आपमें कांपती थीं और उससे जो पैदा हुए उस कृत्या से वे वैताल जैसे पैदा हुए, धूर्जटा जैसे पैदा हुए, विकटा जैसे, अघोरा जैसे पैदा हुए। जो ग्यारह गण कहलाते हैं, भगवान शिव के वे कृत्या से पैदा हुए।

आपके जीवन में क्षमता, साहस, जवानी, पौरुष कृत्या साधना के माध्यम से ही आ सकती है। कृपणता, दुर्बलता, निराशा आपके जीवन में नहीं है, आप अपने ऊपर जबरदस्ती लाद लेते हैं, हर बार लाद लेते हैं कि अब मैं कुछ नहीं कर सकता, मेरे जीवन में कुछ है ही नहीं।

और धीरे-धीरे आप, नष्ट होते जा रहे हैं। देश में जो चल रहा है, जो हो रहा है उसके लिए विज्ञान कर क्या रहा है,

हमारी उपयोगिता फिर क्या है, हम फिर क्यों पैदा हुए हैं? ज्ञान क्या चीज है? पहले ज्ञान सही था तो अब ज्ञान सही क्यों नहीं हो रहा है? मैं यह सिद्ध करना चाहता हूँ।

मैं बताना चाहता हूँ कि आयुर्वेद में वह क्षमता है कि प्रत्येक रोग का निवारण कर सके। पहले किसी पौधे के पास खड़े होते थे तो पौधा खुद खड़ा हो जाता था कि यह मेरा नाम है, यह मेरा गुण है, यह मेरा उपयोग है और मनुष्य जीवन के लिए मैं इस प्रकार उपयोगी हूँ। पेड़-पौधे पहले इतना बोलते थे तो आज भी बोलते होंगे जरूर। उस समय वनस्पति खुद बोलती थी। आज भी बोलती है मगर हममें क्षमता नहीं कि हम समझ पाएं।

आपमें क्षमता हो, साहस हो, पौरुषता हो ऐसा मैं आपको बनाना चाहता हूँ। आप बोलें और सामने वाला थर्रा नहीं जाए तो फिर आप हुए ही क्या।

मैंने यह समझाया कि कृत्या क्या है और हमारे जीवन में क्यों आवश्यक है। कृत्या कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं है, कृत्या मतभेद नहीं है। कृत्या आपको प्रचंड पौरुष देने वाली एक जगदंबा है, देवी है। कृत्या किसी को नष्ट करने के लिए नहीं है परंतु आपके पौरुष को ललकारने वाली जरूर है, हिम्मत और हौसला देने वाली जरूरी है, वृद्धावस्था को मिटाने वाली जरूर है।

परंतु आवश्यकता है कि पूर्ण क्षमता के साथ इस कृत्या को धारण किया जाए और पूर्ण पौरुष के साथ, जवानी के साथ बैठकर इसे सिद्ध किया जा सकता है, मरे हुए मुर्दों की तरह बैठकर नहीं प्राप्त किया जा सकता और अगर मेरे शिष्य मरे हुए बैठेंगे तो मेरा सब कुछ देना ही व्यर्थ है।

वृद्धावस्था तो आएगी मगर जब आएगी तो देखा जाएगा। पूछ लेंगे मेरे पास आने की क्या जरूरत थी, बहुत बैठे हैं शिष्य उनके पास चली जाओ। मेरे पास तो हलवा पूरी मिलेगी नहीं तुम्हें।

बुढ़ापे जैसी कोई अवस्था होती नहीं है, यह केवल एक मन का विचार है कि हम बूढ़े हो गए हैं और आप जीवनभर पौरुषवान और यौवनवान हो सकते हैं कृत्या सिद्धि के द्वारा। मगर सिद्धि तब प्राप्त होगी जब गुरु जो ज्ञान दे उसे आप क्षमता के साथ धारण करें। शुकदेव ने तो केवल एक बार सुना और उसे सिद्धि सफलता मिल गई।

जब पार्वती ने यह हठ कर ली कि भगवान शिव उन्हें बताएं कि आदमी जिंदा कैसे रह सकता है, मरे ही नहीं, क्या विद्या है जिसे संजीवनी विद्या कहते हैं तो महादेव बताना नहीं चाहते थे, वह गोपनीय रहस्य था। मगर पार्वती ने हठ किया तो उन्हें कहना पड़ा।

अमरनाथ के स्थान पर शिव ने बताना शुरू किया। भगवान शिव ने डमरू बजाया तो जितने वहां पर पशु-पक्षी, कीट-पतंगे थे, सब भाग गये। लेकिन एक तोते ने अंडा दिया था वह रह गया। बाकी बारह कोस तक कोई कीट-पतंग भी नहीं रहा। वह अंडा फूट गया और बच्चा बाहर आ गया। भगवान शिव पार्वती को कथा सुनाते जा रहे थे और वह बच्चा सुनता जा रहा था। पार्वती को नींद आ गई और वह बच्चा हुंकार भरता रहा। कथा समाप्त हुई तो भगवान शिव ने देखा कि पार्वती तो सो गई। उन्होंने सोचा कि फिर यह हुंकार कौन भर रहा था, उन्होंने पार्वती को उठाया और पूछा तुमने कहां तक सुना?

पार्वती ने कहा कि मैंने वहां तक सुना और फिर मुझे नींद आ गई।

तो भगवान शिव ने कहा–यह हुंकार कौन भर रहा था फिर। पार्वती ने कहा–मुझे तो मालुम नहीं।

आपसे ज्यादा क्षमता है, आपसे ज्यादा पौरुष है, आपसे ज्यादा साहस आपसे ज्यादा धारण शक्ति है। कृत्या का तात्पर्य यह भी है कि हममें साहस हो, पौरुष हो, धारणा शक्ति हो। कृत्या अपने आप में एक प्रचंड शक्ति है जो भगवान शिव के द्वारा निर्मित हुई, जिसके कोई तूफान का अंत नहीं था। जब हुंकार करती थी तो दसों दिशाएं अपने आपमें कांपती थीं और उससे जो पैदा हुए उस कृत्या से वे वैताल जैसे पैदा हुए, धूर्जटा जैसे पैदा हुए, विकटा जैसे, अघोरा जैसे पैदा हुए। जो ग्यारह गण कहलाते हैं, भगवान शिव के वे कृत्या से पैदा हुए।

उन्होंने देखा तो एक तोते का बच्चा बैठा था। महादेव ने अपना त्रिशूल फेंका तो उस बच्चे ने कहा–आप मुझे मार नहीं सकते क्योंकि मैंने अमर विद्या सीख ली है आपसे। जो आपने कहा वह मैं समझ गया। मुझे कोई मंत्र उच्चारण करने की आवश्यकता नहीं है।

तो वह बच्चा उड़ा और वेदव्यास की पत्नी अर्घ्य दे रही थी भगवान सूर्य को, और उसके मुंह के माध्यम से वह अंदर उतर गया और 12 साल तक अंदर रहा। पहले माताएं 21 महीने पर संतान पैदा करती थीं। 21 महीने उनके गर्भ में बालक रहता था। फिर 11 महीने तक रहने लगा। फिर बच्चा दस महीने तक रहने लगा। सत्यनारायण की कथा में आता है कि दस महीने के बाद में पुलस्त्य की पत्नी ने सुंदर कन्या को जन्म दिया। फिर नौ महीने के बाद में जन्म होने लगा और अब आठ महीने बाद जन्म होने लग गए। तो ये सब अपरिपक्व मस्तिष्क वाले बालक पैदा हो रहे हैं। जो धारणा शक्ति थी महिलाओं की वह खत्म हो गई।

और 12 साल बाद इसने कहा कि तुम्हें तकलीफ हो रही है तो मैं निकल जाऊंगा, महादेव मेरा कुछ नहीं कर सकते।

और महादेव बैठे थे दरवाजे के बाहर कि निकलेगा तो मार दूंगा।

उसने कहा महादेव मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते क्योंकि मैं वह संजीवनी विद्या समझ चुका हूं। अब महादेव का त्रिशूल मेरा क्या बिगाड़ेगा। हां, तुम्हें तकलीफ हो तो बता दो।

व्यास की पत्नी ने कहा–मुझे पता ही नहीं लगा कि तुम मेरे अंदर हो। तुम तो हवा की तरह हलके हो। तुम्हारी इच्छा हो तो बैठे रहो, नहीं इच्छा हो तो निकल जाओ।

वह शुकदेव ऋषि बने। शुक याने तोता। यह बात बताने का अर्थ है कि जो मैं बोलूं उसे धारण करने की शक्ति होनी चाहिए आपमें। जैसे शुकदेव ने सुना शिव को और एक ही बार में सारा ज्ञान आत्मसात् कर लिया। अगर धारण कर लेंगे, समझ लेंगे तो जीवन में बहुत थोड़ा सा मंत्र जप करना पड़ेगा। धारण करेंगे ही नहीं, मानस अलग होगा तो नहीं हो पाएगा।

जो कहूं वह करना ही है आपको। शास्त्रों ने कहा है–जैसा गुरु करे वैसा आप मत करिए, जो गुरु कहे वह करिए। अब गुरु वहां जाकर चाय पीने लगे तो हम भी चाय पीएंगे, जो गुरु भी करेंगे हम भी करेंगे अब गुरुजी मंच पर बैठे हैं तो हम भी बैठेंगे। नहीं ऐसा नहीं करना है आपको। जो गुरु कहे वह करिए। आपको कहे यह करना है तो करना है।

आप गुरु के बताए मार्ग पर चलेंगे, गतिशील होंगे, तो अवश्य आपको सफलता मिलेगी, गारंटी के साथ मिलेगी और साधना आप पूर्ण धारण शक्ति के साथ करेंगे तो अवश्य ही पौरुषवान, हिम्मतवान, क्षमतावान बन सकते हैं। आप अपने जीवन में उच्च से उच्च साधनाएं, मंत्र और तंत्र का ज्ञान गुरु से प्राप्त कर सके और प्राप्त ही नहीं करें, उसे धारण कर सकें, आत्मसात कर सकें ऐसा मैं आपको हृदय से आशीर्वाद देता हूँ, कल्याण कामना करता हूँ।

–सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्दजी
(डॉ. नारायण दत्त श्रीमालीजी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

किसी भी शुभ कार्य में, चाहे वह यज्ञ हो, विवाह हो, शाक्त साधना हो, तंत्र साधना हो, गृह प्रवेश हो अथवा अन्य कोई मांगलिक कार्य हो, भैरव की स्थापना एवं पूजा अवश्य की जाती है, क्योंकि भैरव ऐसे समर्थ रक्षक देव हैं, जो कि सब प्रकार के विघ्नों को, बाधाओं को रोक सकते हैं, और कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हो जाता है। आपदा उद्धारक बटुक भैरव यंत्र स्थापित करने से निम्न लाभ हैं-

- व्यक्ति को मुकदमों में विजय प्राप्त होती है।
- समाज में उसके मान-सम्मान और पौरुष में वृद्धि होती है।
- किसी भी प्रकार की राज्य बाधा जैसे प्रमोशन अथवा ट्रांसफर में आ रही बाधाओं से निवृत्ति प्राप्त होती है।
- आपके शत्रु द्वारा कराया गया तंत्र प्रयोग समाप्त हो जाता है।

यदि आपके जीवन में उपरोक्त प्रकार की बाधाएं लगातार आ रही हों और आप कई प्रकार के उपाय कर चुके हैं, इसके बावजूद भी आपकी आपदा समाप्त नहीं हो रही है तो आपको आपदा उद्धारक बटुक भैरव यंत्र अवश्य ही स्थापित करना चाहिए। इस यंत्र को स्थापित कर बताई गई लघु विधि द्वारा पूजन करने मात्र से ही आपकी आपदाएं स्वतः ही समाप्त होने लगती हैं। इस यंत्र के लिए किसी विशेष पूजन क्रम की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसे अमृत योग, शुभ मुहूर्त में सद्गुरुदेव द्वारा बताई गई विशेष गोपनीय विधि द्वारा प्राण-प्रतिष्ठित किया गया है।

यंत्र स्थापन विधि

बटुक भैरव यंत्र को किसी भी षष्ठी अथवा बुधवार को रात्रि में काले तिल की ढेरी पर स्थापित कर कुंकुम, अक्षत, धूप दीप से संक्षिप्त पूजन सम्पन्न कर लें। इसके पश्चात् पूर्ण चैतन्य भाव से निम्न मंत्र का 1 घंटे तक जप करें।

ॐ ह्रीं बटुकाय आपद उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र का यंत्र के समक्ष 7 दिन तक लगातार जप करने के पश्चात् यंत्र को जल में विसर्जित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

आर्थिक उन्नति का
साबर प्रयोग

शुभ तिथि 21.12.20 या 13.01.21 को सम्पन्न करें

साधक स्वयं बुधवार को सुबह सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाएं, सामने 'सुलेमानी हकीक' रख दें और उस पर नजर डालते हुए पांच माला मंत्र जप करें, 'स्फटिक माला' से मन्त्र जप हो, मन्त्र जप के बाद उस सुलेमानी हकीक को अंगूठी में जड़वा कर धारण कर लें तो जिस कार्य या व्यापार में हाथ डालें वह पूरी तरह से सफल हो जाता है और अभूतपूर्व धन प्राप्त होता है।

मंत्र

ॐ नमो भगवती पद्मा श्रीं ॐ ह्रीं पूर्व दक्षिण उत्तर पश्चिम धन द्रव्य आवे सर्वजन्य वश्य कुरु कुरु नमः।।

इसे एक ही दिन में पांच माला मन्त्र जप से ही सिद्ध किया जाता है।

साधना सामग्री-450/-

अक्षय पात्र साधना

पत्रिका में समय-समय पर सर्वथा गोपनीय और महत्वपूर्ण साधनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। हमारा प्रयत्न भी यह रहता है कि हमारे पूर्वजों के पास जो गोपनीय विद्याएं और साधनाएं थी, उनको खोज कर प्राप्त किया जाय ओर पत्रिका के माध्यम से साधकों को प्रदान किया जाय। इससे जहां एक और ये साधक उस साधना में विशेष सिद्धता तो प्राप्त करेंगे ही वह ज्ञान वह साधना विधि और वह साधना रहस्य भी पत्रिका के माध्यम से सुरक्षित रह सकेगा।

इसी कड़ी में हम यह अद्‌भुत अचरजभरी साधना

साधना रहस्य

यह साधना अत्यन्त ही रहस्यपूर्ण है, क्योंकि जब महर्षि धौम्य के कहने के अनुसार युधिष्ठिर ने सूर्य से संबंधित अक्षय पात्र साधना की, तो धौम्य ने विशेष मुहूर्त में बनाकर एक अक्षय पात्र युधिष्ठिर को दिया जो कि तांबे की बटलोई के आकार का था। इसकी विशेषता यह थी कि इस पात्र का निर्माण उस समय किया गया जब सूर्य स्वयं अपने नक्षत्र पर आरूढ थे, ऐसे विशेष मुहूर्त में उस अक्षय पात्र का निर्माण कर उसके सूर्य साधना में निर्दिष्ट अठारह संस्कार सम्पन्न किये जो कि अत्यधिक महत्वपूर्ण है, ये संस्कार ही इस अक्षय पात्र के आधार है।

इसके बाद इस अक्षय पात्र पर यजुर्वेदीय सूर्योपनिषद का सम्पुट देते हुए, अक्षय पात्र मंत्र से उस पात्र को सम्पन्न किया और सही अर्थों में उस अक्षय पात्र बनाया। ऐसे अक्षय पात्र पर ही साधना सम्पन्न की जाती है। पत्रिका से सम्पर्क स्थापित करने पर श्रेष्ठ पंडितों से इस प्रकार संस्कारित एवं सूर्योपनिषद से सम्पुटित कर यह अक्षय पात्र भेजने की व्यवस्था की जा सकती है जो कि ताम्र से निर्मित होता है।

इस अक्षय पात्र पर युधिष्ठिर ने महर्षि धौम्य के बताये अनुसार साधना सम्पन्न की, इस साधना के द्वारा भगवान सूर्य युधिष्ठिर के सामने प्रगट हुए और उनके मन के भावों की समझ कर बोले'

ते भि लषितं किंचित्तत्वं सर्वमवाप्स्यसि।
अहमन्नं प्रदास्यामि सप्तपच च ते समा: ।।

(महा.वन. 3/71)

हे धर्मराज! तुम्हारा जो भी अभिष्ट है, वह तुमको अवश्य ही प्राप्त होगा।

महाभारत में इसी प्रसंग में यह भी लिखा है कि यदि कोई व्यक्ति या साधक संयमित रह कर धौम्य द्वारा बताई हुई, इस साधना को सम्पन्न करेगा, तो उसके जीवन में किसी भी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहेगी—

इमं स्तवं प्रयतमना: समाधिना
पठेदिहान्योऽपि वरं समर्थयन्
तत तस्य दद्याच्च रविर्मनीषितं
तदाप्नुयाद् यद्यपि तत् सुदुर्लभम्।।

(महा.वन, 3/75)

आधुनिक सिद्धाश्रम के योगियों ने इस को स्पष्ट किया है कि इस कलियुग में भी यह अक्षय पात्र साधना करने आपमें महत्वपूर्ण है और तुरन्त चमत्कारिक ढंग से प्रभाव देने वाली है। यदि कोई साधक मनोयोगपूर्वक इसे सम्पन्न करे तो इस अक्षय पात्र के माध्यम से साधक की मनोकामना अवश्य पूर्ण होती है।

卐 卐 卐 साधना विधि 卐 卐 卐

इस साधना को किसी भी रविवार से प्ररम्भ की जा सकती है, रविवार के दिन प्रात:काल उठ कर स्नान कर शुद्ध सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर सामने बैठ जाय और सामने सफेद वस्त्र पर अक्षय पात्र स्थापित कर दें। फिर उस अक्षय पात्र को पहले कच्चे दूध से धोवें और फिर शुद्ध जल से धो कर पौंछ लें, बाद में इस पर केशर की सात बिन्दियाँ लगावें।

तत्पश्चात् साधक अपनी मुट्ठी भर कर चावल अक्षय पात्र में रखे और फिर सूर्य को प्रणाम कर निम्न मंत्र का मात्र ग्यारह बार पाठ करें। इस प्रकार नित्य करें। इस कार्य में मुश्किल से आधे घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

इस प्रकार मात्र चालीस दिन करे तो यह अक्षय पात्र साधना पूर्ण रूप से सिद्ध हो जाती है। साधना काल में अगरबत्ती लगाना अनिवार्य नहीं है। परन्तु घी का दीपक लगा रहना चाहिए।

अष्टोत्तर शतनाम सूर्य स्तोत्र

सूर्यो र्यमा भगस्त्वष्टा पूषार्क: सविता रवि:। गर्भस्तिमानज: कालो मृत्युर्धाता प्रभाकर:॥
पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम्। सोमो वृहस्पति: शुक्रो बुधोऽगांरक एव च॥
इन्द्रो विवस्वान दीप्तांशु शुचि: शौरि: शनैश्चर:। ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यम॥
वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसां पति:। धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदांगों वेदवाहन:॥
कृतं त्रेता द्वापरश्च कलि सर्वमलाश्रय:। कला काष्ठा मुहूर्त्ताश्च क्षपा यामस्तथा क्षण:॥
संवत्सरकरो श्वत्थ: कालचक्रो विभावसु:। पुरुष: शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्त: सनातन:॥
कालाध्यक्ष: प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुद:। वरुण: सागरों शश्च जीमूतो जीवनो रिहा॥
भूताश्रयो भूतपति: सर्वलोकनमस्कृत:। स्रष्टा संवर्तको वह्नि: सर्वस्यादिरलोलुप:॥
अनन्त: कपिलो भानु: कादम: सर्वतोमुख:। जयो विशालो वरद: सर्वधातुनिषेचिता॥
मन: सुपर्णो भूतादि: शीघ्रग: प्राणधारक:। धन्वन्तरिर्धूमकेतुरादिदेवो दिते सुत:॥
द्वादशात्मारविन्दाक्ष: पिता माता पितामह:। स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टिपम्॥
देहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुख:। चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेय: करुणान्वित:॥

स्तोत्र के पाठ का फल—

एतद् वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजस:। नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत् स्वयंभुवा॥
सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम्। वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितो स्मि हिताय भास्करम्॥
सूर्योदये य: सुसमाहित: पठेत्। स पुत्रदारान् धनरत्नसंचयान्॥
लभेत जातिस्मरतां नर: सदा। धृतिं च मेधो च स विन्दते पुमान्॥
इमं स्तवं देववरस्य यो नर: प्रकीर्तयेच्छुचिसुमना: समाहित:।
विमुच्यते शोकदवाग्निसागराल्लभेत कामान् मनसा यथेप्सितान्॥

ये अमित तेजस्वी, सुवर्ण एवं अग्नि के समान कान्ति वाले भगवान सूर्य जो देवगण, पितृगण एवं यक्षों के द्वारा सेवित हैं तथा असुर, निशाचर, सिद्ध एवं साध्य के द्वारा वन्दित हैं, के कीर्तन करने योग्य एक सौ आठ नाम हैं जिनका उपदेश साक्षात् ब्रह्माजी ने दिया है। सूर्योदय के समय इस सूर्य-स्तोत्र का नित्य पाठ करने से व्यक्ति स्त्री, पुत्र, धन, रत्न, पूर्वजन्म की स्मृति, धैर्य व बुद्धि प्राप्त कर लेता है। उसके समस्त शोक दूर हो जाते हैं व सभी मनोरथों को भी प्राप्त कर लेता है।

इस साधना के सैकड़ों अनुभव मेरे मानस मे है। मैंने अपने जीवन में पांच गृहस्थ शिष्य और चार संन्यासी शिष्यों को यह साधना सम्पन्न कराई है और सभी के सभी साधक इस साधना में सफलता पा सके हैं। आज उनके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव, दुख, दैन्य या दरिद्रता नहीं है।

मैंने इस साधना के द्वारा यह भी देखा है कि जीवन की यदि कोई समस्या, बाधा या अड़चन आ जाती है तो उस समस्या का निराकरण भी यह करता है। कठिन से कठिन बीमारी को दूर करने में यह मंत्र-स्तोत्र अपने आप में अद्वितीय है।

एक बार मेरा पुत्र बीमार होकर अस्पताल में मरणासन्न हो गया और डॉक्टरों हाथ झटक दिये थे। मुझे इस मंत्र स्तोत्र पर पूरा भरोसा था। ऐसी स्थिति में मैं उसके सिरहाने बैठ कर इस स्तोत्र का मात्र पांच बार पाठ किया तो पुत्र चैतन्य हो गया और चौबीस घंटे बाद तो वह पूर्ण स्वस्थ हो कर घर लौट आया।

इसके माध्यम से मैंने अपनी मां के गले का प्रारम्भिक स्टेज का कैन्सर पूर्ण रूप से ठीक किया है। मैं नित्य गिलास में जल भर कर इस मंत्र स्तोत्र का पांच बार पाठ कर वह जल मां को पिला देता था। एक महीने के भीतर-भीतर वह पूर्णत: स्वस्थ हो गई। डॉक्टर भी इस घटना से चमत्कृत होकर रह गये थे।

वास्तव में ही अक्षय पात्र साधना जीवन की बेजोड़ और गोपनीय साधना है। प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह दिसम्बर महीने में इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करें क्योंकि दिसम्बर में सूर्य धनु राशि में होते हैं, जो कि श्रेष्ठतम समय होता है। इनमें भी 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के बीच किसी भी रविवार से यह साधना सम्पन्न करने पर महत्वपूर्ण उपलब्धि एवं सफलता प्राप्त होती है। यदि साधक नित्य एक बार अक्षय पात्र के सामने इस स्तोत्र का एक बार पाठ कर ले तो उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं रहती। वास्तव में ही यह एक गोपनीय महत्वपूर्ण और अद्भुत साधना है।

साधना सामग्री- 600/-

- शत्रु बाधा निवारण
- तंत्र बाधा निवारण
- रोग बाधा निवारण

हेतु

एक ही उपाय

दस महाविद्याओं में भगवती षष्ठ क्रम आती है। इनकी साधना से साधक को समाज में यश, सम्मान, समाज में प्रतिष्ठा तथा वर्चस्व प्राप्त होता है। त्रिपुर भैरवी को भगवती आद्या काली का ही स्वरूप माना गया है।

इस साधना से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुरक्षा प्राप्त होने लगती है और समसत बाधाएं समाप्त हो जाती हैं। इस साधना के माध्यम से साधक पूर्ण क्षमतावान एवं वेगवान बन सकता है।

त्रिपुर भैरवी की साधना करने से साधक समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है चाहे वह शत्रु अधिदैविक हो, अधिभौतिक हो अथवा आध्यात्मिक हो। उसके जीवन में आ रही हर प्रकार की बाधाओं का शमन होता है। तंत्र बाधाओं के निवारण के लिए इन साधना का विशेष महत्व है।

शत्रुओं व बाधाओं का संहार करने के साथ ही त्रिपुर भैरवी अपने साधक को जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्रदान करती है, जिससे समाज में उसका एक अलग ही स्थान बन जाता है तथा लोग उसे विशेष सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

त्रिपुर भैरवी साधना की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है, कि यह प्रबल रूप तंत्र बाधा निवारण की साधना है।

तांत्रिक बाधा के कारण उसके समस्त कार्य बाधित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में त्रिपुर भैरवी साधना सम्पन्न करने पर व्यक्ति का जीवन निष्कंटक तथा तेजस्वी क्षमताओं से युक्त हो जाता है।

साधना विधान

यह रात्रि कालीन साधना है, साधक दिनांक 29.12.20 रात्रि 9 बजे स्नान आदि से निवृत्त होकर स्वच्छ लाल वस्त्र धारण कर लाल ऊनी आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें।

यह साधना 29.12.2020 को यह किसी भी रविवार को सम्पन्न कर सकते हैं।

अपने सामने बाजोट पर लाल कपड़ा बिछाकर उस पर तिल की ढेरी बनाकर 'भैरव गुटिका' स्थापित करें, क्योंकि इस साधना में भैरव स्थापना आवश्यक मानी गयी है। अपने सामने 'त्रिपुर भैरवी यंत्र' पात्र में स्थापित करें, उसके सम्मुख 'त्रिपुर भैरवी माला' स्थापित कर दें एवं साथ ही त्रिपुर भैरवी का चित्र स्थापित करें।

सर्वप्रथम 'भैरव गुटिका' पर लाल पुष्प अर्पित करें।

विनियोग :

अस्य त्रिपुर भैरवी मंत्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः शक्ति श्छन्दः त्रिपुर भैरवी देवता ऐं बीज ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं महा अभीष्ट सिद्धिये जपे विनियोग

कर न्यास

हसरां अंगुष्ठाभ्यां नमः। हसरीं तर्जनीभ्यां नमः।
हसरूं मध्यमाभ्यां नमः। हसरैं अनामिकाभ्यां नमः।
हसरौं कनिष्ठकाभ्यां नमः। हसरः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि षडंगन्यास :

हसरां हृदयाय नमः। हसरीं शिरसे नमः।
हसरूं शिखायै वषट्। हसरैं कवचाय हुं।
हसरौं नेत्रत्रयाय वौषट्। हसरः अस्त्राय फट्।

त्रिपुर भैरवी यंत्र व माला को पवित्र जल से स्नान कराकर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ कर यंत्र पर काजल व सिन्दूर का टीका लगायें, अगरबत्ती व तेल का दीपक प्रज्वलित कर दें तथा लाल पुष्प व फल अर्पित करें। तत्पश्चात् निम्न प्रकार ध्यान करें-

उद्यद्भानु सहस्र कांति मरूण क्षौमां शिरोमालिकाम्
रक्तालिप्त पयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम्
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद् वक्त्रार विन्द श्रियम्
देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्दे-समन्दस्तिाम्।।

इसके पश्चात् 'त्रिपुर भैरवी माला' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।।हसैं हसकरीं हसैं।।

मंत्र जप के पश्चात् दूध से बने प्रसाद का भोग लगायें एवं गुरू आरती अवश्य सम्पन्न करें। शुद्ध सात्विक हल्का भोजन एक समय करें। अगले दिन साधना सामग्री नदी में विसर्जित कर दें। यदि सम्भव हो तो यह मंत्र जप आने वाले रविवार तक नित्य 5 माला करें। फिर रविवार को सामग्री नदी या तालाव में विसर्जित कर दें।
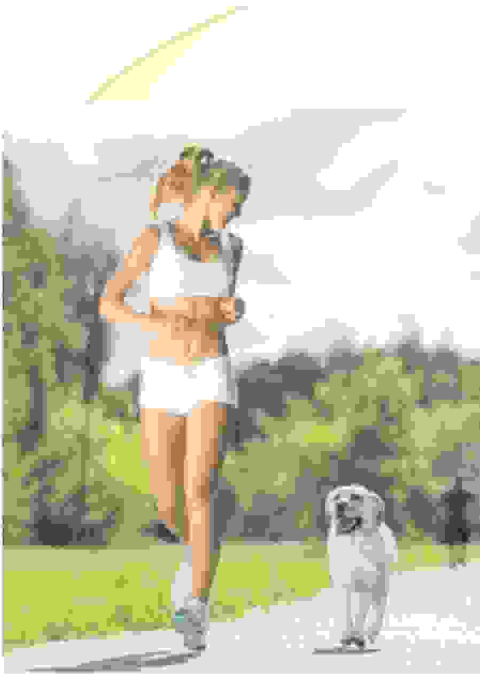
साधना सामग्री-510/-

लम्बी आयु कैसे प्राप्त करें
योग

सारे विश्व में भारत ही योग-दर्शन का ध्रुव केन्द्र है, भारत ही भगवान कृष्ण, जो योगेश्वर की उपाधि से विभूषित है, का जन्म स्थल है, वे तीनों कालों के ज्ञाता थे, योग की सारी विधियां उन्हें मालूम थीं। महाभारत युद्ध के समय शिविरों में लोगों के लिए, जो चिकित्सा केन्द्र था, जिसमें औषधि तथा जो शल्य चिकित्सा आदि की व्यवस्था थी, वह स्वास्थ्य को दृष्टिकोण में रखते हुए योग की सिद्धि एवं संग्रह ही था, प्रयुक्त औषधियाँ अचूक थीं। ऐसे ही ऐतिहासिक प्रूफ के रूप में 'च्यवन ऋषि' का नाम लिया जा सकता है, जिनकी औषधि में जर्जर शरीर को भी यौवनवान बना देने की क्षमता थी।

हमारे पूर्वजों को भौतिक प्राप्तियों का अभाव नहीं था, वे पूर्ण थे, क्योंकि वे योगी व साधक थे, उनका विचार शुद्ध व जीवन का दृष्टिकोण सकारात्मक था, शुभ भावना से परिपूर्ण होने के कारण वे नकारात्मक दृष्टि से काफी दूर थे, वे दूरदर्शी थे उनका चिन्तन कल्याण कारक था।

भौतिकता की इस चकाचौंध में सारा विश्व रंग-बिरंगी वस्तुओं के प्रभाव में है, इस चक्रव्यूह से निकलना उसके वश की बात नहीं, उसे अपनी जान गंवानी ही पड़ेगी। यह संसार परिवर्तनशील है, जो आया है वह जायेगा, इसलिए इसके मोह जाल में फंसना अपने को बीमार करना है। परिस्थितियां डरावनी हैं, योग युक्त रहकर ही परिस्थितियों पर काबू पाया जा सकता है। यहां पर वही व्यक्ति सफल होगा, जिसको अपने योगेश्वर (गुरु) में विश्वास एवं निश्चय होगा।

मनुष्य को चिन्ता एवं भय ये दोनों बातें बहुत ही परेशान व तंग करती रहती हैं, लोग ज्यादातर बीमार इसी से होते हैं। यह संसार दुःखधाम है, इसे सुखमय बनाना आपका अपना काम है। जिस प्रकार संसार के अन्य कामों को हमें सीखने की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार यह भी सीखना पड़ता है।

हमको दुनिया के हर काम को सीखने के लिए गुरु की आवश्यकता पड़ती है, गुरु योगेश्वर हैं, जो हमें योग एवं ज्ञान के साथ-साथ जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। योग एक आध्यात्मिक शक्ति भी है, जिसके द्वारा आत्मदर्शन, परमात्मदर्शन, विश्वदर्शन की जो स्थिति बनती है उसमें कायाकल्प हो जाता है।

विज्ञान जगत की जितनी भी चमत्कारिक शक्तियां हैं, उससे लाखों गुना ज्यादा प्रभावी अध्यात्म जगत में योग की चमत्कारिक शक्ति है। योग के द्वारा अपने जीवन की कालिख को मिटाया जा सकता है, बीमारियों से मुक्ति पाई जा सकती है। जीवन सबको प्यारा है, कोई भी मरना नहीं चाहता है, परन्तु मृत्यु एक अटल सत्य है,

जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु होना निश्चित है। जीवन उसी व्यक्ति का सार्थक है, जिसे जीने की कला मालूम है।

जीवन का अर्थ है-स्फूर्ति, उमंग, उत्साह। जीवन को लम्बी आयु तक ले जाने में हमारी खुद की अहं भूमिका होती है। आज आधुनिक जीवन में व्यक्ति व्यस्त है, स्वास्थ्य की ओर से लापरवाह हो गया है, उसे फुर्सत ही नहीं है, कि वह स्वास्थ्य की कद्र करे, क्योंकि हमारा जीवन आज अर्थ में लिपट गया है। व्यक्ति का सारा समय जैसे-तैसे अर्थ कमाने में ही समाप्त हो जाता है, उसे अपनी व्यस्त दिनचर्या में शांति पूर्वक बैठकर अपने बारे में विचार करने का समय ही नहीं है, उसके सिर पर चिन्ता का बोझ लदा ही रहता है, जिंदगी उलझन एवं परेशानियों से भरी हुई रहती है, फलतः स्वास्थ्य का स्तर गिर जाता है और एक व्यक्ति जीते-जागते मुर्दे के भांति अपने शरीर के बोझ को ढोता रहता है।

आज व्यक्ति रोग-शोक व दुःख से व्यथित है। रोग दो प्रकार का होता है-

1. शारीरिक, 2. मानसिक।

जब रोग होता है, तो उससे दुःख होता है, दुःख के भी कई प्रकार हैं, जैसे शारीरिक दुःख, यह शरीर को दुःख पहुंचाता है, यह जन्म-जात है, मूल में अर्थात् जन्म से ही लंगड़े, लूले, अंधे वगैरह। चिड़चिड़ापन, चिन्ता, क्रोध, डर से मानसिक दुःख हैं। मानसिक रोग शारीरिक रोग से ज्यादा दुःखदायी है। इसके अतिरिक्त एक दुःख 'उपाधि दुःख' भी है, जिसका सामना व्यक्ति को करना पड़ता है, जैसे-प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, महामारी, भूकम्प, एक्सीडेंट इत्यादि। व्यक्ति के शरीर के अन्दर दो
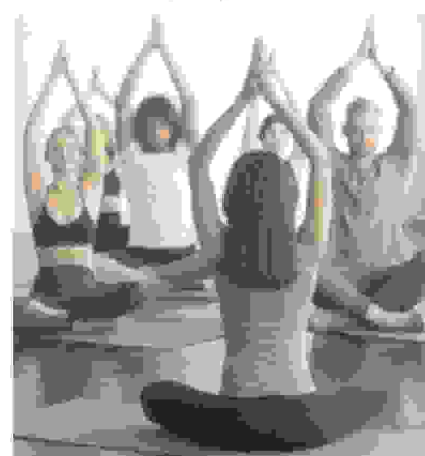
स्त्री व पुरुष तो एक कर्म-बन्धन में आते हैं, जो नेकी व बदी कर्मों के अनुसार अच्छे व बुरे हैं। मनुष्य को बुरे कर्मों से बचना चाहिये, परन्तु कर्मों से बचना कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि हमारा यह जो शरीर है, पांच तत्वों से बना हुआ है और हर एक तत्व हमें अपने गुण व अवगुण की ओर आकर्षित करता है, जिसका नतीजा यह होता है, कि हम कर्मों के चक्र में फंस जाते हैं और हमारे इस स्थूल शरीर को इस स्थूल संसार के कारोबार, व्यवहार, धर्माचरण आदि कर्म करना ही पड़ता है। जो कर्म हम बार-बार करते हैं, वही कर्म-बंधन का कारण होता है, इसे ही संस्कार कहते हैं।

ताकतें हैं, इन्सट्रक्ट (निर्माण) और दूसरा डिस-इन्सट्रक्ट (सत्यनाश)।

कुण्डलिनी जागरण से भी रोगों पर काबू पाना सहज होता है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण में प्रथम 'योग' का आधार लेना होता है।

योग शरीर के अन्दर जो चेतना शक्ति है, उसे जाग्रत करने का सहज व्यायाम है, योग को साधना भी कहा जाता है। योग से स्वर्ग की प्राप्ति भी की जा सकती है। योग के माध्यम से बहुत सारे जीर्ण एवं कठिन रोगों को भी समाप्त किया जा सकता है। यह प्राकृतिक है और इसमें सर्व प्राकृतिक गुणकारी तत्व समाहित हैं।

योग का मार्ग मेहनत का मार्ग है। मार्ग एक है, बताने वाला भी एक है, जिसे सद्गुरु कहा जाता है। सद्गुरु के साथ चलने वाले अनेक हैं, परन्तु मार्ग से भटकाने वाले भी अनेक हैं। इसलिये खुद का विश्वास जरूरी है और सद्गुरु है तभी मंजिल की प्राप्ति होगी।

कई लोग किसी कार्य को करने में सफलता नहीं मिलने पर निराश व उदास हो जाते हैं और अपनी हार मान लेते हैं और प्रयास जिसे पुरुषार्थ कहा जाता है, उसे भूल जाते हैं, यही बात असफलता का कारण बनती है। मनुष्य जीवन सम्पन्नता से भरा हुआ है, मात्र उस सम्पन्नता को योग के द्वारा उभारना है। योग चित्त वृत्ति को शुद्ध करने का महत्वपूर्ण साधन है। यदि इस अमूल्य हीरे जैसे जीवन की कद्र है, तो योग पद्धति को अपनाकर हम जीवन में नवीन उपलब्धियों को प्राप्त कर सम्पन्नता को हासिल कर लेंगे।

योग के माध्यम से व्यक्ति देवी-देवताओं से सम्पर्क स्थापित कर सकता है। योग की साधना ब्रह्मचर्य पर टिकी हुई है। योग से शक्तियां प्राप्त होती हैं, जिससे योगी का मन और शरीर पवित्र होता जाता है, योग से हमारे व्यवहार में मृदुपन, स्वभाव से निर्मलता आती है तथा कर्मेन्द्रियां शीतल एवं शांत रहती है। मन, वाणी में निष्कपटता एवं वृत्ति में निश्छलता आती है।

योग साधना के लिए घर-बार छोड़कर जंगल या पहाड़ में जाना नहीं पड़ता, यह कार्य घर बैठे गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए किया जा सकता है। हम अपने कारोबार व्यापार, नौकरी, धंधा आदि के कार्य करते हुए एवं अपने परिवार तथा समाज में रहते हुए योग को कर सकते हैं।

योग स्त्री व पुरुष दोनों के लिये सुलभ एवं सहज है क्योंकि स्त्री अपनी नियति के अनुसार चलेगी और पुरुष अपने नियति के अनुसार चलेगा। यह बात नहीं है कि योग पुरुष ही करे और स्त्री नहीं, यह दोनों पर समान रूप से लागू होता है।

स्त्री व पुरुष तो एक कर्म-बन्धन में आते हैं, जो नेकी व बदी कर्मों के अनुसार अच्छे व बुरे हैं। मनुष्य को बुरे कर्मों से बचना चाहिये, परन्तु कर्मों से बचना कोई आसान काम नहीं है, क्योंकि हमारा यह जो शरीर है, पांच तत्वों से बना हुआ है और हर एक तत्व हमें अपने गुण व अवगुण की ओर आकर्षित करता है, जिसका नतीजा यह होता है, कि हम कर्मों के चक्र में फंस जाते हैं और हमारे इस स्थूल शरीर को इस स्थूल संसार के कारोबार, व्यवहार, धर्माचरण आदि कर्म करना ही पड़ता है। जो कर्म हम बार-बार करते हैं, वही कर्म-बंधन का कारण होता है, इसे ही संस्कार कहते हैं।

ये संस्कार इतने गहरे हो जाते हैं, कि पुनर्जन्म में भी उसके साथ हो जाते हैं और प्रारब्ध के रूप में उस कर्म को भोगना पड़ता है, हमारे वर्तमान और भविष्य एक दूसरे से ऐसे गुथे हुए हैं, जिसे अलग नहीं किया जा सकता। प्रश्न उठता है, उसे कौन सा कर्म करना चाहिए?

शादी होती है, स्त्री-पुरुष एक सूत्र में बंधते हैं। अब यहां पर 'काम' को प्राथमिकता प्राप्त है। काम वास्तव में आगे बढ़ने एवं ऊंचा उठने में मदद और आकर्षण पैदा करता है और यही इस संसार की आकर्षण शक्ति है। काम और कामवासना में भेद है। कामवासना में व्यक्ति का पतन होता है, आज के वैज्ञानिक कामवासना को भले ही शरीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मानते हों, यह भी ठीक है, परन्तु योग की दृष्टि में आवश्यकतानुसार ही आवश्यक है।
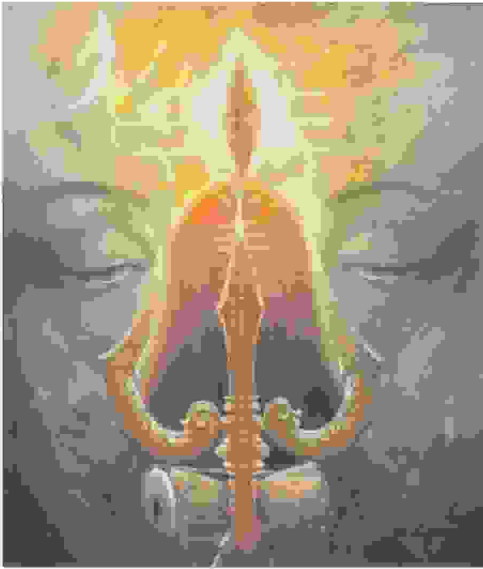
आज के संसार में हम अपने को बुद्धिमान समझते हैं। मनुष्य चन्द्रमा तक पहुंच चुका, वह वहां भी प्लॉट खरीदना चाहता है, परन्तु अशान्त ही है। उसका मन बेलगाम घोड़े की तरह दौड़ रहा है। अशान्ति के कारण शारीरिक व्याधियां भी अपनी जड़ें जमाती हैं, कई बीमारियां तो लाख दवा करने पर भी नहीं मिटती हैं।

यदि कोई बीमारी इलाज एवं दवाई से नहीं ठीक होती है, तो वह योग विधि एवं कुछ आसनों को अपनाने से ठीक होने लगती हैं, ऐसा प्रायः देखा गया है।

योग का विधान संयम-नियम के अंतर्गत है, जैन धर्म में संयम-नियम के बारे में जो उल्लेख किया गया है, उसका अभिप्राय योग एवं ब्रह्मचर्य से ही संबंधित है, ताकि बुरे कर्मों का त्याग हो सके, क्योंकि बीमारी बुरे कर्मों के कारण होती है।

पतंजलि ऋषि ने भी योग शास्त्र में इसका वर्णन किया है जो हमारे दैनिक जीवन के लिए लाभप्रद है। समान्य गृहस्थ के लिए भी यह उपयोगी है-ताकि वे अपनी शक्तियों एवं क्षमताओं का सदुपयोग कर श्रेष्ठ कार्य सम्पादन कर सके। पर स्त्री की ओर बुरे भाव से देखना निम्न श्रेणी का काम है, इससे शील भंग होता है। यही नियम स्त्री पर भी लागू होता है।

भोग से रोग होता है और योग से व्यक्ति निरोगी होता है। योग हमारे जीवन में प्रकाश का काम करता है। जीवन को रसमय एवं सुखमय बनाता है। इससे जीवन संयमित बनता है और संयमित जीवन रोगों को मिटाने में सहायता करता है।

सामान्य व्यक्ति अपने देह तत्व अर्थात् पंच तत्व के अन्तर्गत जन्म लेता है और उसी में मर जाता है। इस स्थूल शरीर से परे सूक्ष्म अशरीरी अर्थात् आत्म स्वरूप में अनुभूति करने का जो सुखद आनन्द प्राप्त होने की स्थिति से वंचित रह जाता है, वह तो योग से ही सम्भव होता है। योगी को तो भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालों की बातें मालूम हो जाती हैं, उसे वह किताब की तरह पढ़ लेता है। योग व्यक्ति के 'स्व' की साधना है, योग की प्रत्येक साधना में हमारा शरीर ही आधार है। योग के माध्यम से हम अपने को कहीं भी स्थापित कर सकते हैं, हम जो चाहें प्राप्त कर सकते हैं, स्वास्थ्य, धन, यश, मान, बड़ाई इत्यादि। आध्यात्मिक स्थिति में स्थित होने से सब कुछ सकारात्मक हो जाता है, नकारात्मक तो तब होता है जब अहं भाव (ईगो) आता है, दुःख तो तब होता है जब हम अपनी स्थिति को सार्थक नहीं बना पाते हैं या साधनाओं में सिद्धियां प्राप्त नहीं कर पाते हैं, ऐसी स्थिति में योग कारगर सिद्ध होता है।

आज के संसार में हम अपने को बुद्धिमान समझते हैं। मनुष्य चन्द्रमा तक पहुंच चुका, वह वहां भी प्लॉट खरीदना चाहता है, परन्तु अशान्त ही है। उसका मन बेलगाम घोड़े की तरह दौड़ रहा है। अशान्ति के कारण शारीरिक व्याधियां भी अपनी जड़ें जमाती हैं, कई बीमारियां तो लाख दवा करने पर भी नहीं मिटती हैं।

यदि कोई बीमारी इलाज एवं दवाई से नहीं ठीक होती है, तो वह योग विधि एवं कुछ आसनों को अपनाने से ठीक होने लगती हैं, ऐसा प्रायः देखा गया है।

योग आप का मददगार है और संयम का रास्ता दिखाता है। योग से काम पर विजय पाई जा सकती है, योग से बुद्धि का विकास होता है, योग चिड़िचिड़ापन एवं क्रोध को समाप्त करने में रामबाण दवा है।

योग से चरित्र का निर्माण होता है, इसके द्वारा हम अपने चरित्र में सुधार कर सकते हैं और साथ ही हमारा समाज जो अवनति की ओर जा रहा है, उसका उत्थान किया जा सकता है।

योग से अनेक व्यसनों पर भी काबू पाया जा सकता है। योग से जीवन में पूर्णता भी प्राप्त की जा सकती है।

योग समृद्धिशाली बनने का एक विज्ञान है, जिससे व्यक्ति ऊंचाई के शिखर पर पहुंच जाता है।

गीता के सारभूत तथ्य

गीता जयंती पर विशेष
25.12.2020

सच पूछिये तो गीता साक्षात् जगन्माता का स्वरूप ही हैं।

परम वात्सल्यमयी माँ के समान वे एक पुत्र से दूसरे पुत्र में भेद कर ही नहीं सकतीं,

वे सबको समान रूप से आश्रय देती हैं।

आज संसार के जितने भी अवशिष्ट धर्म हैं, वे सभी तत्त्व द्रष्टा ऋषियों के द्वारा संसार के विकास में समय-समय पर हुए दिव्य अनुभवों के ही परिणाम हैं। उन महापुरुषों के वे अनुभव धर्मशास्त्रों में ज्यों-के-त्यों आलेखित हैं - वे धर्मशास्त्र अनेकानेक धर्मों के असंख्यों अनुयायियों के लिये प्रमुख आधार ही नहीं हैं, उनके आत्मबल और उत्कट उत्साह के अक्षय स्रोत भी हैं। भगवद्गीता यद्यपि स्मृति ही है, श्रुति या वेद नहीं, तथापि उसका सम्मान हिन्दू सनातनधर्मी पंचम वेद के समान ही करते हैं। इसका कारण यह है कि गीता में वे ही सिद्धांत और हिन्दुओं के वे ही सारमत भरे हुए हैं, जिनके दर्शन हमें वेदों में होते हैं।

गीता हिन्दुओं का एक अतिशय प्रामाणिक ग्रंथ है। यह प्रस्थानत्रयी - तीन प्रतिष्ठित ग्रंथों में से एक है। शेष दो उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र हैं, जो हिन्दुओं के सभी दार्शनिक सम्प्रदायों को सर्वमान्य हैं।

हिन्दुओं के किसी अन्य धर्म ग्रंथ में धर्म का इतना व्यापक, विशद और प्रशस्त दृश्य हमें नहीं दिखायी देता, न अन्य किसी ग्रंथ में दर्शन और काव्य का इतना सुंदर, चमत्कारपूर्ण और मनोहर समन्वय ही देख पड़ता है। इसीलिये कोई आश्चर्य नहीं कि इसी गीता में वे सरल से सरल और सुंदर से सुंदर वाक्य हैं, जिनमें उच्चरित उच्च आचरण का दार्शनिक तत्त्व भरा हुआ है, जिनमें इतना अद्भुत आकर्षण है कि वे सहृदय पाठकों को आप ही अपनी ओर खींच लेते हैं, जिनके वशीभूत होकर साधक का व्यक्तित्व एक अनोखे मनोमोहक साँचे में ढल पड़ता है और वह अर्जुन के आदर्श का अनुसरण कर चलता है; क्योंकि गीता के अर्जुन मानव सुलभ त्रुटियों और अपूर्णताओं से युक्त (किन्तु उन्हें दूर करने के लिये प्रयत्नशील) जीव मात्र के प्रतिनिधि हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दुओं की इस गीता में परम्परागत सभी मान्यताओं और आदर्शों का तथा जिन्हें आजकल लोग रूढ़ि कहते हैं उन्हें भी यथोचित सम्मान दिया गया है और उनका यथातथ्य निरूपण किया गया है, जिसके कारण उसका मूल्य अत्यधिक बढ़ गया है तथा साथ ही उसे सनातन धर्मानुयायी सभी वर्ग के लोगों की सच्ची प्रशंसा और श्रद्धा प्राप्त हुई है; किन्तु साथ ही संकीर्ण साम्प्रदायिकता और तज्जन्य आसुरी दोष-हठधर्मी, प्राचीनपंथी और कट्टरता-गीता में बहिष्कृत करके निकाल दिये गये हैं और उनके स्थान पर धार्मिक सामंजस्य, सहिष्णुता तथा व्यापक बुद्धि जैसे दैवी गुणों का सन्निवेश किया गया है, जिस कारण उसके प्रति सबकी श्रद्धा भक्ति होती है और सभी उसका सच्चे हृदय से पूजन अर्चन करते हैं। जिससे प्रत्येक व्यक्ति ईप्सित सुख शांति और संतोष प्राप्त करता है। इसीलिये गीता में कहा भी है -
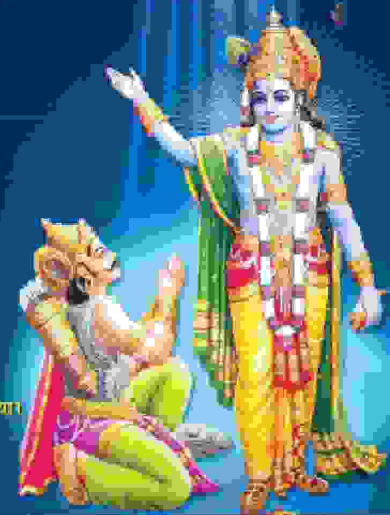
ये यथा माँ प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भाजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।।

(4/11)

'जिस किसी प्रकार मनुष्य मेरा भजन-पूजन करते हैं, मैं उसी रास्ते से उनकी मनोऽभिलाषा पूरी करता हूँ।'

यो यो यां यां तनुभक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विद्धाम्यहम्।।

'श्रद्धापूर्वक भक्त जिस-जिस रूप की अर्चना करना चाहता है, मैं उसी रूप में उसकी श्रद्धा अचल कर देता हूँ।'

धर्म दुर्बल भावुकों के प्रयोजन की वस्तु नहीं है, यह उनके लिये है जिनकी 'हड्डियाँ लोहे की और सीना फौलाद का' हो; क्योंकि उन्हीं का मस्तिष्क विशाल और बुद्धि ओजस्विनी हो सकती है। गीता आलसी व्यक्ति को अकर्मणयता के दलदल से उठाकर कर्मण्यता के शिखर पर ले जाती है, उसे उसकी आत्मा की अमरता का बोध करा देती है। गीता का संगीत सुनकर श्रोता मौन होकर निर्जीव सा बैठा नहीं रह सकता। गीता भगवान् का गीत, भगवद्गीता है; उसमें यह सामर्थ्य होना ही चाहिये। वह शक्ति और पौरुष की अक्षय्य निधि है, अतः उसमें भगवान श्रीकृष्ण का अर्जुन के प्रति रण के लिये सज्जित हो जाने का यह आदेश है -

क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप।।

'हे पृथा के पुत्र अर्जुन! क्लीब (नपंसुक) मत बनो, यह तुम्हारे योग्य नहीं है। हृदय की तुच्छ दुर्बलता को छोड़ो और हे शत्रु को तपाने वाले! उठो!'

महायुद्ध के पूर्व कुरुक्षेत्र की रणभूमि में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो प्रोत्साहन भरे, विचारोत्तेजक उपदेश दिये थे, वहीं गीता का वर्ण्य विषय है। इतना तो प्रकट ही है कि अर्जुन नर के और श्रीकृष्ण नारायण के प्रतीक ही हैं (नारायण, साकार और निराकार) और कुरुक्षेत्र वास्तव में कर्मक्षेत्र है जो दूसरे शब्दों में धर्मक्षेत्र भी कहा गया है जहाँ सत्य के सच्चे अन्वेषक धर्म का बीज बोते हैं और समय पर उसका फल भी प्राप्त करते हैं।

जहाँ तक शिक्षाओं का संबंध है, गीता बहुत ही सुंदर तथा सारग्राही रूप में वेदों का ही अनुसरण करती है। गीता की शिक्षाएँ तीन मुख्य भागों में विभक्त और संगृहीत हैं। वे विभाग हैं कर्म, उपासना और ज्ञान के, जिनका वास्तविक लक्ष्य मनुष्य की चेतना, भावना और इच्छाशक्तियों का पूर्ण विकास करके उसे मोक्ष या परमपद प्राप्त करा देना है। हमारे जीवन के सभी पहलुओं की समुचित योग्यता ही हमें 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का पूर्ण साक्षात्कार करा सकेगी। गीता का स्पष्ट मत है कि इनमें से किसी भी पक्ष की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन सभी पक्षों की पूर्णता से ही एकीभूत दिव्य जीवन का आविर्भाव होता है। ईश्वर स्वयं सत्, चित् और आनन्दस्वरूप है। सत्ता, ज्ञान और आनन्द का पुंजरूप एक ही ब्रह्म ज्ञानार्थियों के लिये स्वच्छ और चमत्कारी प्रकाश के रूप में प्रकट होता है - मध्याह्न के सूर्य जैसा निर्मल और तिमिरलेशरहित। जब श्रीकृष्ण से पूछा जाता है कि किस विशेष पथ का अनुसरण किया जाए तब वे यह स्पष्ट उत्तर देते हैं कि इस प्रश्न को लेकर चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि रास्ते अंत में सब एक ही स्थान पर पहुँचते हैं। यद्यपि आरंभ में उनमें अंतर दिखायी देता है; बीच में वे एक-दूसरे को काटते भी दीखते हैं, किन्तु अंत में वे एक में ही मिल जाते हैं।

इसके अतिरिक्त महत्त्व की दूसरी बात यह है कि सर्वप्रथम गीता में ही यह घोषणा की गयी है कि जब कभी अनाचार, अन्याय और अधर्म के राक्षस मनुष्य के धार्मिक और सांस्कृति जीवन रूपी दुर्ग पर आक्रमण कर बैठते हैं तब भगवान अपनी प्यारी मानव संतान के प्रति अपार प्रेम और दया से द्रवित हो वैकुण्ठ का राज्य छोड़कर आते हैं और मनुष्यों के बीच मनुष्य की भांति ही रहकर संसार की सभ्यता और संस्कृति की रक्षा और प्रतिष्ठा करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण इसीलिये कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में घोषणा करते हैं -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

'हे भरतपुत्र अर्जुन! जब-जब धर्म की अवनति होती है और जब-जब

अधर्म का अभ्युत्थान होता है, तब-तब मैं शरीर धारण कर प्रकट होता हूँ। साधुओं के त्राण के लिये और दुराचारियों के विनाश के लिये, तथा धर्म की स्थापना के हेतु मैं युगों युगों में जन्म धारण करता हूँ।'

बिना किसी विरोध की आशंका के यह कहा जा सकता है कि भारतवर्ष को छोड़कर संसार में कोई दूसरा देश ऐसा नहीं है, जिसमें निरे अनीश्वरवादी और प्रत्यक्षवादी चार्वाक से लेकर अद्वैतियों के सम्राट श्रीशंकराचार्य तक अनेक दार्शनिकों ने अपने-अपने सिद्धांतों का दृश्य नाट्य इतनी विविधतापूर्वक दिखाया हो और न गीता के समान ऐसा कोई दूसरा हिन्दू ग्रंथ है जिसकी टीकाएँ और भाष्य इतनी अधिक संख्या में लिखे गये हों। एक विद्वान पुरुष ने कहा था कि उत्तराखण्ड (उत्तर भारत) में उन्हें एक ऐसे संन्यासी से भेंट हुई है जो गीता के कम-से-कम तीस भाष्यों का अध्ययन कर चुके हैं और जिन्होंने उनमें से प्रत्येक भाष्य में भिन्न-भिन्न आश्चर्यजनक अर्थों को पाया है। इसमें तो आश्चर्य ही क्या है कि श्रीशंकराचार्य, श्रीरामानुजाचार्य और श्रीमध्वाचार्य जैसे महान भाष्यकारों ने अपनी-अपनी अप्रतिम शैली से अद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैत और द्वैत सिद्धांतों के अनुसार अर्थ किये हैं। गीता वह धातु है जिसे कोई भी दार्शनिक अपने मन की निहाई पर रखकर, बुद्धि के हथौड़े से कूट-पीटकर और मस्तिष्क के साँचे में डालकर मनचाही मूर्ति तैयार कर सकता है। गीता के अनेकानेक भाष्यों की रचनाका चाहे जो प्रयोजन रहा हो, यह तो सभी स्वीकार करते हैं कि हिन्दुओं के इस विस्मयजनक ग्रंथ में भारतीय दार्शनिक विचारपरम्परा की उत्पत्ति और विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का मनोहर प्रदर्शन है। द्वैत, विशिष्टाद्वैत और अद्वैत के सिद्धांत अपने सारे वैचित्र्य के साथ यहाँ देख पड़ते हैं, यथा -

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋकसाम यजुरेव च।।
(गीता 9/17)

'मैं इस जगत का पिता, माता, इसे धारण करने वाला धाता और पितामह हूँ; मैं वेद्य हूँ, पवित्र ओंकार हूँ, ऋग, साम और यजुर्वेद हूँ।'

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति।
(गीता 15/7)

'मेरा ही सनातन अंश जीवलोक में जीव रूप में स्थित है। वही जीव त्रिगुणमयी प्रकृति में स्थित मन और पाँचों इन्द्रियों को आकर्षित करता है।' (विशिष्टाद्वैत)

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
(गीता 13/16)

'यह अविभक्त होता हुआ भी भूतों में विभक्त हुआ-सा स्थित है।' (अद्वैत)

पश्चिमी लोगों के अनुसार धार्मिक जीवन और आचारात्मक जीवन में चाहे जितना अधिक अंतर हो, भारतवर्ष में तो इन दोनों में कोई भेद कर ही नहीं सकता। हिन्दू धर्मशास्त्र के अनुसार आचार तो धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। उसके बिना तो धार्मिक जीवन शब्द ही सार्थक नहीं होता, यही नहीं आचार का अभाव और धर्म का भाव ये दोनों नितान्त विरोधी कल्पनाएँ हो जाती हैं। जैसे कोई सुगंधयुक्त, किन्तु चींटियों या कीटों द्वारा काटा हुआ पुष्प भगवान को अर्पण नहीं किया जा सकता, वैसे ही जो शरीर या मन विषय वासना, तृष्णा और भोगेच्छा से कलुषित है, वह ईश्वर द्वारा स्वीकृत नहीं हो सकता। साथ ही जिस व्यक्ति में इन्द्रियों का संयम नहीं है, वह विवेक-बुद्धि को खो देता है और उसकी जीवन नौका देर-सबेर अवश्य टकराती है। इसलिये भगवान श्रीकृष्ण साधक को भोग विलासपूर्ण जीवन के अत्यंत भीषण परिणाम के प्रति सचेत करते हैं और जैसे भी बने वासनाओं पर संयम का आदेश देते हैं -

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।।
(गीता 2/67-68)

'विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों में से जिस इन्द्रिय के साथ मन रहता है, वह एक ही इन्द्रिय पुरुष की बुद्धि को हर लेती है - जैसे जल में वायु नाव को हर लेती है। इसलिये हे महाबाहो! जिस पुरुष की इन्द्रियाँ विषयों से पूर्णत: खींची हुई हैं, उसी की बुद्धि स्थिर होती है।'

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने अपने 'गीता रहस्य' में गीता को 'कर्मयोग' का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ कहा है तथा अन्य मनीषियों ने उसमें ज्ञान या विद्या के अपार समुद्र तथा भक्ति की अक्षय निधि का दर्शन किया है। विद्वान पुरुषों में इस विषय को लेकर चाहे जो मतभेद हो, यह गीता के सभी पाठकों को प्रतीत होता है कि श्रीभगवान का गीत कर्म और केवल कर्म के आदेशों से परिपूर्ण है। सच पूछिये तो गीता की मुख्य शिक्षा स्वकर्म के द्वारा ही ईश्वर साक्षात्कार की है। मनुष्य अपने कर्मों का ही समष्टि रूप है। उसका वर्तमान जन्म पूर्व कर्मों के द्वारा निरूपित हुआ है और भविष्य जीवन भी वर्तमान कर्मों से निर्णीत होगा। इस प्रकार यह जन्म और मरण का चक्र तब तक चलता रहेगा जब तक सारा कर्मभोग समाप्त नहीं हो जाएगा अथवा जब तक ज्ञान की अग्नि में पड़कर सारे कर्म भस्म नहीं हो जाएंगे; किन्तु ज्ञान ऐसी वस्तु नहीं है जो क्षणभर में प्राप्त हो जाए। वह कोई जादू, विद्या या मोहन मंत्र नहीं है, उसके लिये कठोर और सतत साधना की आवश्यकता है। न भक्ति ही कोई ऐसा पदार्थ है जो किसी देवी-देवता की खुशामद से प्राप्त हो सके। उसके लिये हृदय की शुद्धि आवश्यक है और निर्मल प्रेम और आत्मशुद्धि के मार्ग में जो-जो बाधाएं हैं, उनका नष्ट हो जाना आवश्यक है। इसलिये मनुष्य को प्रत्येक प्रकार से अपने कर्म का ही आश्रय लेना होगा और कर्म के फल की आकांक्षा छोड़कर अपनी जीवन नौका को धैर्य और दृढ़तापूर्वक कर्ममार्ग द्वारा ही मुक्ति की ओर ले जाना पड़ेगा। कर्म से बंधन की सृष्टि तभी तक होती है, जब तक उसके फल की आकांक्षा साथ लगी हुई है। इसलिये भगवान श्रीकृष्ण आदेश करते हैं कि कर्मयोगी अपने में निष्कामत्व लाने की चेष्टा करे -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।
(गीता 2/47)

तुम्हारा अधिकार कर्म करने भर में है, कर्म के फल में नहीं। तुम कर्मफल प्राप्त करने में हेतु मत बनो (कर्म बंधन मत पड़ो) और न अकर्मण्यता का ही संग करो (अकर्मण्य न बनो)।

निश्चय ही अर्जुन के प्रति भगवान श्रीकृष्ण के उपदेशों का मर्म यही है। हाँ, यदि उसे निष्काम कर्म का मार्ग अत्यंत कठिन जान पड़े तो वह यह करे कि अपने सम्पूर्ण भावों और कर्मों को पूर्णरूप से भगवान के चरणों में अर्पण कर दे। इस संबंध में भगवान की निम्नलिखित शिक्षा और आदेश है -

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।
(गीता 9/27)

जो काम तुम करते हो, जो खाते हो, जो हवन करते हो, जो दान देते हो, जो तपस्या करते हो, वह सब-का-सब मेरे अर्पण कर दो। श्रीभगवान मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ सुहृद् हैं, वे उसकी सारी त्रुटियों को जानते हैं (अंतर्यामी है); इसलिये वे अपनी मानव संतान को सदैव यही उपदेश देते हैं कि आलस्य प्रमाद और छल-छद्म आदि को अपने हृदय प्रासाद के अंदर आने ही न दो। आसक्तिपूर्ण कर्म भी प्रत्येक अवस्था में अकर्मण्यता से अच्छा है - वह अकर्मण्यता जो वासना और आसक्ति से युक्त होकर बदले में नये बंधन उत्पन्न करती है। इसीलिये गीता में कहा भी गया है -

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।।

कर्मेन्द्रियों को रोक कर (अकर्मण्य होकर) जो मनुष्य मन से विषयों का

स्मरण करता रहता है, वह मूर्ख है और मिथ्याचारी कहा जाता है; किन्तु जो नि:संगबुद्धि से इन्द्रियों को अपने वश में करके उन्हें कर्म में तत्पर करता है, वही श्रेष्ठ पुरुष है।

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:।

'नियत कर्म तुम अवश्य करो, क्योंकि कर्म करना अकर्म से सर्वथा श्रेष्ठ है।'

जो विरोधी व्यक्ति हिन्दुओं की प्रत्येक वस्तु को हेय और तुच्छ समझते हैं, उनके विचार चाहे जितने तीखे हों और विज्ञानवेत्ता कहलाने वाले भी चाहे जितनी हृदय हीनता और रूखाई से बर्तें, यह मानना ही होगा कि हिन्दू-धर्मशास्त्र अतिशय व्यावहारिक हैं। हमारे पवित्र धर्म-ग्रंथों का मुख्य उद्देश्य यह है कि वे मनुष्यों की बुद्धि को क्रमश: शिक्षित कर एक-एक श्रेणी ऊपर उठाते हुए सर्वोच्च कोटि तक ले जाए। इसलिये गीता, जो समस्त हिन्दू धर्म ग्रंथों का सारस्वरूप है, यह उपदेश करती है कि साधक अपनी रुचि और स्वभावानुसार ईप्सित मार्ग पर चलते हुए बीच-बीच में आनेवाली असफलताओं और त्रुटियों से हतोत्साह न होकर तब तक आगे बढ़ते रहें जब तक परमतत्त्व की उपलब्धि न हो जाए। परमतत्त्व को प्राप्त करना जीव मात्र का जन्मजात अधिकार है। जिस प्रकार परिमित साधनों से भी पाण्डवों ने कौरवों पर विजय प्राप्त की, उसी प्रकार मनुष्य में जो सदंश है, वह अंतत: असदंश पर विजयी होता ही है - विजयी होकर अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित करता ही है। गीता का मनुष्यों के जीवन पर ऐसा ही उन्नयनकारी प्रभाव पड़ता है। वह उन्हें असीम आशा और साहस प्रदान करती है तथा जीवन की अति घोर असफलताओं में भी उत्साहहीन नहीं होने देती। वह कहती है - 'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' - मरने पर तुम स्वर्ग प्राप्त करोगे और विजयी होकर पृथिवी का उपभोग करोगे। गीता आहत हुए मन के लिये मरहम है, साधक की चिरसंगिनी और उत्साह बढ़ाने वाली पथप्रदर्शिका है। वह वीरों का विजयदण्ड और लंगोटी लपेटे धूनी रमाये पुरुषों के लिये सुख-शांतिप्रद आश्रय है।

जिन्हें गीता पर विश्वास नहीं है, उन पाठकों को उसके पाठ से लाभ होने की बहुत थोड़ी संभावना है। गीता से अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि हमारा एकदम अडिग विश्वास हो - ऐसी श्रद्धा जो नचिकेता को यम की राजधानी में ले गयी, जो हनुमान को समुद्र लँघा सकी और जो प्रह्लाद को नृशंस अत्याचारों के सम्मुख भी परम प्रशांत और अक्षुब्ध रख सकी। वह पुरुष धन्य है जिसे श्रीकृष्ण और उनकी चिरस्मरणीय 'गीता' पर ज्वलन्त विश्वास हो गया है, क्योंकि उसी पुरुष को समय पाकर जीवन के सर्वोच्च ध्येय की प्राप्ति हो सकेगी। श्रीचैतन्य जब दक्षिण भारत का भ्रमण कर रहे थे, श्रीरंगम् में उन्हें एक ऐसा भक्त मिला जो गीताजी का पारायण कर रहा था। उसके पाठ में बहुत-सी अशुद्धियाँ हो रही थीं, किन्तु फिर भी उसके कपोलों पर आनन्दाश्रु टपकते जा रहे थे। श्रीचैतन्यदेव ने पूछा, 'भाई, क्या बात है कि तुम्हारे पाठ में तो अशुद्धियों की भरमार हो रही है, किन्तु तुम्हारे कपोल आंसुओं से भींग रहे हैं।' उसने कहा, 'पूज्यवर, न तो मैं व्याकरण जानता हूँ न छन्द, और न देवभाषा का ही यथेष्ट ज्ञान रखता हूँ, किन्तु जिस क्षण मैं गीता जी की पुस्तक खोलता हूँ उसी क्षण भगवान श्रीकृष्ण अपनी सम्पूर्ण श्री-शोभा और सौन्दर्य के साथ मेरी आँखों के सामने प्रकट हो जाते हैं, इसीसे आनन्दमग्न होकर मेरे आँसू बहने लगते हैं।' वास्तव में यही श्रद्धा और यही भक्ति गीता जी के पाठ की एकमात्र कसौटी होनी चाहिये।

श्रीमद्भगवद्गीता अमृत का वह महान सिन्धु है, जिसकी एक बूँद में भी वह शक्ति है जो मनुष्य को इस क्षण भंगुर संसार का विस्मरण कराकर असीम आनन्द में निमग्न कर सकती है। अत: यह बड़े ही गौरव की बात होगी कि हम गीताजी की एक या एकाधिक शिक्षा को अपने दैनिक जीवन में चरितार्थ कर लें और परिणामस्वरूप अमरता, आनन्द और ज्ञान की अक्षय निधि को प्राप्त हो जाएं।
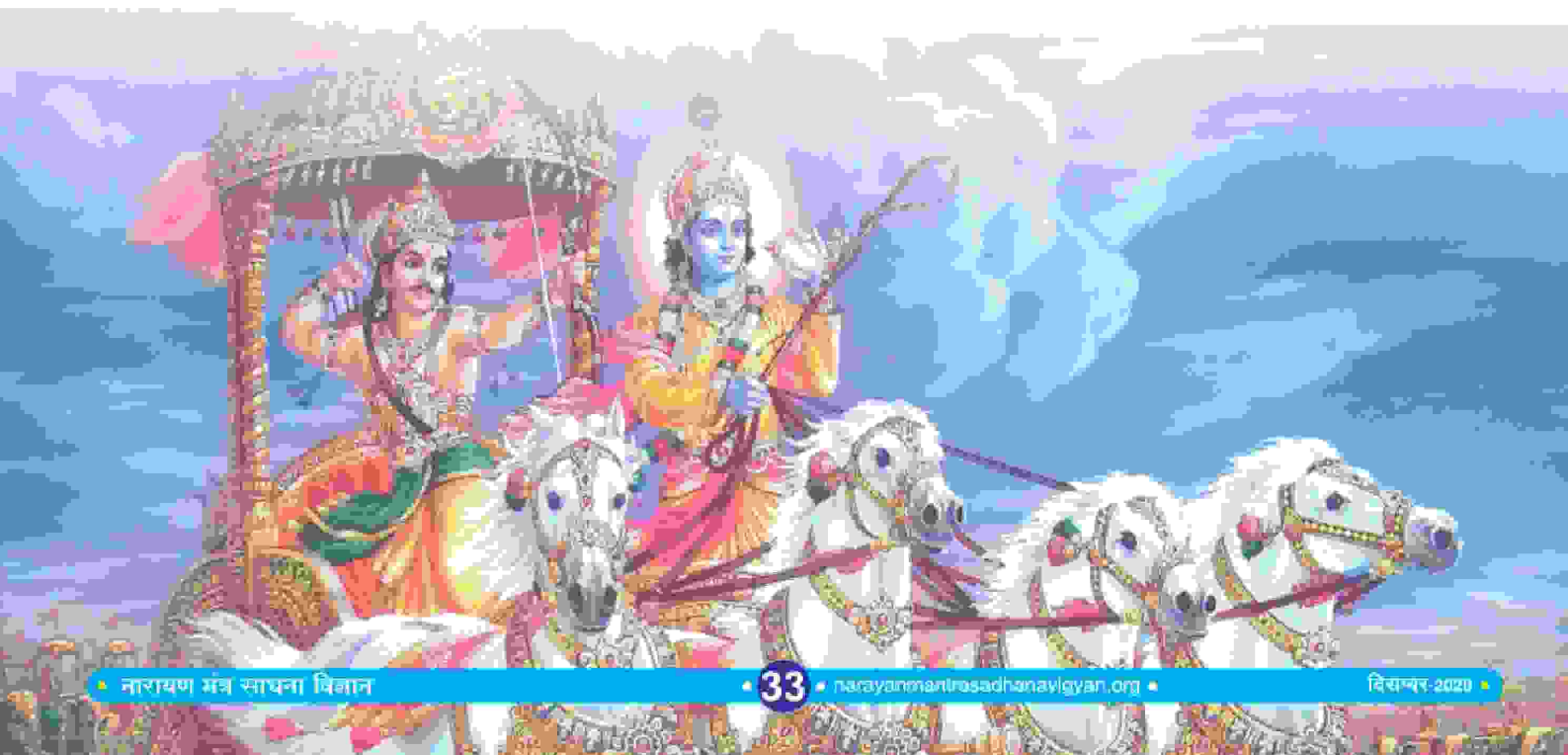
शिष्य धर्म

त्वं विचिंत भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं महितां विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- एक शिष्य गुरु चरणों में ही सभी लोकों के, पावन तीर्थों, पवित्र गंगा, सागर तथा सभी देवी देवताओं का प्रत्यक्ष अनुभव करता है। उसके लिए गुरु चरणों की पूजा आराधना से बढ़कर कोई अन्य साधना नहीं।
- देवी देवताओं से साक्षात्कार गुरु कृपा द्वारा ही संभव है, इसलिए अन्य देवी देवताओं की साधना करने की अपेक्षा एक शिष्य गुरु सेवा तथा गुरु साधना द्वारा गुरु को ही प्रसन्न करने का प्रयत्न करता है।
- शिष्य को यह प्रदर्शन करने की या गुरु को बताने की आवश्यकता नहीं है कि वह कितनी सेवा कर रहा है। गुरु की पैनी दृष्टि तो हर समय शिष्यों पर बनी रहती है और गुरु कहीं भी हो उसे सब ध्यान रहता है कि कौन शिष्य क्या कर रहा है। अगर शिष्य समर्पण भाव से सेवा करता है तो अवश्य ही गुरु के हृदय पटल पर उसका नाम अंकित होता है।
- गुरु सेवा, गुरु में आस्था, गुरु के प्रति समर्पण ये तीन ही माध्यम हैं गुरु के हृदय में उतरने के और जब ऐसा होता है तो गुरु स्वंय अपना सारा ज्ञान शिष्य में उतार देता है। इसलिए शिष्य बिना किसी और बात की चिंता किए निरंतर गुरु में अपनी आस्था दृढ़ करता रहता है।
- शिष्य के लिए गुरु आदेश से बड़ा मंत्र नहीं, गुरु सेवा से बड़ी कोई साधना नहीं तथा गुरु चरणों से बड़ा कोई यंत्र नहीं। यह केवल यह प्रतीक्षा करता रहता है कि कब गुरु उसे आज्ञा दें और कब वह उनकी आज्ञा का पालन करते हुए उनके बताए कार्य को पूरा करे।
- गुरु के हृदय को व्यर्थ छल, आडंबर, धन, दिखावे से नहीं जीता जा सकता। उसको शिष्य से कुछ आकांक्षा ही नहीं। केवल प्रेम के अश्रु ही अगर शिष्य उनके चरणों में अर्पित करता है तो गुरु प्रसन्न हो जाते हैं।
- शिष्य गुरु को एक मात्र साधारण मनुष्य के रूप में नहीं देखता, अपितु एक ऐसे दिव्य व्यक्तित्व के रूप में उनकी पूजा आराधना करता है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा आद्याशक्ति पूर्ण रूप से समाहित है।
- गुरु चरणों में स्वयं को पूर्णत: तल्लीन करके, सदा, गुरुध्यान में खोकर, निरंतर गुरु मंत्र को जप कर तथा सदा गुरु सेवा में तत्पर होकर ही शिष्य उस अद्भुत स्थिति तक पहुंचता है जबकि वह पूर्णत: उनसे एकाकार हो जाता है। वही ब्रह्मानंद की परम स्थिति है और उसी को प्राप्त करना हर शिष्य का धर्म और लक्ष्य होता है।

- गुरु को आप किसी तरह बांध नहीं सकते। केवल प्रेम के द्वारा गुरु को बांधा जा सकता है।
- प्रेम कोई वासना नहीं है वह तो एक उत्फुल्ल सुवास है, एक सुगंध है जो मन एवं आत्मा को आनंद और तृप्ति से सराबोर कर देता है।
- केवल आँखें मूंद कर ध्यान करना या जप करना जीवन की पूर्णता नहीं है। जीवन का आनंद जीवन श्रेष्ठता और पूर्णता, जीवन का सौंदर्य प्रेम में है।
- जीवन की पूर्णता प्रभु के लीलामय स्वरूप से एकाकार होने में है और वह तब हो सकता है जब तुम्हारे अंदर एक प्रेम का अंकुर फूटे, तुम्हारे अंदर एक चिंगारी पैदा हो।
- तुम इष्ट के साक्षात दर्शन कर ही नहीं सकते, तुम शिष्य बन ही नहीं सकते योंकि जिसके हृदय में प्रेम का अंकुर नहीं फूटा, वह साधना क्या करेगा? साधना में सफलता के लिए पहले हृदय को जाग्रत करना पड़ेगा।
- जिस क्षण शिष्य के जीवन में प्रेम की तरंग आती है, आनंद की हिलोर पैदा होती है वह जीवन में निरंतर तीव्रता के साथ अग्रसर होने लगता है योंकि फिर वह लहर, वह तरंग रुकती नहीं है।
- जीवन में सब कुछ प्राप्त हो सकता है। सुख, सौभाग्य और भौतिक सुविधाएं मगर यह सब होने के बाद भी आवश्यक नहीं कि प्रेम प्राप्त हो ही और प्रेम नहीं होगा तो जीवन के ज्ञानश्चेतना, आनंद, मस्ती भी नहीं होगी इसलिए प्रेम ही जीवन की परिपूर्णता है।
- प्रेम और वासना में अंतर है। वासना है प्राप्त करने की क्रिया और प्रेम है सब कुछ दे देने की, न्यौछावर कर देने की क्रिया। वासना एक घृणित भाव है, जबकि प्रेम एक उच्चतम एवं दिव्य भाव है।
- अपने को न्यौछावर कर देने की क्रिया फना कर देने की क्रिया प्रेम है और प्रेम मस्तिष्क से नहीं हृदय से किया जाता है। इसमें तर्क वितर्क का कोई स्थान नहीं।
- समाज ने प्रेम को एक घृणित शब्द बना दिया है। जिसे आप प्रेम समझते हैं, वह वासना है। प्रेम तो हृदय की चेतना है, हृदय की प्रफुल्लता है और जीवन में पूर्ण हो जाने की कला है।
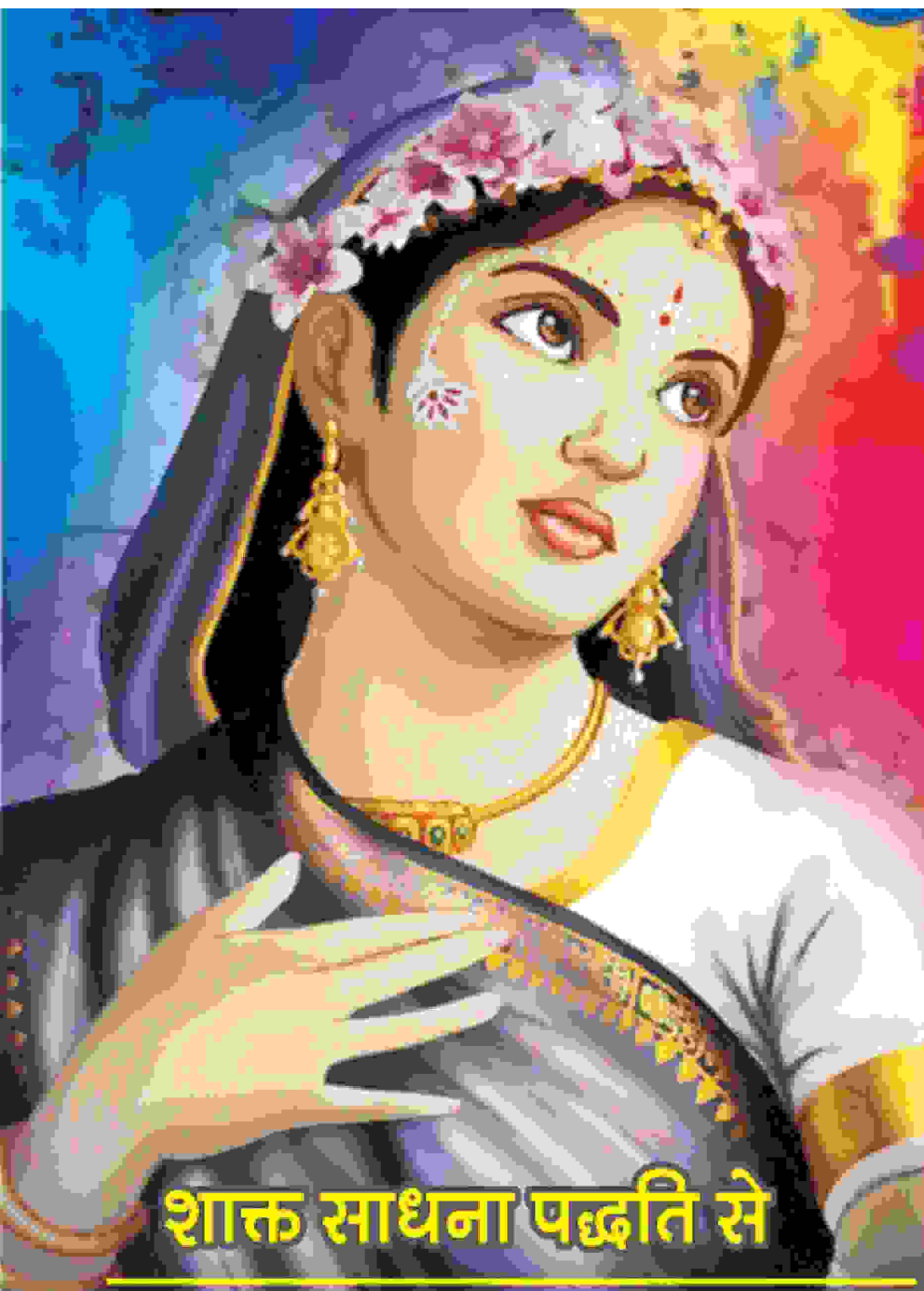
शाक्त साधना पद्धति से

सौन्दर्योपासना सिद्धि

सबको वश में करने वाली अद्वितीय साधना पद्धति

भारत में तीन तरह की साधना पद्धतियां प्रचलित हैं, जिनमें शैव साधना पद्धति, वैष्णव साधना पद्धति और शाक्त साधना पद्धति हैं, इन साधना पद्धतियों में शाक्त साधना पद्धति तुरन्त प्रभाव प्रदान करने वाली और अचूक मानी जाती है। वर्ष का यह महत्वपूर्ण लेख और साधना पद्धति पाठकों और साधकों को देते हुए प्रसन्नता ही रही है कि इस साधना पद्धति से हम किसी भी देवता को अपने अनुकूल बना सकते हैं, साथ ही साथ इस पद्धति से किसी भी पुरुष या स्त्री को भी अपने अनुकूल कर सकते हैं। यह अपने आप में अचूक और तुरन्त प्रभावी उपाय है।

इसके साथ ही साथ यह 'सौन्दर्योपासना सिद्धि प्रयोग' भी कहलाता है, जिसकी वजह से रोग मुक्ति और शरीर की अद्वितीय सौन्दर्य-युक्त बनाने में यह साधना पद्धति अपने आप में अचूक है।

सौन्दर्योपासना सिद्धि के बारे में प्राचीनतम ग्रंथों में तो उल्लेख मिलता ही है। कई स्थानों पर स्पष्ट रूप से वर्णित हुआ है कि यदि साधक किसी देवता की साधना करना चाहता है, या किसी भी देवता को अपने अनुकूल बनाना चाहता है, उसे प्रसन्न करना चाहता है या उसके प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता है, तो साधना प्रारम्भ करने से पूर्व यह सौन्दर्योपासना सिद्धि सम्पन्न कर लेनी चाहिए।

जहां धार्मिक ग्रन्थों में और उपासना ग्रन्थों में इस पद्धति को उपयोगी और महत्वपूर्ण बताया है वहीं तांत्रिक ग्रंथों में भी इस पद्धति को जीवन के लिए आवश्यक और अनुकूल स्पष्ट किया है। स्वयं गुरु गोरखनाथ ने इस सौन्दर्योपासना सिद्धि प्रयोग के बारे में समझाते हुए इसके मुख्यत: छ: लाभ बताये हैं, जो कि उनहोंने अनुभव किये, यरा जिसे प्रत्यक्ष कर उन्होंने स्वीकार किया, कि इस साधना पद्धति से इस प्रकार के लाभ तुरन्त प्राप्त होते हैं।

1. सौन्दर्योपासना सिद्धि से किसी भी देवी-देवता को पूर्णत: अपने अनुकूल बना सकते हैं और उनसे सम्बन्धित सिद्धि प्राप्त करने में यह साधना-पद्धति अपने आप में अचूक और महत्वपूर्ण है।

फिर भले ही वह देवी या देवता क्रूर हो या शान्त हो, चाहे ग्रह हो या दस महाविद्या साधना हो, चाहे भैरव उपासना हो या लक्ष्मी सिद्धि हो, इन सभी में यह प्रयोग तुरन्त फलप्रद होता है।

2. इस साधना से संसार के किसी भी पुरुष या स्त्री को अपने अनुकूल किया जा सकता है। जिससे वह जीवन में हमारे अनुकूल कार्य करे।

यदि कोई रूठा हुआ हो या दूर रहता हो अथवा मतभेद हो गये हो या हमारा अधिकारी हो, अथवा कोई ऐसा व्यक्ति जो हमारा कार्य सम्पन्न नहीं कर रहा हो,

यह सौन्दर्योपासना पद्धति है, यदि शरीर अनाकर्षक, मोटा और भारी हो, अथवा शरीर में सौन्दर्य की कमी हो और जो अपने शरीर को सुन्दर और आकर्षक बनाये रखना चाहते हो - उनके लिए तो यह प्रयोग रामबाण की तरह है, कोई भी पुरुष या स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न कर अपने जीवन में मनोवांछित सुन्दरता प्राप्त कर सकते हैं।

तो उसे अपने अनुकूल बनाने के लिए भी यह प्रयोग अपने आपमें महत्वपूर्ण है।

3. दाम्पत्य जीवन में मधुरता लाने के लिए, पुत्र की उन्नति अथवा पुत्र प्राप्ति के लिए, सौभाग्य प्राप्ति के लिए पति की दीर्घायु के लिए, सुन्दर पति या पत्नी की प्राप्ति के लिए अथवा इच्छानुसार व्यक्ति से विवाह करने के लिए यह प्रयोग अपने आपमें महत्त्वपूर्ण माना गया है।
4. यह प्रयोग रोग निवारण प्रयोग है, इससे किसी भी प्रकार का रोग दूर किया जा सकता है, और व्यक्ति पूर्णत: स्वस्थ, सुन्दर और आकर्षक बन सकता है, सही अर्थों में देखा जाय तो भूत-प्रेत, पिशाच-बाधा अथवा ग्रह-बाधा जैसी समस्याओं का समाधान इस प्रयोग से तुरन्त सम्पन्न होता है और सफलता प्राप्त होती है।
5. मूलत: यह सौन्दर्योपासना पद्धति है, यदि शरीर अनाकर्षक, मोटा और भारी हो, अथवा शरीर में सौन्दर्य की कमी हो और जो अपने शरीर को सुन्दर और आकर्षक बनाये रखना चाहते हो - उनके लिए तो यह प्रयोग रामबाण की तरह है, कोई भी पुरुष या स्त्री इस प्रयोग को सम्पन्न कर अपने जीवन में मनोवांछित सुन्दरता प्राप्त कर सकते हैं।
6. यह लक्ष्मी उपासना प्रयोग माना गया है, इसके माध्यम से लक्ष्मी को पूर्णत: प्रसन्न कर व्यापार में अनुकूलता लायी जा सकती है। प्रमोशन या आर्थिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है, साथ ही साथ इस प्रयोग से शत्रुओं की समाप्ति और मुकदमे में विजय प्राप्त कर सकते हैं।

मेरी राय में आपको इस प्रकार का प्रयोग एक बार अवश्य ही सम्पन्न करना ही चाहिए, क्योंकि इस प्रयोग का प्रभाव अपने आपमें अचूक और तुरन्त होता है।

यह प्रयोग तीन दिन का प्रयोग है और किसी भी शुक्रवार से प्रयोग प्रारम्भ कर रविवार तक इस प्रयोग को सम्पन्न किया जा सकता है। यह प्रयोग दिन को या रात्रि को भी सम्पन्न कर सकते हैं। चाहे साधक किसी भी धर्म का उपासक हो, चाहे वह किसी मत का मानने वाला हो

यह लक्ष्मी उपासना प्रयोग माना गया है, इसके माध्यम से लक्ष्मी को पूर्णत: प्रसन्न कर व्यापार में अनुकूलता लायी जा सकती है। प्रमोशन या आर्थिक उन्नति प्राप्त की जा सकती है, साथ ही साथ इस प्रयोग से शत्रुओं की समाप्ति और मुकदमे में विजय प्राप्त कर सकते हैं।

यह प्रयोग सभी के लिये समान रूप से उपयोगी है।

इस प्रयोग के लिए तीन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जिसमें 1. सौन्दर्योपासना दुर्लभ यंत्र, 2. सौन्दर्य माला, 3. वैजयन्ती सिद्धि गुटिका की आवश्यकता होती है, तांत्रिक ग्रंथों में इसी प्रकार की सामग्री के प्रयोग की सलाह दी गयी है।

इसके लिए शास्त्रों में बताया गया है कि नूतन चन्द्र दर्शन में प्रयोग प्रारम्भ करना चाहिए, यानी अमावस्या के बाद जब नया चांद उगे उस दिन यह प्रयोग प्रारम्भ होना चाहिए। प्रत्येक अमावस्या के बाद द्वितीया को नया चांद उगता है, तदनुसार यह प्रयोग 15.01.21 से 17.01.21 तक सम्पन्न किया जा सकता है, पर ये तीन दिन इस साधना के लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण व सिद्धिदायक माने गये हैं और प्रत्येक साधक को इन तीन दिनों का उपयोग करना चाहिए।

साधक सामान्य रूप से दीपक जलाकर इससे संबंधित मन्त्र जप प्रारम्भ कर सकता है अथवा यदि किसी विशेष देवता की सिद्धि प्राप्त करना चाहे तो उसका चित्र सामने रख कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, उदाहरण के लिए यदि कोई साधक 'लक्ष्मी प्रत्यक्ष सिद्धि' प्राप्त करना चाहे तो अपने सामने लक्ष्मी का चित्र रख कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकता है, इसी प्रकार यदि किसी को अपने अनुकूल करना चाहे तो उसका चित्र सामने रख कर मन्त्र जप हो सकता है।

इसके अलावा रोग मुक्ति आदि कार्यों में मात्र हाथ में जल लेकर साधक यह बोले, कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहता हूं और फिर सामने तेल का दीपक लगा दें और मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें। यह साधना दिन को या रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

तांत्रिक ग्रन्थों में तो यह लिखा हुआ है कि प्रत्येक महीने नवीन चन्द्र दर्शन के अवसर पर इससे संबंधित प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। इस प्रकार 12 महीनों में 12 बार अपने कार्य अनुकूल बना सकते हैं, यह बात निश्चित है कि इस प्रकार के प्रयोग से किसी प्रकार की हानि नहीं होती और पूर्णत: अनुकूलता प्राप्त होती है।

साधना में किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण किये जा सकते हैं, पर पुरुष तो धोती पहिने और स्त्री साधिका साड़ी धारण करें, सिले-सिलाये वस्त्र धारण नहीं किये जा सकते।

इसके बाद किसी थाली में कुंकुम से निम्न प्रकार का यन्त्र बना लें, इसे सौन्दर्योपासना यन्त्र कहते हैं-

सौन्दर्योपासना यंत्र

1	5
3	9

इस यंत्र पर पैकेट में जो यन्त्र प्राप्त हुआ है-वह रख दें, और साथ ही साथ वैजयन्ती सिद्धि गुटिका भी रख दें, फिर सौन्दर्य माला से मन्त्र जप प्रारम्भ करें, नित्य 35 माला मन्त्र जप आवश्यक माना गया है।

सौन्दर्योपासना मन्त्र

॥ ॐ ऐं ऐं सौन्दर्य प्रत्यक्ष वशं सम्मोहय फट् ॥

तीन दिन तक यह मन्त्र जप करें, मन्त्र जप में यदि चित्र हो तो सामने रख कर, उसे देखता हुआ मन्त्र जप सम्पन्न करें। साधना सम्पन्न होने पर इस सामग्री को लाल कपड़े में बांध कर घर में किसी स्थान पर रख दें।

साधना सामग्री-540

सम्मोहन साधना

सर्वप्रभावकारी सम्मोहन, वशीकरण एवं अनुकूलता हेतु

आज के युग में वशीकरण एक अनिवार्य साधना बन गई है, क्योंकि चारों तरफ नफरत, द्वेष और धोखा बढ़ गया है, प्रेमी-प्रेमिका को धोखा दे देता है, भाई-भाई से दुश्मनी कर लेता है तथा अकारण ही शत्रु पैदा होते रहते हैं, अधिकारी वर्ग नाराज रहता है, हमारे पास काम करने वाले विश्वास पात्र नहीं रहते हैं, पार्टनर की तरफ से धोखा होने की संभावना रहती है, इन सभी स्थितियों में वशीकरण प्रयोग अपने आपमें एक आश्चर्यजनक प्रयोग है, यह प्रयोग अभी तक गोपनीय रहा है, पर इस प्रयोग से कठोर हृदय को भी अपने अनुकूल किया जा सकता है और मनोनुकूल कार्य कराये जा सकते हैं।

वशीकरण का कई लोग गलत अभिप्राय समझते हैं, यह तो मात्र किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने की साधना है। अपने प्रेम से, अपनी भक्ति से, सेवा से हम अपने इष्ट को रिझाते हैं, तो वह भी तो एक प्रकार का वशीकरण ही है, जब इष्ट या गुरु विवश होकर वरदान देने को आतुर हो उठते हैं।

इस साधना को स्त्री या पुरुष कोई भी सम्पन्न कर सकता है। साधना में सफलता हेतु यह आवश्यक है, कि हृदय में किसी प्रकार का कोई भी दूषित अथवा घृणित उद्देश्य लेकर साधना में प्रयुक्त न हुआ जाए।

साधना विधान

इस साधना को 27.12.2020 से या किसी भी माह के शुक्रवार से प्रारंभ किया जा सकता है। यह रात्रिकालीन साधना है। स्नान कर, सफेद धोती धारण कर लें और सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठ जायें। सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर 'वशीकरण ताबीज' रख दें, उसके सामने 'रतनजोत' रख दें। फिर यंत्र को स्नान कराकर उस पर कुंकुम की बिन्दी लगावें तथा अक्षत चढ़ावें। बाद में रतनजोत पर केसर से उस व्यक्ति का नाम लिखें, जिसे अनुकूल करना हो। यदि कई लोगों को अपने अनुकूल करना हो, तो उस पर 'सर्वजन' शब्द लिखें।

इसके बाद तेल का दीपक जला दें और 'स्फटिक माला' से निम्न मंत्र की नित्य 101 माला जप करें। यह पाँच दिन की साधना है, और साधना सम्पन्न होने पर उस ताबीज को लाल या पीले धागे में पिरोकर बाँह पर बाँध लें तथा रतनजोत को सफेद कपड़े में लपेट कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें।

मंत्र

।। ॐ क्रीं क्रीं क्रीं (अमुकं) वश्य करि करि मम आज्ञा पालय पालय फट्।।

इसमें 'अमुकं' शब्द के स्थान पर उसका नाम का उच्चारण करें, जिसे वश में करना हो अथवा 'सर्वजन' का उच्चारण भी कर सकते हैं।

वास्तव में ही यह साधना आज के युग में अत्यधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है तथा इस साधना में किसी भी व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

साधना सामग्री : 660/-

जीवन के सभी मनोविकार समाप्त हो सकते है

सम्मोहन साधना से

मानव मन से अधिक हैरान करने वाली भावभूमि न तो आज तक किसी चिकित्सक के समक्ष आ सकी है, न वैज्ञानिक के, न मनोचिकित्सक के और न मन को ही केन्द्र बनाकर अध्ययन करने वाले माध्यम के अध्येयताओं के समक्ष ही। मस्तिष्क की जटिलता भी इसके समक्ष गौण पड़ जाती है यद्यपि कुछ वैज्ञानिकों का विचार है, कि मस्तिष्क ही उस भावभूमि का निर्माण करता है जिसे हम मन कहते हैं। अध्यात्म के क्षेत्र में सक्रिय जिज्ञासुओं ने इसी मन के अलग भेद किए हैं, तो मनोचिकित्सकों ने अलग! सामान्य व्यक्ति तो चित्त, मन, विचार आदि इत्यादि की संज्ञाओं में उलझ कर इस प्रकार रह जाता है, जिस प्रकार कोई चिकित्सक केवल परीक्षण में उलझकर अपने मूल धर्म उपचार से विरत हो जाए।

मानव मन को समझने के लिए, जो एक भावभूमि ही कही जाए तो अधिक उपयुक्त रहेगा, उसके भेदों में उलझने के स्थान पर कदाचित अधिक उपयुक्त यह होगा कि मूल समस्या को समझा जाए। वास्तव में मानव की इस समस्या के संदर्भ में सबसे उपयुक्त विवेचन यही है कि जिस प्रकार से एक देह इसके अंदर भी है। यद्यपि देह तो सात हैं किन्तु वे सब अध्यात्म की विषय वस्तु हैं। उनका स्पर्शीकरण, उनका चैतन्यीकरण, उनका जागरण योग के अंतर्गत आता है। सामान्य जीवन में तो केवल दो शरीरों से ही यहाँ तात्पर्य है, क्योंकि इन दो शरीरों का संघर्ष ही व्यक्ति में विक्षोभ का कारण बनता है। यदि संक्षिप्त विवेचन में कहा जाए तो केवल या केवल इन्हीं दो शरीरों का संघर्ष ही मनुष्य में 'मन' बनकर प्रकट होता है। जिसे हम मन की सत्ता कहते है वैसी कोई स्थिति वास्तव में कदाचित होती ही नहीं। अतृप्त कामनाओं का व्यक्तीकरण ही 'मन' बन कर प्रकट होता है और अतृप्तिकरण का तात्पर्य केवल दैहिक नहीं वरन मानसिक भी होता है।

एक नदी जो अपने सहज प्रवाह में गतिशील है, उसे हम नदी की ही संज्ञा देते हैं, किन्तु यदि उसमें कोई बाधा आ जाए, तो वही नदी अपने सहज मार्ग को छोड़ किनारों को तोड़ बहने लगती है - और तब हम उसे ही बाढ़ कहते हैं। जबकि नदी तो नदी ही होती है। कदाचित इसी प्रकार से व्याख्या करने पर तृष्णा, मोह, क्रोध आदि मनोभावों की सरल व्याख्या संभव हो सकती है। मैं नहीं कह सकता, कि यह परिभाषा अथवा मन की इस प्रकार से व्याख्या करने का प्रयास कहाँ तक युक्ति संगत है, किन्तु रेखांकित करने का जो प्रयास है वह मात्र इतना ही है, कि मन के भेदों-उपभेदों के स्थान पर यदि उस अवरोध की चर्चा की जाए, उसे हटाने का प्रयास किया जाए जो मनुष्य को विक्षोभित कर देता है, तो कदाचित अधिक उपयुक्त रहेगा। संभव है, कि ज्ञान-विज्ञान की कसौटी पर मेरी बात खरी न उतरे, किन्तु अंततोगत्वा है तो यही जीवन की व्यवहारिकता।

सम्मोहन विज्ञान यही क्रिया करता है। सरल शब्दों में यह केवल व्यावहारिकता का विज्ञान है। सम्मोहन विज्ञान अपने मूलधर्म में मानव के सहज जीवन में आ गए अवरोधों को हटाने की ओर पूर्ण एकाग्रता से ध्यान देने की क्रिया है। सम्मोहन विज्ञान इस व्याख्या में नहीं उलझता कि मन के कितने भेद हैं, चित्त क्या है, विचार क्या है, अपितु सहज भाव से व्यक्ति के अंतर्मन को स्पर्श कर, उसके अटकाव को समझ, तदनुसार निर्देश देकर उन कारणों को समाप्त करने का प्रयास करना है, जो मनोविकार बन कर प्रकट होते हैं।

यदि यह कहा जाए, कि सम्मोहन विज्ञान की दृष्टि में व्यक्ति के दो स्वरूप अर्थात बाह्यस्वरूप और अंतर्स्वरूप भी न होकर केवल अंतर्स्वरूप ही होता है, तो कदाचित कोई अतिशयोक्ति न होगी।

सम्मोहन विज्ञान को इसी रूप में ग्रहण करने की चेतना पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी ने अपने शिष्यों एवं अपने सम्पर्क में आने वाले सम्मोहन विज्ञान के अध्येताओं को दी है।

सम्मोहन अपने आपमें जीवन की एक उदात्त और सुविस्तृत धारणा है, विज्ञान से भी अधिक। सम्मोहन विज्ञान तो अध्यात्म की चर्चा किए बिना ही अध्यात्म की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने की क्रिया है।

यह बात अलग है, कि उनकी प्रख्याति एक प्रखर आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप में है, किन्तु अध्यात्म का अर्थ जीवन से कट जाना तो नहीं हो सकता। कम से कम डॉ. श्रीमाली जी ने तो अपने शिष्यों के समक्ष अध्यात्म को इस रूप में व्याखित नहीं किया। यों भी अध्यात्म की भी विषय वस्तु वही है जो सम्मोहन विज्ञान की हैं, अध्यात्म भी मनुष्य के अंदर निहित मनुष्य को साथ ले चलने की धारणा लेकर गतिशील होता है और सम्मोहन की तो सम्पूर्ण विषय वस्तु ही अंतर्निहित तत्व ही होती है। सम्मोहन विज्ञान स्वयं में अध्यात्म का ही एक अंग है यद्यपि इसका उद्भव और विकास अपने प्रारंभिक चरण में आधुनिक विज्ञान की अवधारणाओं के अनुरूप नहीं हुआ है, किन्तु इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता है। किसी भी तथ्य की वैज्ञानिकता तो केवल उसकी कार्य पद्धति से ही निर्धारित की जानी चाहिए और इस कसौटी पर सम्मोहन विज्ञान खरा उतरता है।

सम्मोहन विज्ञान प्रारंभिक स्वरूप में अध्यात्म की एक वैयक्तिक परिभाषा या स्थिति भर ही रही है। इसके वर्तमान स्वरूप को विज्ञान के रूप में विकसित करने में अन्य विद्वानों के साथ-साथ डॉ. श्रीमाली जी का भी योगदान अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

आज से लगभग पैंतीस चालीस वर्ष पूर्व जब सम्मोहन को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था, सम्मोहन को उसके समानार्थक प्रतीक होते (किन्तु भाव से सर्वथा विपरीत) वशीकरण के समतुल्य मानकर घृणा और असम्मान की दृष्टि से देखा जाता था, तब डॉ. श्रीमाली जी ने साहसिक कदम उठाकर अपनी पुस्तक "प्रैक्टिकल हिप्नोटिज्म" के प्रकाशन के द्वारा न केवल स्वदेश में इस मिथक को तोड़ने और वस्तु स्थिति को यथावत् रूप में प्रस्तुत करने का कार्य किया, वरन विदेशी विद्वानों को भी इस क्षेत्र में नये ढंग से सोचने के लिए बाध्य कर दिया। आज इस ग्रंथ का (जिसका हिन्दी अनुवाद भी उपलब्ध है) सम्मोहन विज्ञान के अध्येताओं के मध्य एक विशेष स्थान है और यह अनायास भी नहीं है।

सम्मोहन अपने आपमें जीवन की एक उदात्त और सुविस्तृत धारणा है, विज्ञान से भी अधिक। सम्मोहन विज्ञान तो अध्यात्म की चर्चा किए बिना ही अध्यात्म की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने की क्रिया है। सम्मोहन अपने मूल स्वरूप में वशीकरण का कहीं स्पर्श करता ही नहीं।

यद्यपि यह तुलना अथवा उपमा कई बार प्रयुक्त: हो कर प्राचीन पड़ गई है, किन्तु सम्मोहन और वशीकरण के मध्य

सम्मोहन अपने आप में जीवन की एक उदात्त और सुविस्तृत धारणा है, विज्ञान से भी अधिक। सम्मोहन विज्ञान तो अध्यात्म की चर्चा किए बिना ही अध्यात्म की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने की क्रिया है। सम्मोहन अपने मूल स्वरूप में वशीकरण का कहीं स्पर्श करता ही नहीं।
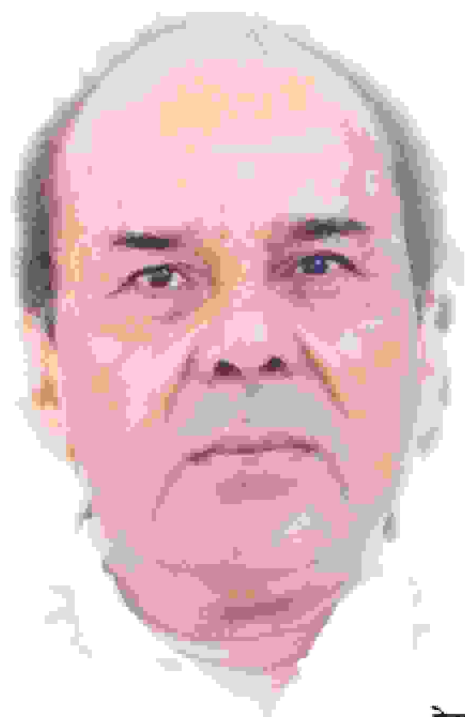
का अंतर एक डॉक्टर के चाकू और एक हत्यारे के चाकू के मध्य के भेद से ही समझा जा सकता है।

सम्मोहन का सीधा सा अर्थ है, स्व का मोहन अर्थात् अपनी इन्द्रियों को अपने ही वशीभूत कर लेने की क्रिया। इसी से प्रारंभ में कहा, कि सम्मोहन अपने मूल स्वरूप में अध्यात्म की एक एकाकी अथवा वैयक्तिक धारणा है जिसको विज्ञान तक विस्तृत करने के श्रेय के अधिकारी यदि डॉ. श्रीमाली जी नहीं भी कहे जाए तो वे सहभागी तो है ही।

ऐसा कहा जाता है, कि सम्मोहन को विकसित करने का श्रेय डॉ. हिप्नास को जाता है जिनके नाम पर यह विज्ञान हिप्नोटिज्म के नाम से सम्पूर्ण विश्व में विख्यात हुआ किन्तु इस प्रकार से यह विज्ञान किस रूप में विकृति हुआ, इसकी समालोचना करने पर भी वैयक्तिक अवमानना जैसी बात हो जाएगी, अतः इसका निष्कर्ष तो समाज के विद्वानों पर छोड़ देना उचित रहेगा। एक उदाहरण पर्याप्त होगा, कि क्या आज पश्चिम के 'योगा' और भारत के योग में कोई सामंजस्य दिखाई भी पड़ता है अथवा नहीं?

भारत के प्रत्येक ज्ञान विज्ञान की अपनी एक अंतरात्मा है जिसे यहीं की भूमि पर उत्पन्न पुरुष सार्थकता से विवेचित-व्याख्यित कर सकते हैं। ऐसा कहने के पीछे उन विदेशी विद्वानों के प्रति कोई असम्मान की भावना नहीं है किन्तु सत्यता तो यही है, कि विदेशी विद्वान इन विज्ञानों को अपने मापदंडों पर परखेंगे और यदि उनके मापदंडों पर वह खरा न उतरा तो वे उसमें अपने अनुसार संशोधन करने में भी नहीं हिचकिचाएंगे, भले ही इसमें किसी भी विज्ञान की अंतरात्मा नष्ट ही क्यों न हो जाए।

इसके उपरांत भी उनकी व्याख्याएं कदाचित अधिक कारणवश अधिक प्रचारित-प्रसारित हो पाती है, क्योंकि उनके साथ राज्यबल, सत्ता का प्रभुत्व भी गतिशील रहता है।

राज्य बल अथवा राज्य प्रभुत्व की छत्रछाया भी अपने आप में हेय नहीं है। प्राचीन काल में धर्म और राज्य का समन्वय एक सर्वमान्य तथ्य था और इसी कारणवश राजगुरु, राजा के सिंहासन से भी ऊंचे बैठकर प्रतीक रूप में स्पष्ट करते थे कि राज्य सत्ता सर्वथा निरंकुश नहीं वरन धर्म के आधीन ही है बौद्ध धर्म भी इस प्रकार सुविस्तृत नहीं हो पाता, यदि सम्राट अशोक के राजबल की उसे छत्र छाया नहीं मिल जाती, किन्तु इस विषय में अधिक कुछ कहना व्यर्थ के विवादों को खड़ा करना है और वितंडावाद प्रस्तुत करना किसी भी आध्यात्मिक पुरुष का लक्ष्य हो ही नहीं सकता।

ऐसे व्यक्तियों का केवल व केवल एक मात्र लक्ष्य यही होता है कि किसी प्रकार से समाज में जो अज्ञान या घटाटोप अंधकार छाया है वह समाप्त हो। कहीं से कुछ ऐसा संभव हो कि समाज में ज्ञान का सूर्य उदित हो और अपनी रश्मियां बिखेर नवजीवन देने की क्रिया सम्पन्न कर सके।

जीवन में कोई भी सद्‌चिंतन व्यर्थ नहीं जाता, यह बात और है, कि अशुभ की सत्ता तेजी से आगे बढ़कर अपना प्रभाव दिखाने लग जाती है किन्तु जिस प्रकार सूर्य को कुछ बादल ढक कर उसे कुछ क्षणों के लिए बस ढक ही सकते हैं, लुप्त या निस्तेज नहीं कर सकते और कुछ ही क्षण में जब वे खोखले बादल इधर-उधर बिखर जाते हैं तब सूर्य पुनः अपनी सम्पूर्ण तेजस्विता से स्पष्ट होकर, आकाश में स्वयं के समान केवल वही एक होने का तुमुलनाद कर देता है।

हर्ष है कि आज समाज में ऐसा संभव हो रहा है। अज्ञान के बादल छंट रहे हैं और समाज के श्रेष्ठ विद्वान, श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ जिनके अंदर अपनी संस्कृति के प्रति चेतना और चेतना से अधिक एक आत्मीय ललक है, वे आगे बढ़कर इस महायज्ञ में अपनी भी यज्ञाहुति देने को तत्पर हो रहे है। यह महायज्ञ समाज के ऐसे सभी श्रेष्ठ पुरुषों के समन्वय से ही सम्पन्न हो सकेगा।

अंततोगत्वा हम सभी का लक्ष्य एक ही तो है - एक सम्पूर्ण व स्वस्थ समाज का निर्माण।

शीतकाल में सेवन करने योग्य पौष्टिक, बलवीर्यवर्द्धक तथा स्नायविक संस्थान को बल देने के लिए सर्वाधिक उपयोगी एवं लाभप्रद सिद्ध होने वाली जड़ी-बूटियों में से एक जड़ी है अश्वगन्धा। यह तासीर में गरम और उष्णवीर्य है इसलिए शीतकाल में इसका सेवन करना निर्विघ्न और निरापद रहता है।

गुण–असगन्ध बलवर्द्धक, कसैली, गरम, वीर्यवर्द्धक तथा वायु, कफ हरने वाली है। अत्यन्त शुक्रल अर्थात् शुक्र उत्पन्न करने वाली है।

परिचय : यह वस्तुत: जड़ी ही है क्योंकि इसके पौधे की जड़ ही प्रयोग में ली जाती है। यह महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, पंजाब और हिमालय में 5000 फिट की ऊंचाई तक पाई जाती है। इसकी कच्ची जड़ में अश्व (घोड़े) के समान गन्ध आती है इसलिए इसे अश्वगन्धा कहा जाता है। सूख जाने के बाद इसकी गन्ध तो नष्ट हो जाती है पर इसके गुण नष्ट नहीं होते और इसका विधिवत ढंग से पूरे शीतकाल भर सेवन करने पर घोड़े की तरह शक्ति, पुष्टि और स्फूर्ति उपलब्ध होती है इससे भी इसका नाम सार्थक सिद्ध होता है। यह जड़ी पंसारियों की दूकान पर आसानी से हर गांव शहर में मिल जाती है।

उपयोगी : असगन्ध का उपयोग बहुत व्यापक रूप से किया जा सकता है। यह कफ और वात के शमन के लिए शोथ और मूत्रावरोध दूर करने के लिए, शुक्रक्षीणता, योनिशूल तथा प्रदर के लिए, वातजन्य व्याधियों और जोड़ों के दर्द के लिए, यौन शक्ति की कमी और शिथिलता आदि व्याधियों को दूर करने के लिए बहुत उपयोगी है।

इसका उपयोग करने की सरल सेवन विधि यह है कि इसे कूट-पीस कर खूब महीन चूर्ण कर कपड़ छन करके शीशी में भर लें। इसे चाय वाले चम्मच (छोटा चम्मच) से 1 चम्मच भर मात्रा में सुबह-शाम फांक कर ऊपर से मिश्री मिला मीठा दूध पी लें। जो इसके कड़वे स्वाद से बचना चाहें वे इस चूर्ण को थोड़े से शुद्ध घी में मिला कर चाट लें और ऊपर से कुनकुना गरम मीठा दूध पी लें। इसे स्त्री-पुरुष, युवा-प्रौढ़ और वृद्ध सभी आयु वाले सेवन कर सकते हैं। स्त्रियों को शरीर में शक्ति, चुस्ती-फुर्ती पैदा होगी और प्रदर रोग में लाभ होगा, कमर दर्द, हाथ-पैरों के दर्द में आराम होगा, गर्भाशय व योनि के शूल व शोथ में लाभ होगा। युवकों व प्रौढ़ पुरुषों को शुक्रबल, स्नायविक शक्ति और वाजीकारक लाभ होने से उनके यौन विकारों एवं दौर्बल्य का नाश होगा। धातुक्षीणता नष्ट होकर धातुएँ पुष्ट होंगी। वृद्ध स्त्री-पुरुषों की वातजन्य व्याधियों और स्नायविक दुर्बलता दूर करने में सफलता मिलेगी।

अश्वगन्धा और विधायरा के चूर्ण को समान मात्रा में मिलाकर 1-1 चम्मच चूर्ण सुबह-शाम उपर्युक्त विधि से दूध के साथ फांकने से शारीरिक बल, शारीरिक सुडौलता, दिमागी ताकत और यौन शक्ति में भारी वृद्धि होती है। इसे भी घी में मिला कर और चाट कर ऊपर से मीठा दूध पीने की विधि से सेवन कर सकते हैं। पूरे शीतकाल भर सेवन कर लाभ उठाना चाहिए। यह अनिद्रा स्नायविक दौर्बल्य (नर्वस ब्रेक डाउन), त्वचा की झुर्रियाँ और शरीर का दुबलापन दूर करने के लिए उत्तम योग है।

असगन्ध पाक

शीतकाल में सेवन योग्य यह असगन्ध पाक सभी आयु के स्त्री-पुरुषों के लिए बहुत ही अच्छा घरेलू टानिक है।

सामग्री : असगन्ध नागौरी चूर्ण आधा किलो, सोंठ 250 ग्राम, छोटी पीपर 125 ग्राम, काली मिर्च 65 ग्राम। दूध 8 लिटर। शुद्ध घी 1 सेर। कुटी पिसी और छनी हुई तज, तेजपात, नागकेशर, इलायची, लौंग, पीपलामूल, जायफल, तगर, नेत्रबाला, सफेद चन्दन का बुरादा, नागरमोथा, सूखा आंवला, बंसलोचन, खैरसार, चित्रक छाल और शतावर-सब 5-5 ग्राम। दो किलो सफेद बूरा।

विधि : पूरे दूध को इतना उबालें कि आधा बचे तब इसमें असगन्ध, सोंठ, पीपर और काली मिर्च-चारों का पिसा हुआ चूर्ण डाल कर हिलाते हुए औटाएं और मावा (खोवा) कर लें। अलग एक कढ़ाही में 1 किलो शुद्ध घी डाल कर गरम करें और यह मावा डाल कर हिलाते चलाते हुए खूब अच्छी तरह भूनें और लाल होने पर उतार लें। 5-5 ग्राम वाली सभी चीजें पीसी हुई मिला कर पहले से तैयार रखें। दो किलो सफेद बूरे (या मिश्री) की चाशनी तैयार कर इसमें पहले खोवा डाल कर अच्छी तरह मिला लें फिर जब चाशनी गाढ़ी होने लगे तब तज तेजपात आदि का मिला हुआ चूर्ण डाल कर खूब अच्छी तरह मिला कर नीचे उतार लें। ठण्डा होने पर 25-25 ग्राम वजन के लड्डू बांध लें। बस, असगन्ध पाक तैयार है।

सेवन विधि : रोज सुबह नाश्ते की जगह एक लड्डू खूब अच्छी तरह से चबा-चबा कर खाएं और साथ में दूध पीते जाएं। दूध न मिल सके तो सिर्फ लड्डू ही खा लें। इसके बाद 2 घण्टे तक कुछ भी खाएं-पिएं नहीं ताकि लड्डू ठीक से हजम हो सके। आयु और पाचन शक्ति के अनुसार मात्रा घटा-बढ़ा सकते हैं।

लाभ : यह पाक गरम प्रकृति का है अत: शीतकाल में ही सेवन करने योग्य है। गर्म तासीर वाले लोगों को इसका सेवन करने से शरीर में गर्मी और दाह का अनुभव हो तो वे इस योग का सेवन न करें। जिन्हें यह पाक सात्म्य (सूट करे) कर जाए वे अवश्य इसका सेवन करें। यह सभी आयुवर्ग के लोगों के लिए गुणकारी तथा बलपुष्टिकारक है।

(विशेष-प्रयोग के पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य ले लें।)

जीवन का रहस्य

राजा परीक्षित को श्रीमद्भागवत पुराण सुनाते हुए जब शुकदेव जी महाराज को छह दिन बीत गए और तक्षक (सर्प) के काटने से मृत्यु होने का एक दिन शेष रह गया, तब भी राजा परीक्षित का शोक और मृत्यु का भय दूर नहीं हुआ। अपने मरने की घड़ी निकट आती देखकर राजा का मन क्षुब्ध हो रहा था। तब शुकदेव जी महाराज ने परीक्षित को एक कथा सुनानी आरंभ की- 'राजन! बहुत समय पहले कीबात है, एक राजा किसी जंगल में शिकार खेलने गया संयोगवश वह रास्ता भूलकर बड़े घने जंगल में जा पहुंचा। उसे रास्ता ढूंढते-ढूंढते रात्रि हो गई और भारी वर्षा होने लगी।

जंगल में सिंह व्याघ्र आदि बोलने लगे। वह राजा बहुत डर गया और किसी प्रकार उस भयानक जंगल में रात्रि बिताने के लिए विश्राम का स्थान ढूंढने लगा। रात के समय में अंधेरे में उसे एक दीपक दिखाई दिया।

वहां पहुंचकर उसने एक बहेलिये की झोंपड़ी देखी। वह बहेलिया ज्यादा चल-फिर नहीं सकता था, इसलिए झोंपड़ी में ही एक ओर उसने मल-मूत्र त्यागने का स्थान बना रखा था। अपने खाने के लिए जानवरों का मांस उसने झोंपड़ी की छत पर लटका रखा था। बड़ी गंदी, छोटी, अंधेरी और दुर्गंधयुक्त वह झोंपड़ी थी। उस झोंपड़ी को देखकर पहले तो राजा ठिठका, लेकिन पीछे उसने सिर छिपाने का कोई आश्रय न देखकर उस बहेलिये से अपनी झोंपड़ी में रातभर ठहर जाने देने के लिए प्रार्थना की।

बहेलिये ने कहा कि आश्रय के लोभी राहगीर कभी-कभी यहां आ भटकते हैं। मैं उन्हें ठहरा तो लेता हूं, लेकिन दूसरे दिन जाते समय वे बहुत झंझट करते हैं। इस झोंपड़ी की गंध उन्हें ऐसी भा जाती है कि फिर वे उसे छोड़ना ही नहीं चाहते और इसी में ही रहने की कोशिश करते हैं एवं अपना कब्जा जमाते हैं। ऐसे झंझट में मैं कई बार पड़ चुका हूं।

इसलिए मैं अब किसी को भी यहां नहीं ठहरने देता।

मैं आपको भी इसमें नहीं ठहरने दूंगा।

राजा ने प्रतिज्ञा कर कहा कि वह सुबह होते ही इस झोंपड़ी को अवश्य खाली कर देगा।

उसका काम तो बहुत बड़ा है, यहाँ तो वह संयोगवश भटकते हुए आया है, सिर्फ एक रात्रि ही काटनी है।

बहेलिये ने राजा को ठहरने की अनुमति दे दी।

बहेलिये ने सुबह होते ही बिना कोई झंझट किए झोंपड़ी खाली कर देने की शर्त को फिर दोहरा दिया।

राजा रातभर एक कोने में पड़ा सोता रहा।

सोते-सोते पर झोंपड़ी की दुर्गंध उसके मस्तिष्क में ऐसी बस गई कि सुबह उठा तो वही सब परमप्रिय लगने लगा। अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को भूलकर वह वहीं निवास करने की बात सोचने लगा। वह बहेलिये से उसे वहाँ

और ठहरने देने की प्रार्थना करने लगा।

इस पर बहेलिया भड़क गया और राजा को भला-बुरा कहने लगा। राजा को अब वह जगह छोड़ना झंझट लगने लगा और दोनों के बीच उस स्थान को लेकर विवाद खड़ा हो गया।

कथा सुनकर शुकदेव जी महाराज ने परीक्षित से पूछा, 'परीक्षित! बताओ क्या उस राजा का उस स्थान पर सदा रहने के लिए झंझट करना उचित था ?'

परीक्षित ने उत्तर दिया, 'भगवन्! वह कौन राजा था, उसका नाम बताइये ?'

वह तो बड़ा भारी मूर्ख जान पड़ता है, जो ऐसी गंदी झोंपड़ी में, अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर एवं अपना वास्तविक उद्देश्य भूलकर, नियत अवधि से भी अधिक रहना चाहता है। उसकी मूर्खता पर तो मुझे आश्चर्य होता है।

श्री शुकदेव जी महाराज ने कहा,'हे राजा परीक्षित! वह बड़े भारी मूर्ख तो स्वयं आप ही हैं। इस मल-मूत्र की गठरी देह (शरीर) में जितने समय आपकी आत्मा को रहना आवश्यक था। वह अवधि तो कल समाप्त हो रही है। अब आपको उस लोक जाना है, जहां से आप आए हैं।

फिर भी आप झंझट फैला रहे हैं और शरीर छोड़ने का समय आ जाने पर भी जाना नहीं चाहते। क्या यह आपकी मूर्खता नहीं है ?

राजा परीक्षित का ज्ञान जाग पड़ा और वे बंधन मुक्ति के लिए सहर्ष तैयार हो गए।

वास्तव में यही सत्य है। जब एक जीव अपनी माँ की कोख से जन्म लेता है तो अपनी माँ की कोख के अन्दर भगवान से प्रार्थना करता है कि 'हे भगवन्! मुझे यहाँ (इस कोख) से मुक्त कीजिए, मैं आपका भजन-सुमिरन करूँगा और जब वह जन्म लेकर इस संसार में आता है तो (उस राजा की तरह हैरान होकर) सोचने लगता है कि मैं ये कहाँ आ गया (और पैदा होते ही रोने लगता है) फिर उस गंध से भरी झोंपड़ी की तरह उसे यहाँ की खुशबू ऐसी भा जाती है कि वह अपना वास्तविक उद्देश्य भूलकर यहाँ से जाना ही नहीं चाहता।

अतः संसार में आने के अपने वास्तविक उद्देश्य को पहचाने और उसको प्राप्त करें ऐसा कर लेने पर आपको मृत्यु का भय नहीं सताएगा।

सद्गुरूदेव ने इस ग्रन्थ में यही बताया है कि आत्मा जो कि ब्रह्म स्वरूप है लेकिन शरीर रूपी इस झोंपड़ी में आकर अपने महान जीवन के उद्देश्य को भूल गया है, उसे इस झोंपड़ी की गंध भा गई है और वह उसी में उन्हीं क्रियाकलापों के साथ और अधिक दिन रहने की कोशिश करता रहता है, भले ही उसका वापस जाने का समय निकट आ जाए।

सद्गुरुदेव ने हमेशा समझाया कि मनुष्य में अपार शक्ति है, अपार क्षमता है और पशुत्व से ऊपर उठकर उसे अपने अन्दर मौजूद क्षमता का उपयोग गुरु के सानिध्य में प्रभु स्मरण, कुण्डलिनी जागरण, क्रिया योग, छठी इन्द्रिय जागरण आदि क्रियाओं में करना चाहिए और अपने जीवन के उद्देश्य को पहचान कर दृढ़ता के साथ आगे बढ़कर उस विराट सत्ता के दर्शन करने चाहिए, जिससे वह गुरु के मार्गदर्शन में श्रेष्ठतम बन कर अपने आपको वहां खड़ा कर सके जहां उसे मृत्यु का भय नहीं रहेगा।

▪ राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष–प्रथम सप्ताह लाभदाय रहेगा। सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। भाइयों में सहमति रहेगी। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। शत्रुओं से सावधान रहें, जिसका भला करेंगे वही प्रहार करेगा। नया वाहन खरीद सकते हैं। इस समय व्यापार में लाभ होगा। महत्वपूर्ण कार्य स्वयं ही करें। माह के मध्य में लिये जाने वाले निर्णय सोच-विचार कर लें। निर्णय गलत भी हो सकते हैं। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि लेंगे। सोचे गये कार्य पूरे होंगे। तीसरे सप्ताह में व्यापार में रुकावटें आयेंगी। आखिरी सप्ताह में अपने सोचे अनुसार कार्य होंगे। संतान से मनोवांछित सहयोग मिलेगा, प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। प्यार में जीत होगी। कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी। आप अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-1, 9, 10, 17, 18, 26, 27, 28

वृष–माह का प्रारम्भ शुभकारी है। परिवार में सहमति बनेगी, व्यापार में लाभ का समय है। परिवार में सुख-समृद्धि रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। अनर्गल कार्यों में समय बेकार जायेगा, शत्रु पक्ष से सावधान रहें। दूसरे सप्ताह में धंधे में नुकसान उठाना पड़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कोई लाभ होगा। आप गरीबों की सहायता करेंगे। माह के मध्य में निर्णय सोच-विचार कर लें। विपक्ष आप के ऊपर हावी रहेगा। किसी और की गलतियाँ आप पर थोपी जा सकती हैं। आप उत्साह से जिस कार्य की शुरूआत करेंगे, पूरा अवश्य करेंगे। दाम्पत्य जीवन सुखमय है। परिवार की समस्या का समाधान हो जायेगा। आखिरी तारीख में कार्य की प्रगति में रुकावटें आयेंगी। आप धर्मस्थल में दान-पुण्य पर रुपया खर्चेंगे। इस माह आप पारद शिवलिंग स्थापित करें।

शुभ तिथियाँ-3, 4, 11, 12, 19, 20, 21, 30, 31

मिथुन–माह का प्रारम्भ अशुभकारी है। क्रोध से दूर रहें अन्यथा बिना वजह परेशानी का सामना हो सकता है। विद्यार्थी वर्ग के लिए अच्छा समय है। सम्पत्ति के पुराने मामले निपट जायेंगे। जीवनसाथी से मतभेद दूर होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अचानक किसी कारण हानि उठानी पड़ सकती है। उच्चाधिकारी वर्ग का सहयोग मिलेगा। वाहन धीमी गति से चलायें। गलत सोहबत के मित्रों से दूर रहें। बाहरी यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। आपकी मुलाकात किसी विशिष्ट व्यक्ति से होगी। मेहनत इस समय रंग लायेगी। कोई गलतफहमी गृहस्थ में तनाव उत्पन्न कर सकती है। अचानक धनप्राप्ति होगी। आप मनः शांति दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-4, 5, 6, 13, 14, 21, 22, 23

कर्क–प्रथम सप्ताह लाभप्रद है। रुके कार्य होंगे। आर्थिक उन्नति का योग बनेगा। दाम्पत्य जीवन में खुशहाली रहेगी। विरोधी पक्ष से सावधान रहें। क्रोध पर नियंत्रण रखें। शेयर बाजार में सावधानी से निवेश करें। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय सफलता देगा। दूसरे सप्ताह में शारीरिक कष्ट एवं अन्य चिंताएं परेशान करेंगी। आर्थिक क्षेत्र में तनाव रहेगा। किसी अच्छे व्यक्ति से मुलाकात होगी, स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। नौकरीपेशा लोगों का ट्रांसफर हो सकता है। आलस्य न करें, काम बिगड़ सकता है। यात्रा का योग है। समस्याओं को सुलझाने में सफल रहेंगे, उम्मीद से अधिक प्रगति होगी, आखिरी तारीख में सावधानी से कार्य करें अन्यथा अपमानित होना पड़ सकता है। रुपये उधार न देवें। मानसिक व्यग्रता रहेगी। आप नवग्रह मुद्रिका धारण करें।

शुभ तिथियाँ- 6, 7,8, 15, 16, 24, 25, 26

सिंह–प्रारम्भ अच्छा है। भौतिक सुख-सुविधाओं में धन खर्च होगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। अविवाहितों के विवाह के अवसर हैं। क्रोध पर नियंत्रण आवश्यक है। उच्चाधिकारियों से तालमेल अच्छा रहेगा। अदालतों के चक्कर से छुटकारा मिलेगा। आत्मविश्वास बढ़ा हुआ रहेगा। कहीं से अप्रिय समाचार मिल सकता है। चलते-फिरते किसी से वादविवाद हो सकता है। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर बनेंगे। अचानक धन लाभ हो सकता है। व्यापारी वर्ग को कोई ऑर्डर मिल सकता है। प्लानिंग सफल होगी। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में विचलित रहेगा। आपकी कोई छिपी बात उजागर हो सकती है। अपनों से अच्छा बर्ताव न मिलने से मन उदास रहेगा। विरोधियों से सावधान रहें। सरकारी कर्मचारी का ट्रांसफर मनचाही जगह हो सकता है। राजयोग साधना साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 9, 10, 17, 18, 26, 27, 28

कन्या–प्रारम्भ सुखप्रद रहेगा। जमीन-जायदाद के सौदे के कार्य में सफल होंगे, उधारी वसूल होगी। राजनीति में वर्चस्व बढ़ेगा। किसी के बहकावे में गृहस्थ तनाव होगा। अधिक जोखिम भरे कार्य न करें। गलत

कार्यों से दूर रहें। विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है, समाज में सम्मान बढ़ेगा। माह के मध्य में कोई अशुभ घटना हो सकती है। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। घर में किसी की सगाई हो सकती है। गलतफहमी में न आयें, परिवार का वातावरण बिगड़ सकता है। आलस्य से दूर रहे। भाइयों से मतभेद दूर होकर प्यार का वातावरण बनेगा। संतान पक्ष से चिंतित रहेंगे। दोस्तों के साथ पार्टी आदि में व्यस्त होंगे।सभी का सहयोग मिलेगा। आप इस माह श्रीविद्या स्तोत्र का पाठ करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 19, 20, 21, 30, 31

तुला–माह का प्रारम्भ थोड़ा कष्टकारी रहेगा। दूसरे का भला करने पर भी विपरीत परिणाम मिलेंगे। अटके रुपये प्राप्त होंगे। नया वाहन की खरीद हो सकती है। किसी से धोखा मिलने से विश्वास टूट जायेग। परिवार में तनाव की स्थिति रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम का फल मिलेगा। धीरे-धीरे तीसरे सप्ताह में परिवार में तनाव कम होगा। आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। परिवार के सहयोग से सभी जगह जीत हासिल होगी। आखिरी सप्ताह का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। फिर भी किसी भी कार्य को प्रारम्भ के पूर्व अच्छी तरह पड़ताल कर लें। किसी झूठ के सहारे से आपकी प्लानिंग सफल होगी। गलत तरीकों से पैसा आयेगा। कहीं बाहर घूमने का प्रोग्राम बन सकता है। आप कायाकल्प दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-4, 5, 6, 13, 14, 21, 22, 23

वृश्चिक–सप्ताह का प्रारम्भ उन्नतिदायक रहेगा। काम बनेंगे। यात्रा भी हो सकती है। वाहन चालन में सावधानी बरतें। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। महत्वपूर्ण कागजातों पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। विद्यार्थियों की रुचि पढ़ाई में रहेगी। आपका स्वास्थ्य खराब होने से कार्य बीच में रुक सकता है। रुपये-पैसे की आवक रुकेगी। जीवनसाथी के साथ मधुरता रहेगी। आकस्मिक स्रोतों से धनप्राप्ति हो सकती है। पुरानी बातें याद करने से समस्यायें उत्पन्न होगी। आप रुकावटों के बाद भी कामयाबी पा लेंगे। विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल है। परिवार में कोई छोटी सी बात पर वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न करेगी। आप इस माह गृहस्थ सुख दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 16, 24, 25, 26

धनु–माह का प्रारम्भ मध्यम फल वाला रहेगा। कार्यों में सराहना मिलेगी। उधार दिये पैसे वसूल होंगे, उत्साह रहेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में उलझेंगे। कोई धोखा भी दे सकता है। इस समय निर्णय सोच-समझ कर लें। आध्यात्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। असहायों की सहायता करेंगे। परिवार में परेशानियां रहेगी। विद्यार्थी वर्ग का पढ़ाई में मन नहीं लगेगा। वाहन सुख मिल सकता है। मनोवांछित सफलता मिलने से मन प्रसन्न रहेगा। आकस्मिक धन प्राप्ति हो सकती है। धन के लालच में परेशानियां मोल ले लेंगे। व्यापार में उन्नति के आसार हैं, घरेलू समस्याएं सुलझेंगी। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। कार्य मित्रों की सहायता से पूर्ण होंगे। आप गणपति साधना करें।

शुभ तिथियाँ-1, 9, 10, 17, 18, 26, 27, 28

मकर–माह का प्रथम सप्ताह शुभकारी रहेगा। व्यवसाय में सफलता मिलेगी। शत्रु वर्ग को शांत कर देंगे। सूझ-बूझ से सभी समस्याओं से छुटकारा पा लेंगे। स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

[illegible]

अचानक परेशानियां बढ़ जायेंगी। मित्रों की सहायता से ही अनुकूलता आयेगी। नौकरी पेशा लोगों के लिए पदोन्नति के अवसर हैं। बेटी की सगाई का रिश्ता आ सकता है। तीसरे सप्ताह में आपकी कोई छिपी बात खुल जाने से परेशान हो जायेंगे। विरोधी इस समय परेशान करेंगे। आखिरी सप्ताह में लिए गये निर्णय गलत साबित हो सकते हैं। आपकी महत्वपूर्ण बात किसी से शेयर न करें। दूसरों के वाद-विवाद से दूर रहें। भैरव साधना सम्पन्न करें या भैरव दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ-2, 3, 4, 11, 12, 19, 20, 21, 30, 31

कुम्भ–माह का प्रथम सप्ताह शुभ नहीं है। अचानक कोई नुकसान उठाना पड़ सकता है। सही कार्य करने पर भी नुकसान उठाना पड़ सकता है। जिसका भला करेंगे, वे ही शत्रुवत व्यवहार करेंगे। सरकारी कर्मचारियों का पदोन्नति का अवसर है। रुके हुये रुपयों की प्राप्ति होगी। दूसरों के बहकावे में न आयें शत्रु वर्ग से सावधान रहें। परिवार के सदस्य भटक सकते हैं। मित्रों से मतभेद होंगे। परिवार में अशांति रहेगी। आवेश में न आये अन्यथा काम बिगाड़ लेंगे। जीवनसाथी के साथ सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। गरीबों की सहायता करेंगे। आखिरी दिनों में तबीयत अच्छी नहीं रहेगी, तनाव होगा, यात्रा कष्टकारी होगी, जोखिम उठाने वाले कार्यों से दूर रहें, विरोधी फायदा उठा सकते हैं। आप बगलामुखी साधना सम्पन्न करें या बगलामुखी दीक्षा प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ- 4, 5, 6, 13, 14, 21, 22, 23

मीन–इस माह प्रारम्भ खुशनुमा रहेगा। 1 तारीख को सोचा गया कार्य पूर्ण होगा, कठिनाइयां दूर होंगी। किसी को पैसा उधार न दें। कोई कदम उठाने से पूर्व सोच-विचार कर लें। गरीबों की सहायता करेंगे। नौकरीपेशा लोगों का प्रमोशन हो सकता है। उधार लेने से बचें। किसी के बहकावे में न आयें, स्वयं के विवेक से निर्णय लें। पति-पत्नी में वैचारिक मतभेद होंगे। वाणी पर संयम रखें। स्वास्थ्य खराब हो सकता है, विदेश यात्रा हो सकती है। चलते-फिरते किसी से वाद-विवाद होने पर संयम रखें। अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य पर विश्वास रखें। पति-पत्नी में मधुरता का भाव होगा, प्यार की जीत होगी। आप माँ दुर्गा की साधना करें।

शुभ तिथियाँ-6, 7, 8, 15, 16, 24, 25, 26

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

07.12.20	सोमवार	भैरव जयंती
11.12.20	शुक्रवार	उत्पन्ना एकादशी
14.12.20	सोमवार	सोमवती अमावस्या
16.12.20	बुधवार	गुरुत्व दिवस
17.12.20	गुरुवार	सिद्धेश्वरी दिवस
19.12.20	शनिवार	श्रीपंचमी
21.12.20	सोमवार	पद्मावती सिद्धि दिवस
25.12.20	शुक्रवार	मोक्षदा एकादशी/गीता जयंती.
27.12.20	रविवार	अनंग त्रयोदशी
29.12.20	मंगलवार	त्रिपुर भैरवी जयंती

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है: जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (दिसम्बर 6,13,20,27)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (दिसम्बर 7,14,21,28)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (दिसम्बर 1,8,15,22,29)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (दिसम्बर 2,9,16,23,30)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरुवार (दिसम्बर 3,10,17,24)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (दिसम्बर 4,11,18,25)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (दिसम्बर 5,12,19,26)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

दिसम्बर 2020

11. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-
    ।। ॐ श्रीं मम कार्य सिद्धिं श्रीं ॐ नमः ।।
12. किसी पीपल के वृक्ष में जल चढ़ायें।
13. भगवान सूर्य को जल में पुष्प डालकर जल अर्पण करें।
14. आज सोमवती अमावस्या को पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
15. बजरंग बाण का एक पाठ करके जाएं।
16. आज गुरुत्व दिवस को गुरु पादुका पूजन करके जाएं।
17. बाहर जाने से पूर्व 11 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें-
    ।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।
18. आज भी उपरोक्त मंत्र का जप करके जाएं।
19. प्रातः 51 बार 'रां रामाय नमः' मंत्र का जप करके जाएं।
20. गायत्री मंत्र की 1 माला जप करें।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर गुरु गीता का पाठ करें।
22. शिवलिंग पर ॐ नमः शिवाय बोलते हुए अभिषेक करें।
23. हनुमान गुटिका (न्यौछावर 150/-) अपने ऊपर से सात बार घुमा कर किसी हनुमान मन्दिर में चढ़ायें, शत्रु बाधा समाप्त होगी।
24. प्रातः स्नान कर पूजन स्थल पर 11 बार 'ॐ' का उच्चारण करें।
25. आज निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-
    ।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।।
26. आज काले कुत्ते को रोटी खिलायें।
27. कायाकल्प गुटिका (न्यौछावर 210/-) धारण करें।
28. आज तांत्रोक्त नारियल (न्यौछावर 150/-) पूरे घर में घूमाकर किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें, गृह बाधा समाप्त होगी।
29. पाँच पत्रिका सदस्य बनाकर त्रिपुर भैरवी दीक्षा प्राप्त करें, आज त्रिपुर जयंती है।
30. आज पत्रिका में प्रकाशित कोई लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें।
31. आज वर्ष के अन्तिम दिन रात्रि 7.49 से पूरी रात्रि गुरु पुष्य योग है। इस शुभ मुहूर्त में आने वाले वर्ष 2021 के लिए पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।

जनवरी 2021

1. प्रातः दूध से बने प्रसाद का किसी देवी मन्दिर में भोग लगाकर सभी को वितरित करें।
2. आज एक तांत्रोक्त नारियल (न्यौछावर 150/-) लाल कपड़े में बांधकर मुख्य द्वार पर बांध दें।
3. भगवान सूर्य को अर्घ्य दें एवं निम्न मंत्र का 21 बार जप करें- ।। ॐ सूर्याय नमः ।।
4. एक कागज पर कुंकुम से 11 बार ॐ नमः शिवाय लिखकर एक पंचमुखी रुद्राक्ष (न्यौछावर 31/-) पर लपेट कर अपनी मनोकामना के साथ शिव मन्दिर में चढ़ा दें।
5. बेसन के लड्डुओं का भोग लगाकर बांट दें।
6. निम्न मंत्र का 11 बार उच्चारण करके जाएं-
    ।। ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ नमः ।।
7. आज गुरु गुटिका (न्यौछावर 150/-) धारण करें, सफलता मिलेगी।
8. एक चुटकी नमक घर से निकलते वक्त बाहर डाल दें।
9. आज पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
10. गुरु मंत्र की 8 माला एवं 1 माला गायत्री मंत्र की जप करके जाएं।

31.12.2020 रात्रि 7.50 से या किसी भी सोमवार से

यदि आप सम्पूर्णता के साथ,

जीवन निर्वाह करना चाहते हैं,

जीवन

भी एक सितार की भांति है,

इसके तारों को न तो अधिक
कसना है
और न ही ढीला छोड़ना है,
मध्यम रखना
है, क्योंकि तभी इसमें से
मधुरतम संगीत
के श्रोतव्य स्वर प्रस्फुटित
होने की
संभावना बनती है।

तो आप अवश्य सम्पन्न करें

राजयोग साधना

मोक्ष का अर्थ–इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार जहां कोई भी इच्छा शेष नहीं और यह स्थिति तभी आ सकती है

जब व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं को संमय के साथ पूरी तरह जी ले, वह बिना किसी दमन के पूर्णता के साथ अपने जीवन को जी ले.... और पूर्णत्व के साथ जीवन जीने का अर्थ है–बाह्य और आंतरिक जीवन का योग।

जीवन के दो छोर हैं एक बाह्य और दूसरा आन्तरिक, इन दोनों छोरों को मिलाकर ही वस्तुतः जीवन की संरचना हुई है, इन दोनों छोरों की संभावनाओं को ही जीवन की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

परन्तु यह विडम्बना ही कही जा सकती है, कि मनुष्य कभी भी जीवन को समझ ही नहीं पाया, वह जीया तो सही, परन्तु मृतवत् ही जीया, कभी भी उसने जीवन को समग्रता से स्वीकार नहीं किया और यही कारण है, कि आज मनुष्य स्वयं को परेशानियों, कष्टों एवं बाधाओं के जाल में पाकर पशुवत् जीवन जीने को मजबूर हो गया है।

व्यक्ति का मन स्वाभाविक रूप से 'अति' की ओर आकर्षित होता है, वह कभी भी बीच में रुकना पसंद नहीं करता, हर कार्य में 'अति' की ओर ही उसका झुकाव रहता है। उदाहरणतः एक व्यक्ति बहुत अधिक खाता है, तो वह भी एक अति है, क्योंकि उसे भूख हो चाहे न भी हो फिर भी वह खाता ही चला जाता है और परिणामस्वरूप उसे रोगों से उलझना पड़ता है, परेशानियां भोगनी पड़ती हैं, तकलीफें उठानी पड़ती हैं....

इसी प्रकार एक व्यक्ति भोजन छोड़ देता है, व्रत आदि करता है और महीनों धर्म के नाम पर अपने शरीर पर अत्याचार करता है, यह भी अति ही है और इसका भी परिणाम होता है रोग परेशानियां एवं तकलीफें...

मन को साधना बहुत ही कठिन कार्य है, मन को प्रत्येक क्रिया के अतिक्रमण में ही आनन्द आता है, क्योंकि जहां पर भी अति का अंत होता है, वहीं से ही उन्मनी अवस्था का प्रादुर्भाव होता है....

बौद्धकाल में एक बहुत ही प्रभावशाली राजा था 'श्रोण' जो अत्यधिक विलास एवं नाना प्रकार के भोगों में रत रहता था, वास्तव में उसने जीवन में प्रत्येक प्रकार के भोग, ऐश्वर्य को चरम सीमा पर ही भोगा।

कहते हैं जब बुद्ध की उस पर कृपा हुई तब उसे अपनी यह अति दिखाई पड़ी और उसने दीक्षा लेने की ठानी, तो फिर उसके बाद वह दूसरी अति की ओर अग्रसर हो गया। अगर बुद्ध के दूसरे शिष्य बैठकर तीन घंटे ध्यान करते, तो वह धूप में एक पैर पर खड़ा होकर दस घंटे ध्यान करता, यदि शिष्य दिन में एक बार भोजन करते, तो वह सप्ताह में केवल मुट्ठी भर चने ही खाता और अगर बाकी शिष्य दिन में चार घंटे विश्राम करते, तो वह तीन दिन में 2-3 घंटे ही विश्राम करता।

फलस्वरूप वह 'श्रोण' जो एक समय में अत्यंत ही सौंदर्यवान, बलवान और आकर्षक था बिल्कुल ही काला पड़ गया, उसका शरीर कंकाल के समान हो गया और उसे पहचानना तक मुश्किल हो गया, आखिरकार यह खबर बुद्ध तक पहुंची और वे स्वयं श्रोण के पास गए।

श्रोण ने उनको प्रणाम किया, तो बुद्ध ने उससे कहा–श्रोण! मैंने सुना है, कि एक समय तुम बहुत ही उच्च-कोटि के सितार वादक रहे हो।

श्रोण की स्वीकृति पर बुद्ध ने आगे कहा–अच्छा बताओ अगर तुम सितार के तारों को बिल्कुल ही ढीला
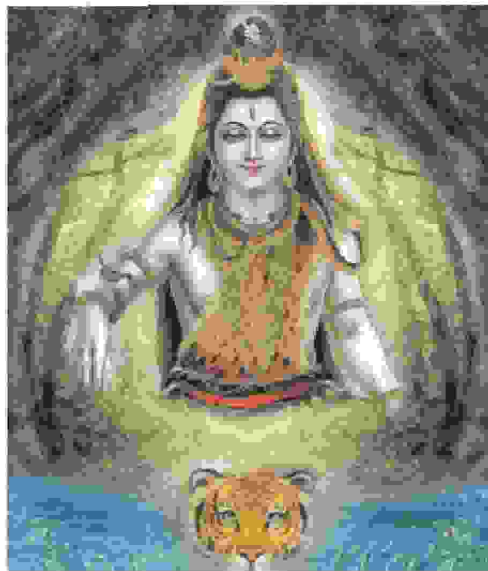
हम उन सभी तथ्यों को अनुभव करें, जो हमारे 'स्व' से सम्बन्धित हैं,

सम्बन्ध बनाने के लिए सिर्फ धर्म के उपदेशों से कार्य नहीं हो सकता, क्योंकि सिर्फ लोगों की बातें सुनकर उनके अनुसार चलना जीवन नहीं है, अपितु हम जो भी करें अपनी साधना बल से प्राप्त करें। अपने पुरुषार्थ से प्राप्त करें। सम्पूर्णता एवं संमय के साथ जीवन का निर्वाह करना भी एक प्रकार की साधना है।

छोड़ दोगे, तो क्या उससे मधुर संगीत निकल सकता है?

'नहीं, तथागत! ढीले तारों से संगीत उत्पन्न नहीं हो सकता, बेढंगी आवाजें जरूर उत्पन्न हो सकती हैं''–श्रोण ने कहा।

''ठीक, और अगर तुम तारों को बहुत... बहुत ज्यादा कस दो तो?''

–फिर तो तार टूट ही जाएंगे उससे संगीत कैसे उत्पन्न हो सकता है, मधुर संगीत के लिए तो तार न तो अधिक ढीले और न ही अधिक कसे हुए होने चाहिए....

बुद्ध बोले–जब तू इतना जानता है, तो शरीर को इतनी यातनाएँ क्यों दे रहा है?

जीवन भी एक सितार की भांति है, इसके तारों को न तो अधिक कसना है और न ही ढीला छोड़ना है, मध्यम रखना है क्योंकि तभी इसमें से मधुर संगीत के उत्पन्न होने की संभावना है, अन्यथा नहीं।

और इसी स्थिति को बुद्ध ने मज्झिम निकाय कहा, मध्य मार्ग कहा, जहां किसी प्रकार की अति नहीं है और मज्झिम निकाय ही निर्वाण अथवा मोक्ष है....

मोक्ष का अर्थ है–इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार जहां कोई भी इच्छा शेष नहीं और यह स्थिति तभी आ सकती है जब व्यक्ति अपनी सभी इच्छाओं को पूरी तरह जी ले, वह बिना किसी दमन के पूर्णता के साथ अपने जीवन को जी ले।

और पूर्णत्व के साथ जीवन जीने का अर्थ है–बाह्य और आंतरिक जीवन का योग, इन दोनों ही छोरों का योग।

बाह्य जीवन का अर्थ है–वे सब उपलब्धियाँ या स्थितियाँ, जिन्हें प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को बाहर की ओर यात्रा करनी पड़ती है। यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, धन, संपत्ति आदि ऐसी ही स्थितियाँ हैं। हर व्यक्ति इन सभी स्थितियों को प्राप्त करने का आकांक्षी होता है, शायद ही कोई व्यक्ति हो, जो इन चीजों के पीछे न दौड़ता हो।

परन्तु ये चीजें ऐसी हैं, कि ये जितनी भी मिलें फिर भी कम लगती हैं, व्यक्ति संतुष्ट नहीं हो पाता है, वह मद्यपी की भांति और.... और.... चिल्लाता रहता है। ऐसी दशा में वह इन चीजों को प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार के हथकंडे का प्रयोग करने में नहीं चूकता और उसकी ओर अग्रसर हो जाता है। क्रोध, हिंसा, लालच, कपट, मक्कारी उसके ऊपर हावी हो जाते हैं और वह अधिक से अधिक इन चीजों को प्राप्त करता ही चला जाता है.... लेकिन व्यक्ति बाह्य जीवन के साथ ही साथ यदि आंतरिक जीवन को भी जोड़ दे, तो उसका जीवन संपूर्ण हो सकता है।

जीवन का यहां अर्थ है–उन सब उपलब्धियों से, जिन्हें उपलब्ध करने के लिए व्यक्ति को अंदर की ओर यात्रा करनी पड़ती है और प्रेम, करुणा, अहिंसा, सद्‌वृत्ति आदि ऐसी ही कुछ आंतरिक उपलब्धियाँ हैं, जिन्हें व्यक्ति बाह्य उपलब्धियों के साथ-साथ भी प्राप्त कर लेता है तो फिर वह कभी अति की ओर नहीं जाता... आप स्वयं ही सोचिए, क्या करुणापूर्ण व्यक्ति हिंसक हो सकता है? कपटी हो सकता है? लालची हो सकता है? क्या वह अंधाधुंध धन के

जिस प्रकार से केवल बाह्य जीवन पूर्ण नहीं है, वैसे ही अकेले आंतरिक जीवन भी अपूर्ण है, क्योंकि करुणा से, किसी भी स्थिति में संतुष्टि से या केवल अहिंसा से घर नहीं चलाया जा सकता। असल में तो इन दोनों स्थितियों का योग ही संपूर्णता प्रदान कर सकता है। शांत चित्त एवं संतुष्ट मन के साथ ऐश्वर्य भोगने की कला दे सकता है और ऐसे निष्कंप चित्त के साथ, व्यक्ति भोगों में रहता हुआ भी अपनी सभी बाह्य तथा आंतरिक इच्छाओं को पूर्ण कर लेता है; वही आखिर में इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार भी जा सकता है... और यह संपूर्ण योग प्राप्त हो सकता है–राजयोग साधना के माध्यम से...
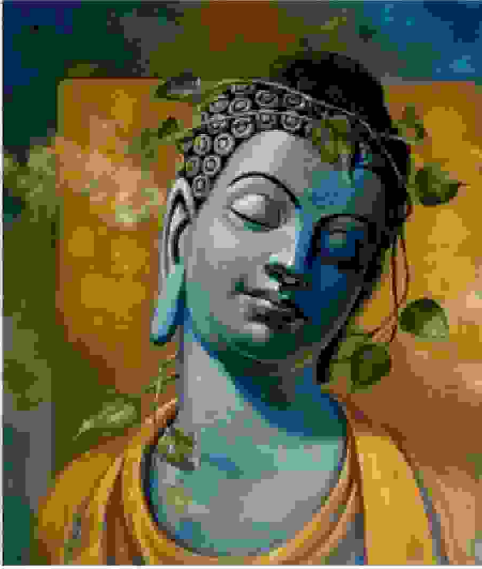
पीछे भाग सकता है?

जिस प्रकार से केवल बाह्य जीवन पूर्ण नहीं है, वैसे ही अकेले आंतरिक जीवन भी अपूर्ण है, क्योंकि करुणा से, किसी भी स्थिति में संतुष्टि से या केवल अहिंसा से घर नहीं चलाया जा सकता। असल में तो इन दोनों स्थितियों का योग ही संपूर्णता प्रदान कर सकता है। शांत चित्त एवं संतुष्ट मन के साथ ऐश्वर्य भोगने की कला दे सकता है और ऐसे निष्कंप चित्त के साथ, व्यक्ति भोगों में रहता हुआ भी अपनी सभी बाह्य तथा आंतरिक इच्छाओं को पूर्ण कर लेता है; वही आखिर में इच्छाओं के पार, कामनाओं के पार भी जा सकता है... और यह संपूर्ण योग प्राप्त हो सकता है–राजयोग साधना के माध्यम से...

अर्थात् हम उन सभी तथ्यों को अनुभव करें, जो हमारे 'स्व' से सम्बन्धित हैं, सम्बन्ध बनाने के लिए सिर्फ धर्म के उपदेशों से कार्य नहीं हो सकता, क्योंकि सिर्फ लोगों की बातें सुनकर उनके अनुसार चलना जीवन नहीं है, अपितु हम जो भी करें अपने साधना बल से प्राप्त करें, अपने पुरुषार्थ से प्राप्त करें। सम्पूर्णता से जीवन का निर्वाह करना भी एक प्रकार की साधना है।

राजयोग साधना 31.12.20 को (गुरु पुष्य योग में रात्रि 7.50 से प्रात: 7.30 के मध्य) या किसी भी सोमवार से प्रारम्भ करें। प्रात: उठकर, स्नान आदि कर स्वच्छ सफेद धोती तथा गुरु पीताम्बर धारण करें और सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुख कर बैठें। 'पूर्णता प्रदायक यंत्र' अपने सामने बाजोट पर पुष्प बिखेर कर उस पर स्थापित करें, उसके सामने भोग व मोक्ष के प्रतीक रूप में घी के दो दीपक लगाएं, अक्षत, फूल, दीपक, गंध, कुंकुम से पंचोपचार पूजन करें और फिर गुरु मंत्र की चार मालाएं जपें। इसके पश्चात् कोई अधूरी इच्छा हो तो वह बोलें, फिर यंत्र के समक्ष निम्न मंत्र का जप करते हुए कुंकुम और अक्षत मिलाकर सोलह बार चढ़ाएं–

गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्यं सुगोपिताम्।
तत्रापि मंत्रं दिव्यं दुर्लभं भुवनत्रये।।
मंत्रं वास्तवमेकं वा यः जपेत्प्रयतः शुचिः।
तस्य सर्वार्थ सिद्धिः स्वाच्छङ्करेण प्रभाषितम्।।

फिर 'पूर्णमदः माल्य' से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ ह्रीं त्रीं पूर्णत्वं स्वात्म सिद्धये ॐ नमः।।

Om Hreem Treem Poornnatvam Svaatma Siddhaye Om Namah

यह साधना वस्तुतः अनिवर्चनीय है, यह साधना व्यक्ति के जीवन को पूर्णरूपेण बदल देती है, नवीनीकरण हो जाता है और वह आगे का जीवन संपूर्णता के साथ जी पाता है। यह साधना छोटी अवश्य है, परन्तु जीवन की सर्वश्रेष्ठ साधना है। साधना के उपरान्त साधक सभी पूजन सामग्री माला तथा यंत्र को जल में विसर्जित कर दें एवं नित्य उपरोक्त मंत्र का पांच मिनट मंत्र जप करता रहा।

साधना सामग्री पैकेट– 450/–

सबसे कठिन काम है साधना में सफलता प्राप्त करना और यदि साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती है, तो जीवन में निराशा, वेदना और बिखराव पैदा हो जाता है परन्तु प्रत्येक साधना के लिए अलग-अलग विधियां बताई गई हैं, और उस विधान में जरा सी भी चूक असफलता को जन्म देती है। लेकिन अब आप असफलता को अपने जीवन के शब्दकोश से मिटा सकते हैं, इन तथ्यों को अपने जीवन में उतार कर....

हमारे इतिहास में शंकराचार्य जैसा व्यक्तित्व नहीं हुआ। केवल बत्तीस साल की अवस्था में उन्होंने चार स्थानों पर मठ स्थापित कर दिये। शंकर मत और शंकर भाष्य को आज भी लोग नहीं समझ पाये, कि इसमें कितनी गूढ़ विवेचना है।

मेरे मन में भी बड़ी छटपटाहट है, कि उस शंकर भाष्य को उन्हीं शब्दों में वापिस लिखूं, सरल भाषा में, जो शंकराचार्य के मन की बात थी। गीता में कृष्ण क्या कहना चाहते थे, आने वाली पीढ़ी ने उनका अर्थ तो किया मगर मन की बात नहीं समझ पाये।

किसी भी साधना में आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं

इस साधना के माध्यम से

अर्थ एक अलग चीज है। वह क्या कहना चाहता है, यह एक अलग चीज है। मन के भावों को व्यक्त करने में शब्द कभी-कभी असमर्थ हो जाते हैं। जब राम, सीता के स्वयंवर में गए और लक्ष्मण के साथ पुष्प वाटिका में घूम रहे थे, उसी समय सीता गौरी की पूजा करने गई थी। राम ने एक क्षण के लिए सीता को देखा और तुलसी ने चौपाई में लिखा-'गिरा अनयन नयन बिनु बानी' कि जिह्वा बहुत कुछ कहना चाहती है, मगर आंखें नहीं हैं, जिह्वा बोल सकती है, पर देख नहीं सकती और आंखें देख सकती हैं, मगर उनके पास वाणी नहीं है, वे कुछ बता नहीं सकतीं।

ठीक इसी प्रकार से शंकर क्या कह रहे थे वह हम समझ नहीं पाये, वे समझा भी नहीं पाये। शायद कुछ क्षण मिले, तो शंकर भाष्य का एक सही चिन्तन दे सकूं, गीता का सही चिन्तन दे सकूं। मगर वह तो जैसा गुरुदेव चाहेंगे, प्रभु चाहेंगे, वैसा ही हो पायेगा। मेरे पास है एक ज्ञान है एक चेतना है और उस चेतना पर, ज्ञान पर, अपने आप पर बहुत बहुत ही गर्व है। पूरे ब्रह्माण्ड को तो गर्व है ही, पर मुझे भी गर्व है, कि मेरे पास साधनात्मक ज्ञान है।

मगर यह सब ज्ञान राख में न बदल जाये, वह ज्ञान, अपने आपमें एक जीवित जाग्रत कृति बन सकती है। शंकराचार्य बत्तीस साल की अवस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो गये, बत्तीस सालों में उन्होंने अत्यधिक तकलीफें झेलीं और उनकी मृत्यु हुई उनके ही शिष्य के द्वारा, शिष्य ने ही उनको कांच घोट कर पिला दिया और केदारनाथ के पास उनकी मृत्यु हो गई।

और उसके बाद अन्तिम समय में शंकराचार्य ने कहा, कि 'शिष्य' शब्द अपने आपमें अत्यन्त घटिया और तुच्छ शब्द है। अगर शिष्य ही गुरु को मार दें, गुरु को गाली देना तो बहुत बड़ी बात है, गाली सोचना भी बहुत बड़ा पाप है और अपने स्वार्थ के लिए पादपद्म जैसा कोई घटिया शिष्य गुरु को समाप्त कर दे, ऐसा अधम शिष्य इस पृथ्वी पर कोई दूसरा नहीं हो सकता।

इससे 'शिष्य' शब्द अपने आप में एक गाली बन गया है। मैं शंकराचार्य के उस वक्तव्य को सुधारना चाहता हूं, मैं बताना चाहता हूं, कि शिष्य शब्द अपने आप में बड़प्पन का शब्द है, उच्चता का शब्द है।

ऋषि, मुनि, योगी, यति बेकार है, व्यर्थ हैं, जो कन्दराओं में जा कर बैठ गये हैं। उनको आना चाहिए, आग में जलना चाहिए, तपना चाहिए, खून जलाना चाहिए, मगर इन लोगों को ज्ञान तो देना ही चाहिए।

शिष्य शब्द घटिया नहीं है। कोई जरूरी नहीं है कि सभी पादपद्म बनेंगे, हो सकता है, कि उसमें कोई स्वार्थी हो। मगर इन शब्दों से उनकी पीड़ा झलक रही है। शंकराचार्य उस पीड़ा को लेकर चले गये, वेदना लेकर चले गये। शायद दस साल और जीवित रहते, तो दो-चार शंकर भाष्य जैसे उच्चकोटि के ग्रंथ लिखे जा सकते थे। उनके होठों पर ये शब्द नहीं आते, कि शिष्य घटिया, अधम शब्द है। मगर यह पांच सौ वर्ष तक घटिया, अधम शब्द बना रहा। मैं अपने जीवन में उस शब्द को सुधारना चाहता हूं, कि शिष्य जैसा कोई उच्चकोटि का शब्द ही नहीं है, वह अपने ही हृदय का रक्त और अंश है। ऐसा ही प्यार आपसे मुझे चाहिए।

वे लोग धन्य हैं, जिन्होंने अपने जीवन में शंकराचार्य के चरणों का स्पर्श किया था। वे वास्तव में हजारों-हजारों देवताओं से भी ज्यादा अद्वितीय हैं, जिनका शरीर शंकराचार्य के शरीर से जुड़ा होगा, जिनके हृदय की धड़कन जुड़ी होगी, जिनके प्राणों के सम्बन्ध जुड़े होंगे, जिन-जिन के सम्बन्ध उनसे जुड़े होंगे, वास्तव में उनके जैसा सौभाग्यशाली तो दूसरा कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता क्योंकि एक लोहा पारस से स्पर्श करेगा, तो एकदम कुन्दन बन जायेगा, सोना बन जायेगा, एक लकड़ी का टुकड़ा, बबूल का टुकड़ा भी यदि चन्दन से रगड़ खायेगा, तो अपने आपमें सुगन्ध युक्त बन जायेगा।

मैं फिर कह रहा हूं, कि वे ऋषि, मुनि, योगी, यति बेकार है, व्यर्थ हैं, जो कन्दराओं में जा कर बैठ गये हैं। उनको आना चाहिए, आग में जलना चाहिए, तपना चाहिए, खून जलाना चाहिए, मगर इन लोगों को ज्ञान तो देना ही चाहिए।

शंकराचार्य ने एक श्लोक में बहुत ही उच्चकोटि की एवं बहुत अच्छी बात कही है, जिसे समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा, कि गुरु और सिद्धि दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं, जहां गुरु हैं वहां सिद्धि है, सफलता है, जहां सिद्धि है, सफलता है, वहां गुरु हैं। दोनों में अन्तर नहीं किया जा सकता। अन्तर तब होता है, जब गुरु-शिष्य के बीच में अन्तर होता है और यदि अन्तर है, तो गुरु उसे मिटाये, जो शिष्य को ज्ञात नहीं है। यह अंतर है या नहीं, और है तो कैसे मिट सकता है - इसे उन्होंने गुरु पर ही छोड़ दिया। उन्होंने गुरु को भी बांधने की कोशिश की है, केवल शिष्य पर ही भार नहीं डाला है। उन्होंने यह कहा है, कि गुरु का धर्म है, कि वह शिष्य की न्यूनता समाप्त करे और शिष्य का धर्म है कि वह समर्पण भाव से गुरु आज्ञा पालन करते हुये सेवारत रहे।

शंकराचार्य कहते हैं, कि शिष्य की गलती नहीं है, क्योंकि वह तो एक हाड़-मांस का पुतला है, उसमें प्राण तो अभी तक नहीं आ पाया है। उसे सफलता देना गुरु का कर्त्तव्य है। अंतिम क्षण तक गुरु शिष्य को सफलता प्रदान करे थप्पड़ मार करके भी उसको सफलता दिलाये, प्यार करके भी सफलता दिलाये, मगर शिष्य को सफलता दिलाये। यह गुरु का धर्म है, यह गुरु का कर्त्तव्य है।

क्योंकि उसके थप्पड़ मारने में भी एक प्यार होता है, गाली देने में भी एक प्यार होता है, वह एक मधुरता होती है, क्रोध युक्त गाली नहीं होती। कबीर ने कहा कि ''गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट, भीतर-भीतर सहजि के बाहर-बाहर चोट।'' एक छोटी सी मटकी होती है, उसको बाहर से चोट पहुंचाता है कुम्हार और अंदर हाथ लगाये रखता है और धीरे-धीरे उसको घड़ा बना देता है। उसको मालूम है, कि मैं ठोक रहा हूँ, मगर अंदर वह सहेजता रहता है मैं आपको अन्दर से सहेज रहा हूँ, ऊपर से फटकारता हूँ, डांटता हूँ, मगर उसमें भी प्यार है। आपको डांटने और फटकारने, पुचकारने में मुझे कोई आनन्द नहीं है, मगर मैं चाहता हूँ, कि आपको सफलता मिले।

साधकों को कई बार मंत्र देने के बाद भी सफलता नहीं मिलती। जब नहीं मिलती है, तो

सेज

एक दासी रोज अपनी रानी की सेज बिछाया करती, खूब सजाकर। एक दिन उसकी इच्छा हुई कि खुद उस पर लेटकर देखे। लेटने पर उसे नींद आ गयी। इसी बीच रानी आ गयी। वह दासी को सेज पर सोयी देख आग-बबूला हो गयी। दासी को झकझोरकर जगाया। वह बेचारी डर से थर-थर काँपने लगी। रानी ने उसे कोड़े लगाने शुरू कर दिये। दासी पहले तो रोयी-चिल्लायी। बाद में जोर से हँसने लगी। रानी को इससे बड़ा ताज्जुब हुआ। उसने उसने हँसने का सबब पूछा। दासी बोली–''रानीजी, मैं एक दिन थोड़ी देर के लिए इस पलंग पर सो गयी तो मुझ पर ऐसे कोड़े पड़ रहे हैं, लेकिन इस पर रोज सोने वाली की न जाने क्या हालत होगी-यही सोचकर मुझे हँसी आ गयी।''

वे हताश और निराश हो जाते हैं। भले ही वे होठों से नहीं कह पाते, मगर मन में निराश और हताश हो जाते हैं, कि यह मंत्र गलत है या शास्त्रों में कहीं हुई बात गलत है या मैं गलत हूँ। कहां न्यूनता हो जाती है? वह भ्रमित हो जाता है, गुरु से कह नहीं पाता। कहीं-कहीं उसकी मजबूरी हो जाती है, कि मैं गुरु से कैसे कहूं। मगर गुरु को आगे बढ़ कर कहना चाहिए, कि तुम्हारे अंदर यदि न्यूनता आ रही है, तो उस न्यूनता को काटना और सफलता देना मेरा धर्म है, गुरु के रूप में कर्त्तव्य है।

अब दोनों विरोधाभास को मिटाने के लिए क्या किया जाए? यह एक कठिन क्रिया है। यदि मैं कहूं, कि तुम्हें इस प्रकार से आसन पर बैठना होना पड़ेगा और ग्यारह माला जप करना पड़ेगा, लेकिन तुम आठ माला के बीच में ही उठ जाओगे, कि छोड़ो अब आठ माला ही बहुत है, आकाश में तो उड़ने से रहे, अर्थात् तुम अपने आप में निराश और हताश हो जाते हो।

जब हनुमान जी लंका गए, तो कोई हवाई जहाज पर बैठ करके तो गए नहीं, वे तो उड़ कर गए। वे कैसे चले गए थे? अब या तो वह शास्त्र गलत है या फिर हम गलत हैं। वायु वेग के माध्यम से भी आदमी गमनशील हो सकता है, होता है। आज से पचास साल पहले विशुद्धानन्द जी ने भी यह क्रिया करके दिखाई। मगर उसके बाद विशुद्धानन्द जी ने बहुत तकलीफें पाईं, एक मिनट भी चैन से नहीं बैठ सके। उनके घर में जो भी शिष्य आता वह बार-बार प्रदर्शन करने के लिए कहता। उन्होंने एक बार कहा था मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी, कि यह क्रिया इनको दिखा दी।

इसलिए सबसे ज्यादा जरूरी है साधना को प्राप्त करना और उससे भी ज्यादा जरूरी है साधना में सफलता प्राप्त करना। तुमने मेरे साथ रह कर कम से कम सौ साधनाओं में भाग लिया होगा, पचास साधनाओं में भाग लिया होगा या साठ साधनाओं में भाग लिया होगा। साठ साधनाएं तो मैंने तुम्हें बताई होंगी और उसमें से कुछ साधकों को सफलता मिली, कुछ साधकों को नहीं मिल पाई।

फिर प्रश्न यही उठता है, कि क्या कोई ऐसी युक्ति नहीं है, कि तुम्हें एक बार में ही सफलता मिल जाये?

इन दो दिनों मैंने आपको उच्चकोटि की साधना दी और आपने बहुत गहराई के साथ प्राप्त की। मुझे विश्वास है, कि आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे ही। हो सकता है कि एक क्लास में पचास लड़के बैठे हों, उसमें से बीस पास हो जायें और तीस फेल हो जायें। मगर उनके फेल होने में उस अध्यापक की भी गलती है, शिष्य की तो गलती है ही, लड़के की तो गलती है ही।

मैं आपकी मजबूरी को समझ रहा हूँ, कि साधना करते हैं और सफलता नहीं मिलती। अगर नहीं मिल पाती, तो इसमें तुम्हारी गलती तो है ही, क्योंकि जहां श्रद्धा नहीं है, जहां समर्पण नहीं है, जहां आत्म निवेदन नहीं हैं, जहां न्यूनता है, वहां असफलता तो होगी ही। किन्तु सफलता नहीं मिल पाती, तो गुरु उस रास्ते को दिखा दे, जिस पर चल कर न्यूनताओं को हटाते हुए सफलता प्राप्त की जा सकती है। विश्वामित्र ने इस प्रकार के मंत्र की रचना की, ब्रह्माण्ड की रश्मियों के माध्यम से की और उन्होंने कहा कि इस मंत्र के, इस साधना के माध्यम से पिछली जितनी भी साधनाएं शिष्य ने की हैं, उन साधनाओं में भी उसे पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है।

मैं चाहता हूँ कि इस प्रयोग से आप सफलता प्राप्त करें। जीवन में बाधाएं अड़चनें आएं और उनको पार करें, और जीवन की श्रेष्ठता, जीवन की उच्चता प्राप्त कर सकें।

साधना विधान

यह प्रात: कालीन साधना है। इसमें 'साधना सिद्धि यंत्र' एवं 'ब्रह्मणु माला' की आवश्यकता होती है। मुसलमान जैसे नमाज पढ़ते हैं उस ढंग से आप बैठ जायें, घुटने टेक करके। 'साधना सिद्धि यंत्र' को अपने सामने बाजोट पर स्थापित कर दें और माला नीचे रख दें, यंत्र को जल से स्नान करायें।

स्नान के उपरांत यंत्र को पोंछ दें, उसके बाद में यंत्र के ऊपर सात बार कुंकुम से तिलक करें। फिर निम्न मंत्र का इक्कीस माला जप करें –

मंत्र

।। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मंत्र सिद्धिं क्लीं श्रीं ह्रीं फट् ।।

Om Hreem Shreem Kleem Sampurna Brahmand Mantra Siddhim Kleem Shreem Hreem Phat

इस मंत्र का जप केवल प्रात:काल में ही होता है, रात्रि को इसका जप नहीं कर सकते। यह पांच दिवसीय साधना है। पांच दिन के बाद यंत्र और माला को किसी नदी, तालाब या जलाशय में विसर्जित कर दें।

मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ, कि इस साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त आपको साधना में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त हो। ऐसा ही मैं आपके आशीर्वाद देता हूँ।

यह साधना पुराने अंक में सद्गुरुदेव के आशीर्वाद के साथ प्रकाशित हुई थी। बहुत से साधकों को इसके अनुकूल परिणाम मिले थे। आप यह साधना अवश्य सम्पन्न करें।

न्यौछावर – 510/-

सूर्य साधना से सप्त सिद्धियां

सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती, सूर्य ही वह परम तत्त्व है, जो कि संसार के समस्त तेज, दीप्ति और कान्ति के निर्माता तथा इस जगत की आत्मा कहे गये हैं, सूर्य ही वह विराट पुरुष, आदि देव हैं, जिनकी साधना-उपासना से समस्त रोग, नेत्र-दोष और ग्रह-बाधा दूर होती है, क्योंकि सूर्य ही अपनी शक्ति न केवल पृथ्वी को अपितु चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि को उचित मात्रा में प्रदान कर इस सृष्टि का संचालन करते हैं।

सूर्य के सम्बन्ध में 'शिव पुराण' में लिखा है कि'

आदित्यं च शिवं विद्याच्छिवमादित्यरूपिणम्।
उभयोरन्तरं नास्ति ह्यादित्यस्य शिवस्य च।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्र एव हि भाष्करः।
त्रिमूर्त्यात्मा त्रिवेदात्मा सर्वदेवमयो रविः।।

अर्थात् सूर्य एवं शिव में कोई भेद नहीं है, और ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र, सूर्य के ही अभिन्न अंग स्वरूप हैं, सूर्य में ये तीनों देव स्थित हैं।

सूर्य तत्व से

त्वचा रोग, नेत्र रोग तथा
पेट सम्बन्धी बीमारियां दूर होती हैं
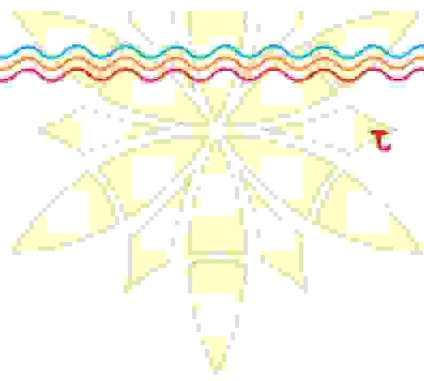
वैज्ञानिक रीति-नीति से विवेचन करने पर यह स्पष्ट है, कि यदि किसी पौधे को कुछ दिनों के लिए अन्धकार में जहां सूर्य का प्रकाश बिल्कुल ही न पहुंचे, वहां रख दिया जाय, तो वह पौधा मृत हो जायगा, यही स्थिति मनुष्य की है। यदि मनुष्य को सूर्य-तत्व निरन्तर प्राप्त न हो तो उसे विभिन्न प्रकार के त्वचा-रोग, नेत्र-रोग तथा पेट सम्बन्धी बीमारियां हो जाती हैं।

सूर्य के सम्बन्ध में विवेचना करने पर यह स्पष्ट है, कि सूर्य जीवन के सभी रंगों का जनक है। सभी रंग, सूर्य-किरणों का प्रभाव पा कर ही अपना स्वरूप प्रकट करते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि उदय और अस्त होते हुए सूर्य का ध्यान, आराधना करने वाला व्यक्ति ही ब्राह्मण है और वह सभी प्रकार का कल्याण-आशीर्वाद प्राप्त करता है।

ज्योतिष और सूर्य

सूर्य ग्रहराज हैं और कभी वक्री नहीं होते, सदैव मार्गी ही रहते हैं, सिंह राशि के स्वामी हैं और स्थिर स्वभाव के, क्षत्रिय वर्ण, विद्या, व्यक्तित्व, तेज, प्रभाव, स्वाभिमान के कारक ग्रह हैं। सूर्य के चन्द्र, मंगल, बृहस्पति मित्र ग्रह तथा शुक्र, शनि शत्रु ग्रह हैं। सूर्य सभी ग्रहों के दोष-प्रभाव का शमन कर सकते हैं परन्तु शनि, जो कि सूर्य पुत्र माने गये हैं, सूर्य बल को स्पष्ट करने में समर्थ रहते हैं।

सूर्य उपासना

सूर्य के सम्बन्ध में शास्त्रों में इतना अधिक महत्व एवं साहित्य लिखा है, कि इस छोटे से लेख में वह सब वर्णन सम्भव ही नहीं है। सूर्य प्रत्येक व्यक्ति के तेज, व्यक्तित्व का जनक है और अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने हेतु अपने जीवन के अर्थ को प्राप्त करने हेतु, अपनी इन्द्रियों को तीव्र प्रभावयुक्त बनाने हेतु, वाणी में ज्ञान देने हेतु, अपने शरीर को रोग-रहित करने हेतु, सूर्य की साधना-उपासना आश्यक है।

सूर्य ही समस्त जगत का प्रकाशक एवं आत्मा है। उसकी किरणें सभी ज्ञात-अज्ञात पदार्थों में जीवन प्रदान करती रहती है और सभी वनस्पतियाँ सूर्य के कारण ही मनुष्य के लिए योग्य हैं, इसीलिए सूर्य की उपासना का महत्व है, सूर्य साकार स्वरूप है, जिसे सभी पूजन में सर्वप्रथम अर्घ्य अर्पित किया जाता है, इसके पश्चात् ही दूसरे देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है।

जिस व्यक्ति में सूर्य-तत्व समाप्त हो जाता है। वह व्यक्ति इस जीवन में एक व्यक्तित्वहीन कीड़े के समान है, जिसके जीवन का कोई महत्व ही नहीं है और न ही वह व्यक्ति अपने जीवन में कुछ कर सकता है।

सूर्य में जितनी रोगनाशक शक्ति है, वह संसार के किसी अन्य पदार्थ में है ही नहीं। महान दार्शनिक अरस्तु का कथन है, कि जब तक संसार में सूर्य विद्यमान है, तब तक दवाओं में भटकना व्यर्थ है, क्योंकि सूर्य ही शक्ति, सौन्दर्य और स्वास्थ्य का केन्द्र है।

गायत्री उपासना – सूर्य उपासना

गायत्री उपासना-सूर्य की ही उपासना है। गायत्री मंत्र में हम उस परब्रह्म सूर्य देव को और उनके तेज का ध्यान करते हैं, जो कि हमारी बुद्धि को प्रेरित कर, ध्यान और आनन्द की ओर संचारित करें। इस प्रकार जो गायत्री का साधक है, वह सूर्य का उपासक-साधक है और नित्य प्रति गायत्री मंत्र का जप कर, अनुष्ठान कर, उसमें अपने जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करने वाले साधकों की संख्या लक्ष-लक्ष है। शंकराचार्य ने 'संध्या भाष्य' में गायत्री मंत्र की व्याख्या करते हुए सूर्य का ही वर्णन किया है, कि—''इस सम्पूर्ण जगत की आत्मा सूर्य ही हैं, और सभी प्राणियों में जीवन-स्वरूप, प्राण-स्वरूप और सुख देने वाले उत्पादक सूर्य ही श्रेष्ठ स्वरूप और तेज प्रदान करने वाले हैं, सूर्य ही बुद्धि और तेज का विकास करते हैं।''

सूर्य पूजा साधना

स्वास्थ्य और तेज के आदि देव सूर्य की साधना-उपासना का न केवल भारतीय साधना साहित्य में अपितु स्वास्थ्य साहित्य में भी विस्तृत वर्णन दिया गया है। योग साधनाओं में तो योग क्रियाओं को करने से पहले सूर्य नमस्कार का वर्णन है, जिसके पीछे मूल भावना यही है, कि रजोगुण, तत्व गुण और तपोगुण स्वरूप सूर्य, आप मेरे अन्दर स्थित हो कर अपना कुछ स्वरूप मुझे दे दें, जिससे मेरे शरीर की सभी इन्द्रियां तेजोमय हो जाय, और इस तेज के प्रभाव के कारण रोग, शोक मुझसे दूर रहें, मेरे न केवल बाहरी नेत्रों की दृष्टि का विकास हो अपितु भीतरी नेतृत्व अर्थात् आन्तरिक तेज भी इतना अधिक विकसित हो जाय कि मेरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही तेजस्वी हो जाय।

सूर्य ही समस्त जगत का प्रकाशक एवं आत्मा है। उसकी किरणें सभी ज्ञात-अज्ञात पदार्थों में जीवन प्रदान करती रहती है और सभी वनस्पतियाँ सूर्य के कारण ही मनुष्य के लिए योग्य हैं, इसीलिए सूर्य की उपासना का महत्व है, सूर्य साकार स्वरूप है, जिसे सभी पूजन में सर्वप्रथम अर्घ्य अर्पित किया जाता है, इसके पश्चात् ही दूसरे देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है।

जिस व्यक्ति में सूर्य-तत्व समाप्त हो जाता है। वह व्यक्ति इस जीवन में एक व्यक्तित्वहीन कीड़े के समान है, जिसके जीवन का कोई महत्व ही नहीं है और न ही वह व्यक्ति अपने जीवन में कुछ कर सकता है।

सूर्य में जितनी रोगनाशक शक्ति है, वह संसार के किसी अन्य पदार्थ में है ही नहीं। महान दार्शनिक अरस्तु का कथन है, कि जब तक संसार में सूर्य विद्यमान है, तब तक दवाओं में भटकना व्यर्थ है, क्योंकि सूर्य ही शक्ति, सौन्दर्य और स्वास्थ्य का केन्द्र है।

पूजा विधान

सूर्य साधना में लाल रंग का विशेष महत्व है। इस साधना में ताम्रपात्र में जल, लाल चन्दन, लाल रंग के पुष्प, विशेष आवश्यक हैं। सूर्य साधना, साधक प्रतिदिन नियमपूर्वक प्रात: कुछ समय के लिए ही करें तो आयु वृद्धि, आरोग्य, तेज, यश, कान्ति, वैभव और सौभाग्य प्राप्त होता है। सूर्य उपासना में सबसे अधिक विशेष बात यह है, कि इससे साधक को जो मानसिक प्रसन्नता और उत्साह प्राप्त होता है। उसमें प्रतिदिन साधक अपने कार्यों को अत्यन्त जोश के साथ और आत्मविश्वास के साथ सम्पन्न करता है। रविवार के दिन साधक, सूर्योदय से पहले ही स्नान कर, शुद्ध लाल रंग के वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में अथवा सूर्य के समक्ष सूर्य यन्त्र को स्थापित कर उस पर रक्त चन्दन, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर, इसके साथ ही गुलाल तथा कुंकुम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में घोल कर दोनों ओर सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें कि-

"हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुखमण्डल, कमलनेत्र-स्वरूप वाले ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारण, आपको इस साधक का नमस्कार, आप मेरे द्वारा अर्पित कुंकुम, पुष्प एवं सिन्दूरयुक्त जल का अर्घ्य ग्रहण करें।"

इसके साथ ही ताम्र पात्र में जल की धारा को, अपने दोनों हाथों में पात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्घ्य दें और इसके पश्चात् मणिमाला से अपने पूजा-स्थान में स्थान ग्रहण कर पूर्व दिशा में सूर्य की ओर मुंह कर पांच माला निम्न सूर्य मन्त्र जप करें-

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नम: ।।

यह प्रयोग अत्यन्त कम समय में ही सम्पन्न हो जाता है और योग्य साधक तो इसे अपने प्रतिदिन के पूजा-विधान का अंग बनाकर सूर्य को प्रतिदिन अर्घ्य अवश्य ही अर्पित करते हैं।

साधना सामग्री-450/-

गुरुत्व दिवस : 16.12.20

निखिलेश्वरानन्द

पंचरत्न स्तवन

सभी शिष्यों को
गुरुत्व दिवस पर गुरु पूजन के समय
इस परम तेजस्वी पंचरत्न स्वतन का 5 पाठ अवश्य ही करना चाहिए

ॐ नमस्ते सते सर्व-लोकाश्रयाय,
नमस्ते चिते विश्व-रूपात्मकाय।
नमो द्वैत-तत्वाय मुक्ति-प्रदाय,
नमो ब्रह्मणे व्यापिने निर्गुणाय।।1।।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यम्,
त्वमेकं जगत्-कारणं विश्व-रूपम्।
त्वमेकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ,
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्।।2।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्,
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महौचैः पदानां नियन्तृ त्वमेकम्,
परेषां परं रक्षक रक्षकानाम्।।3।।

परेशं प्रभो सर्व-रूपाविनाशिन्,
अनिर्देश्य सर्वेन्द्रियागम्य सत्य।
अचिन्त्याक्षर व्यापकाव्यक्त-तत्व,
जगद् भासकाधीश पायादपायात्।।4।।

तदेकं स्मरामस्तदेकं जपामः,
तदेकं जगत्-साक्षि-रूपं नमामः।
तदेकं निधानं निरालम्बमी शम्,
भवाम्बोधि-पोत शरण्यं ब्रजामः।।5।।

पंच रत्नमिदं स्तोत्रं
ब्रह्मणः परमात्मनः।
यः पठेत् प्रयतो भूत्वा
ब्रह्म सायुज्य माप्नुयात्।।6।।

अर्थात् हे गुरुदेव! आप मेरे जीवन के आराध्य हो, आप नित्य हो, हे योगीराज! आप ज्ञान स्वरूप हो, विश्व की आत्मा स्वरूप हो, आप अद्वैत तत्व प्रदायक मुक्ति दायक आपको नमस्कार है, समस्त लोकों के आश्रय हो, आपको नमस्कार है, आप सर्वव्यापी निर्गुण ब्रह्म हो, सगुण रूप में आप हम समस्त शिष्यों के सामने उपस्थित हो, आपके नमस्कार है।

आप ही हम समस्त शिष्यों के एक मात्र 'शरण्य' अर्थात् आश्रय हो, आप इस संसार में हमारे लिए अद्वितीय वरणीय हो, आप ही समस्त सिद्धियों के एक मात्र कारण हो, आप विश्व रूप हो, आप के मुँह में और कण्ठ में सम्पूर्ण विश्व समाया हुआ है जिसे हमने कई बार अनुभव किया है। आप ही समस्त सिद्धियों के संसार के सृष्टि कर्ता, निर्माण कर्ता, पालन कर्ता और संहार कर्ता हो। आप निश्चल और विविध कल्पनाओं से रहित पूर्णता प्राप्त षोडश कला युक्त पूर्ण पुरुष हो, आपको हम शिष्यों का नमस्कार है।

आप भय के भी भय हो, आपके नाम का स्मरण करते ही भय समाप्त हो जाता है, आप विपत्तियों के लिए विपत्ती स्वरूप हो, आपको देखते ही या आपका नाम स्मरण करते ही हम लोगों की विपत्तियां समाप्त हो जाती है। हम सब शिष्यों की आप एक मात्र गति हो। आप पवित्रता के साक्षात् स्वरूप हो, उच्च पद पर जितनी भी महाशक्तियां है, आप उनके आधार स्वरूप हो, आप संसार के सभी श्रेष्ठ पदार्थों से प्रेरित हो, और रक्षकों के पूर्ण रूप से रक्षक हो, हम सब शिष्य आपको भक्ति भाव से प्रणाम करते हैं।

हे, तपस्वी, हे प्रभु, समस्त शिष्यों के हृदय में विराजमान अविनाशी रूप में रहते हुए, समस्त शिष्यों का कल्याण करने वाले और समस्त प्रकार की इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण करने वाले आप पूर्ण रूप से अगोचर होते हुए भी हम सब लोगों के सामने साक्षात देह रूप में उपस्थित हो। हे सत्य स्वरूप, हे अचिन्त्य, हे अक्षर, हे यापक, हे न कहने वाले तत्व, हे ब्रह्म स्वरूप, हे मेरे आराध्य, हे मेरे प्राणों में निवास करने वाले, हम समस्त शिष्य आपके चरणों में है, आप हमें अपनी भक्ति, अपना ज्ञान और अपना स्नेह प्रदान करें, हम आपको भक्ति भाव से प्रणाम करते हैं।

हम तो और किसी इष्ट को नहीं जानते, न तो हमें मंत्र का ज्ञान है, और न तंत्र का, न हमें पूजा विधि आती है और न साधना रहस्य, हम तो केवल गुरु मंत्र का जप करने में ही समर्थ है, पल पल पर आप द्वारा बिखेरी हुई माया से हम कई बार भ्रमित हो जाते हैं और आपको सामान्य मानव समझने की गलती कर बैठते हैं, आपको सामान्य मानव की तरह हंसते और उदास होते हुए देखते और विचरण करते हुए, कहते और सुनते हुए जब अनुभव करते हैं, तो हम सामान्य शिष्य भ्रम में पड़ जाते हैं और हमारा सारा ज्ञान उस एक क्षण के लिए तिरोहित हो जाता है। हम बार-बार जन्म लेते है, संसार के दुखों में संसार की समस्याओं और गृहस्थ की परेशानियों में डूबते उतरते हुए आपका भली प्रकार से चिंतन नहीं कर पाते, हमें और कुछ भी नहीं आता, हम तो केवल आतुर कण्ठ से 'गुरुदेव' शब्द का उच्चारण ही कर सकते हैं और इसी शब्द के माध्यम से आपके द्वारा सिद्धाश्रम प्राप्त कर पूर्ण ब्रह्म में लीन हो जाना चाहते है, हम तो केवल इतना जानते हैं, कि आप ही हमारे आश्रय भूत हो, आप ही हमारे जीवन के आधार हो, आप ही हमारे भव सागर के जहाज स्वरूप हो हम तो केवल आपका ही आश्रय ग्रहण करते हैं, और आपको हम सब श्रद्धायुक्त प्रणाम करते है।

जो इस पंचरत्न स्तवन का नित्य पाठ करता है, वह निश्चय ही समस्त विकारों से मुक्त होकर ब्रह्मस्वरूप गुरु चरणों में लीन होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। प्रति दिन इस स्तवन का पाठ करना चाहिए अथवा सोमवार और गुरुवार को तो निश्चय ही इसका पाठ कर बाद में ही अन्न जल ग्रहण करना चाहिए।

साधक

भारत की इस पवित्र भूमि पर अनेक दिव्यात्माओं का अवतरण होता रहा है

और उनकी साधना से इस भूभाग पर दिव्य प्रकाश की छटा छिटकती रही है, इससे समस्त भारत के लोगों को ज्ञान और अमृतमयी उपदेश प्राप्त होता रहा है।

ऐसे ही साधकों की श्रेणी में 'परमप्रकाशानन्द जी ओझा' थे। वैद्यनाथधाम के मठाधीश परिवार में इनका जन्म 1871 ई. में हुआ था। इनके पिता सदुपाध्याय शैलजानन्द ओझा थे, जो अपने समय के महान साधक थे, पिता से ही विरासत में इनको साधना की शिक्षा मिली।

इनका बचपन कड़ा ही कष्टमय था। इनके पिता के अनन्य मित्र पंचाननतर्क रत्न बराबर देवघर आया करते थे। इन्होंने इनकी आर्थिक अवस्था की जर्जरता को देखकर इन्हें माला-सिद्धि करने की शिक्षा दी, इसी समय से ये माला-सिद्धि में लग गये। एकांत साधना के लिये ये अपने गाँव बारा चले गये और यहीं माला-सिद्धि की उपासना में लग गये। प्रत्येक दिन आठ बजे रात को साधना में बैठते और ढाई बजे रात्रिपर्यन्त साधना करते थे। फिर प्रात:काल से नित्य नैमित्तिक कार्य में लग जाते थे।

एक दिन बारा गाँव में साधना करते समय इन्होंने स्वप्न देखा, कि भगवती इन्हें कामाख्या जाने का आदेश दे रही हैं, ये कामाख्या जाने की तैयारी में लग गये।

कामाख्या में श्री अभयकान्त पण्डा के यहाँ ये ठहरे थे। उस समय कामाख्या में सूर्यास्त के बाद तीर्थयात्री नहीं रहते थे, आरती के बाद सभी अपने-अपने गंतव्य स्थानों पर चले जाते थे, क्योंकि उस समय वहाँ हिंसक पशुओं का भय निरंतर बना रहता था। मंदिर की चाभी माली के पास रहती थी।
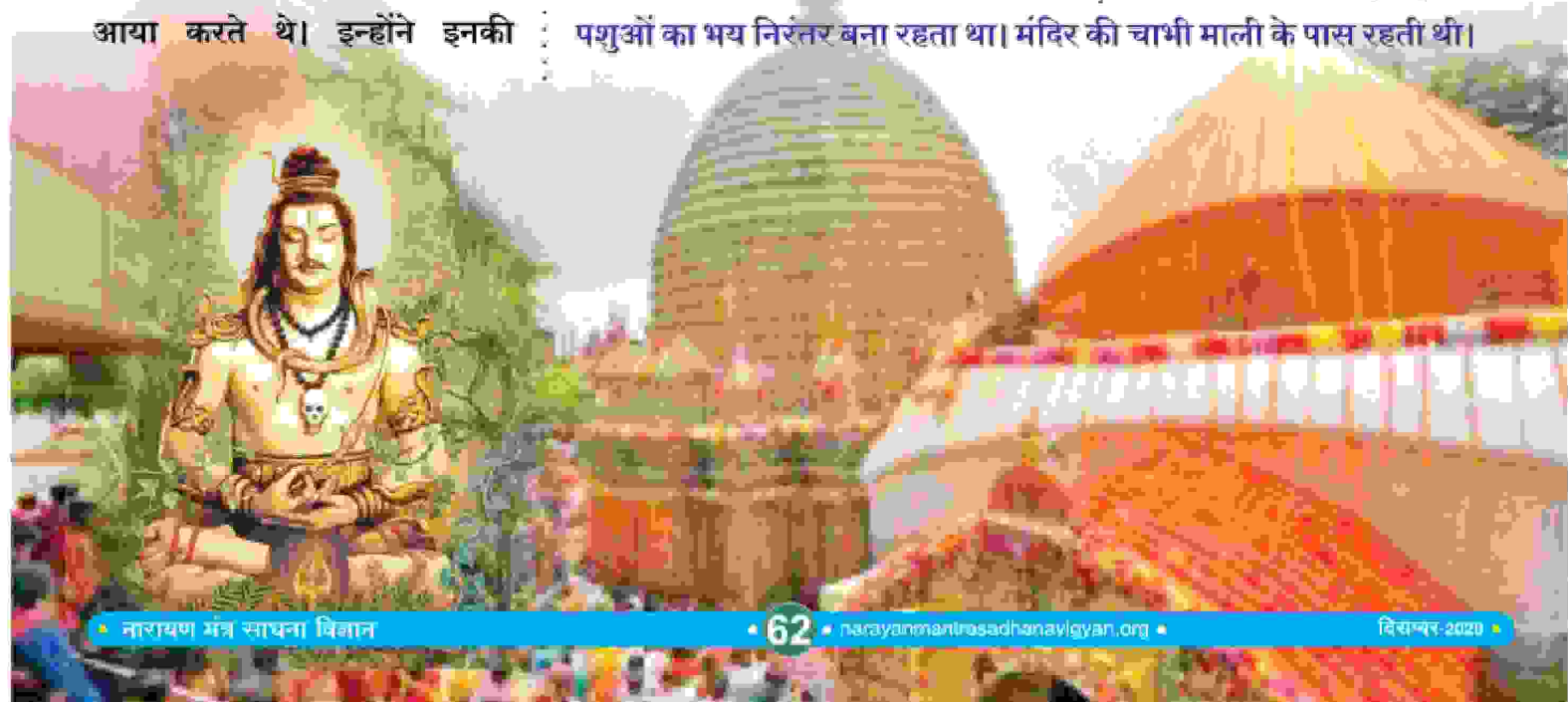
साधना सिद्धि के राजमार्ग पर चलते हुए जनहित कार्य करने की क्रिया आरंभ कर दी, जिससे उनके पास आये लोग अपनी समस्याओं का सहज समाधान प्राप्त कर सके।
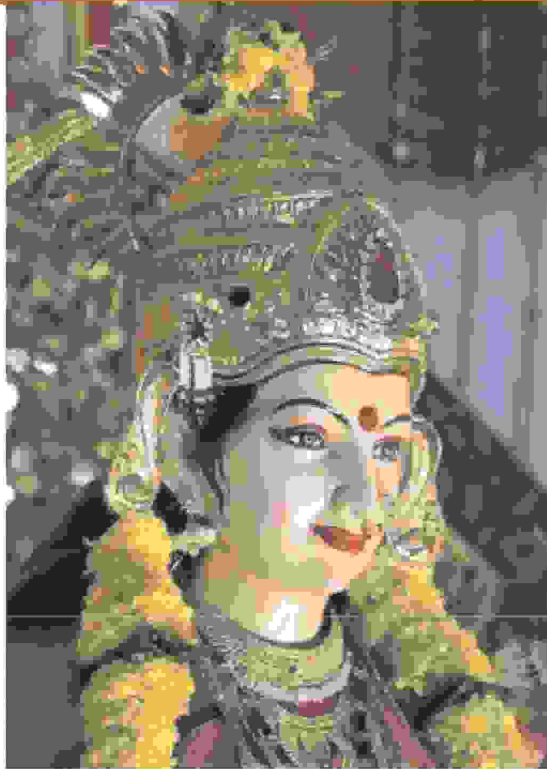
प्रकाशानन्द ने माली से साधना के उद्देश्य के संबंध में कहा, माली इनकी निष्ठा से अत्यंत ही प्रभावित था, वह राजी हो गया।

प्रत्येक दिन आठ बजे रात वे मंदिर में साधना करने बैठ जाते थे और दो बजे रात तक साधना में लीन रहते थे। इस प्रकार 28-29 दिनों तक उनकी साधना चलती रही।

एक दिन की बात है। बरसात का समय था, मूसलाधार वर्षा हो रही थी, बिजली चमक रही थी, ये मंदिर से निवास स्थान पर आये और निवास स्थान के रेलिंग से मंदिर की शोभा निहार रहे थे। ठीक उसी समय बिजली की चकाचौंध में इन्हें हठात् कुछ स्त्रियों के हाथ में मशाल दिखाई दिया - वे सभी हाथों में मशाल लेकर नाच रही थीं, उन नृत्यांगनाओं के बीच इन्हें एक अग्निपुंज दिखाई पड़ा, उस अग्निपुंज में इन्हें इष्ट देवी का दर्शन हुआ।

ये देवी के प्रकाशमान रूप को देखकर मूर्च्छित हो गये और गिर पड़े; जब चेतन हुए, तब नित्य-नैमित्तिक कर्म में लग गये, क्योंकि ब्रह्ममुहूर्त हो चुका था।

कामाख्या मंदिर में यज्ञ-हवन और कुमारी पूजन जैसे धार्मिक अनुष्ठान को सम्पन्न किया, जब ये मंदिर से लौट रहे थे, तब इन्हें एक कुमारी का दर्शन हुआ, जिसने याचना की - ''आमाके किछु दिले ना बाबा!''

उस समय उनके पास केवल एक रुपया शेष बच गया था, जो उन्होंने उस कुमारी कन्या को दे दिया। निवास स्थान पर आते ही उन्हें कलकत्ता के नगेन्द्रबाबू का मनीऑर्डर मिला। अब वे तत्कालीन आर्थिक चिंता से मुक्त हुए।

कामाख्या से ये मथुरा की ओर चल पड़े। मथुरा के विश्रामघाट पर ये घंटों बैठे रहते, विश्रामघाट का शांत वातावरण इनके साधक मन को सदैव आकर्षित करता था। यहाँ से वापस पुन: वैद्यनाथ धाम के निकट बारा गाँव में आकर रहने लगे।

बारा गाँव में रहते हुए भी इन्होंने अनेक साधनाएं सम्पन्न कीं। साधनाओं के कारण इनके चेहरे पर व्याप्त तेज की चर्चा धीरे-धीरे बहुत दूर तक फैल गई, जिसके कारण लोग इनके पास आकर अपनी समस्याओं के निराकरण प्रदान करने की प्रार्थना करने लगे, फलस्वरूप इन्होंने साधना सिद्धि के राजमार्ग पर चलते हुए जनहित कार्य करने की क्रिया आरंभ कर दी, जिससे उनके पास आये लोग अपनी समस्याओं का सहज समाधान प्राप्त कर सके।

वैद्यनाथ शक्तिपीठ है। परम प्रकाशानन्द ओझा ने साधना के गूढ़ रहस्यों को सदैव लोकहित के लिए उद्घाटित किया, आज भी इनके हजारों शिष्य भक्त हैं। इनके पुत्र साधक सत्यानन्द ओझा भी अपने पिता की तरह ही साधना मार्ग पर चलते रहे। इनकी वंश परम्परा में आज भी साधना की परम्परा वर्तमान है। स्वनाम-धन्य परम प्रकाशानन्द जी के शरीर का अंत 1959 ई. में हुआ। स्थानीय लोगों के बीच आज भी इनकी चर्चा होती रहती है।

(मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका से)

Navvarsh Sadhana

Hearing these words of greetings one is filled with a feeling of newness and life seems standing at another milestone, ready to fly off to a new start. The word "new" denotes change, something novel, something different and with it life braces itself for a transformation.

On the first day of the New Year everyone wishes for a good start, a good beginning so that whole year passes in constant progress and success.

This day is one of deep contemplation. Looking back one sees the previous year filled with its sad and happy, sweet and sour memories and turning one's eyes to the year lying ahead one beholds a fresh clean land in the horizon ready to be sown with the seeds of success.

Every person waits for twelve long months for this golden day to dawn, and the morning on which one hears the air ringing with the sweet greeting of Happy New Year, one knows that the day is here at least. Then one is filled with joy and enthusiasm to make a new start in life, to make new resolutions and embark on new start in life new projects.

Life is undoubtedly a path full of challenges, and one who faces these challenges fearlessly come out on the top as the winner. No one is born with a winner's streak in him. This spirit has to be developed through hard work and dedication. A mother is responsible for a child's growth, for it is she who introduces him to good or bad habits. Similarly we ourselves are responsible for the states we are in.

If we develop bad habits we are sure to suffer and life then seems miserable. But if a person is hard working, sincere and true to himself he is sure to progress in life.

The New Year presents a unique opportunity to instil a novelty, a change into one's life. The first day of New Year is in fact very auspicious and it matters a lot how you spend it. You may go to a bar or club and spend the New Year eve dancing, drinking and merry-making. But such escapades are not at all a source of true joy, for true joy is generated from within, for true joy is attained by tasting success in life.

In fact spending these auspicious moments thus is wasting a golden opportunity to transform your life.

The early hours of the New Year day present such sacred, auspicious moments when you can develop the power to concentrate your will, which shall then help you throughout the year to face all adversities fearlessly. And the best way to develop such power is to accomplish some Sadhana.

"Nav Varsh Unnati Prayog" is one such Sadhana practice through which you can instil totality into your life. By devoting only an hour or so in the early morning of the New Year day, you can instil all the 365 days of the Year with joy, enthusiasm and uniqueness, thus assuring success in all spheres of life. If you can't do it on the New Year day, you can try it on any day of Jan 2021.

Thus one can not only rise in material life but also attain spiritual accomplishment.

The special feature of this Sadhana practice is that it can be accomplished on the New Year day of any calendar ie. Christian, Vikram, Shaka or any other era. In

fact for every person his birthday is also the start of a new year of his life. Hence this Sadhana can be accomplished even on one's birthday.

The ancient sages used to spend the early hours of the New Year day, according to their date systems, engrossed in special Sadhanas to generate divine powers and concentrate them. These powers then they used throughout the year to accomplish other Sadhanas with zeal & enthusiasm. The time when the first rays of the sun appear on the horizon is said to be the best for this Sadhana.

SADHANA PROCEDURE

It's better to perform this Sadhana with the whole family for the good of all the members in the year ahead. Get up before the sun rise and take a bath. Wear fresh yellow clothes. The following articles should be kept ready beforehand — A copper tumbler filled with water, unbroken rice grains, vermilion, coconut, incense, a lamp, ghee, fruit, flowers, sweets and Itra (natural perfume).

Be seated with a peaceful mind on a worship-mat and before yourself place the picture of the Guru and a Trilokya Varsheshwar Yantra. Light incense stick and the lamp filled with pure ghee. Put a mark of vermilion on both and offer flowers, fruit and sweets. Place the coconut on a tumbler filled with water. Meditate upon the form of the Guru and then chant 5 rounds of the following Mantra with a Rock Crystal rosary (Sfatik).

OM HREEM AYEIM SHREEM PURNNA NAVVARSHA DHANDHAANYA SAMRIDDHI PURNNATVA DEHI DEHI NAMAH.

After the completion of the chanting offer the Yantra and rosary in the feet of some God in a temple.

Through this Sadhana the whole year shall be spent filled with joy and success. You shall acquire all attainments of a happy life like good health, wealth, prosperity and good fortune.

May this year prove to be a turning phase of your life and achieve joy, good luck and constant progress. Once again wishing you a very HAPPY NEW YEAR!

Sadhana Article- 510/-

25.12.2020

प्रवचन एवम् दीक्षा शिविर, राँची

शिविर स्थल, राँची

शिविर स्थल की जानकारी के लिए निम्न फोन नंबर पर संपर्क करें

9199409003, 9771602958, 7783009299, 7717732131, 8340317589, 8405800226, 9304404578, 9304404578, 7903113893, 9771354572

गणपति दीक्षा प्राप्त करना साधक के लिये कल्पवृक्ष के समान फलप्रदायक है। गणपति सभी प्रकार के भौतिक सुखों के प्रदाता, विघ्नहर्ता तथा ऋणहर्ता है। गणपति दीक्षा प्राप्त करने से साधक को समस्त भौतिक सुख-सम्पत्ति, समस्त नौ निधियां प्राप्त होती हैं। गणपति विद्या के आधार है, अत: वे अपने साधक को कुशाग्र बुद्धि प्रदान करते हैं और इसके साथ ही साथ ओंकारवत् होने के कारण अपने साधक को आध्यात्मिक रूप से भी परिपूर्ण करते हैं। गणपति के परिवार में ऋद्धि-सिद्धि और शुभ-लाभ हैं। अत: गणपति दीक्षा से घर में सम्पत्ति वृद्धि होती है। कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है। व्यापार में लाभ होता है तथा शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं। अत: गणपति दीक्षा कलियुग की सर्वश्रेष्ठ दीक्षा मानी गई है और इस बार नववर्ष शुरू होने से पहले यह दीक्षा प्राप्त होना श्रेष्ठ सौभाग्य है।

उपहारस्वरूप प्राप्त करें

शक्तिपात युक्त दीक्षा

योजना केवल 12, 13, 19, 20 दिसम्बर 2020 इन चार दिन के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप नि:शुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 64 पर देखें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें : **नारायण मंत्र साधना विज्ञान**

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन : 0291-2433623, 2432010, 7960039

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

- 1. यदि आप साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप निम्न वाट्सअप नम्बर पर मैसेज भेजें।

8890543002

450 रुपये तक की साधना सामग्री वी.पी.पी से भेज दी जाती है।

परन्तु यदि आप साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से शीघ्र प्राप्त करना चाहते हैं तो सामग्री की न्यौछावर राशि में डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें एवं जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण एवं अपना पूरा पता, फोन नम्बर के साथ हमें वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे जिससे आपको साधना सामग्री अधिकतम 5 दिनों में प्राप्त हो जायेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम : नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड : SBIN0000659
खाता नम्बर : 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/- — वशीकरण यंत्र + माला

1 वर्ष सदस्यता 405/- — गणपति यंत्र + माला

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

गुरुधाम, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.)

फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 2432209, 7960039

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34
फोन नं. : 011-27354368, 27352248

Printing Date : 15-16 November, 2020
Posting Date : 21-22 November, 2020
Posting Office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2019-2021
Licensed to post without prepayment
License No. RJ/WR/WPP/14/2018-
Valid up to 31.12.2021

माह : दिसम्बर एवं जनवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

19-20 दिसम्बर
23-24 जनवरी

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

12-13 दिसम्बर
16-17 जनवरी

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002